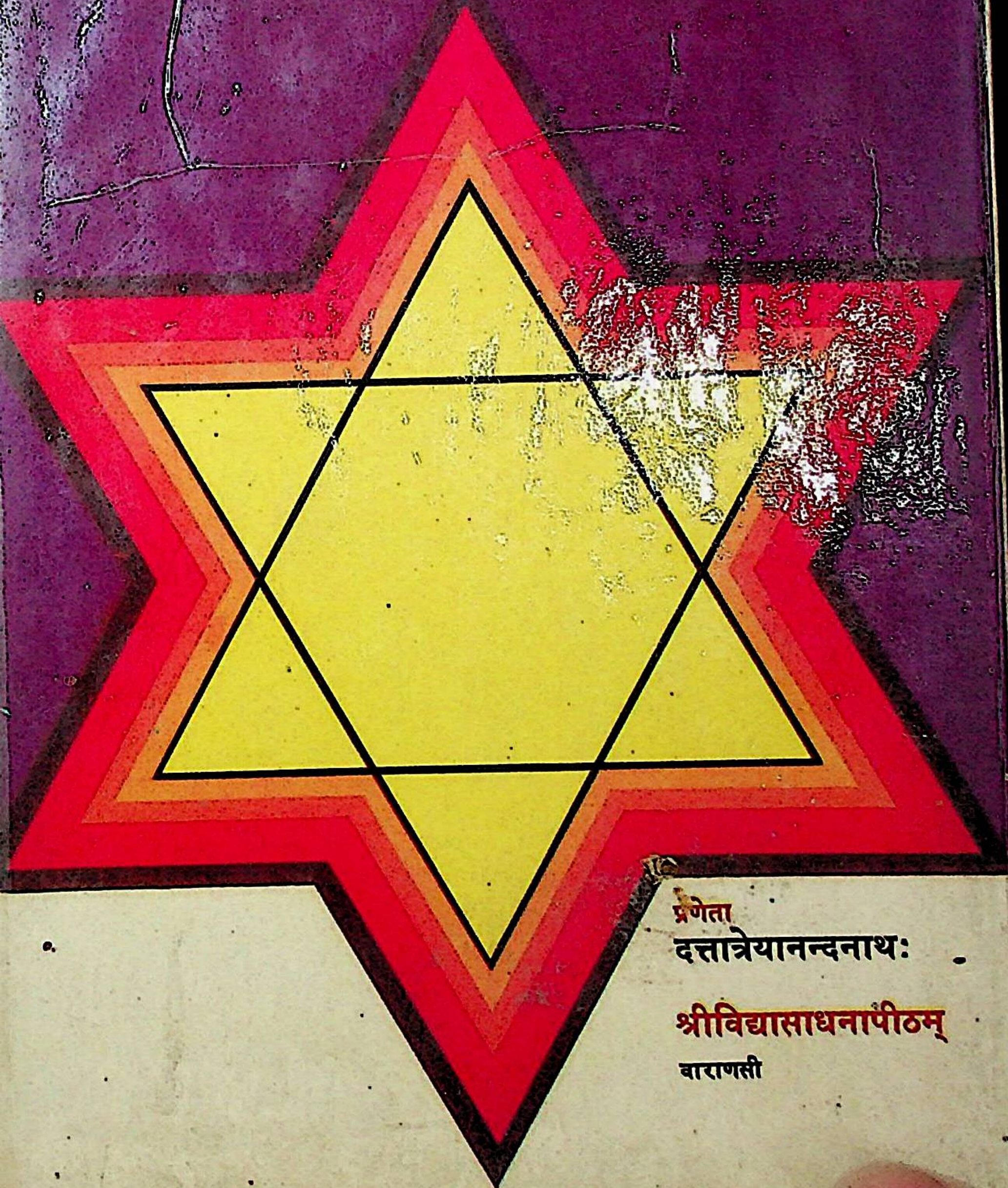
श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या



प्रणेता
दत्तात्रेयानन्दनाथः

श्रीविद्यासाधनापीठम्
वाराणसी

॥ श्रीः ।

श्रीभुवनेश्वरी

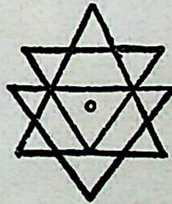
श्रीभुवनेश्वरी के ह
जमन्त्र परक इस पद्धा
ई है, श्रीभुवनेश्वरी के
ाधना में भी इसका उपय
न्त्रों का यन्त्र एवं पूज
। अतः एकाक्षर मन्त्र
विष्ट मन्त्र प्रयुक्त करके स
सम्पादन होगा । [illegible]
[illegible] क्षितमु[illegible] [illegible]ुसा
पद्धतियों की [illegible]ताओं
[illegible] मौलिक
समन्वय करके [illegible] और
का प्रयत्न किया गया है।

॥ श्रीः ॥

श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या

तन्त्रशास्त्रोक्त प्रामाणिक पूर्णाङ्ग पूजा पद्धति

प्रणेता एवं सम्पादक
दत्तात्रेयानन्दनाथ
(सीताराम कविराज)



श्रीविद्यासाधनापीठम्
वाराणसी

प्रकाशक–
श्रीविद्या साधना पीठ
काशी मुमुक्षु भवन
अस्सी, वाराणसी (यू. पी.)

प्रथम संस्करण, १००० प्रतियाँ
दत्तात्रेय जयन्ती
मार्गशीर्ष शुक्लापूर्णिमा
वै. सं. २०४९

मूल्यः ५०.००

मुद्रक :
रत्ना प्रिण्टिंग वर्क्स
कमच्छा, वाराणसी

पुस्तक प्राप्तिस्थानम्
प्रतापशङ्करजी पण्ड्या
पैराडाइज अपार्ट मेण्ट्स
नेपीयन-सी रोड, बम्बई

भगवती श्रीभुवनेश्वरी



बन्धूकाभां त्रिनयनयुतां बद्धचन्द्रार्धमौलिं
दोर्भ्यां पूर्णं विविधमणिभी रत्नपात्रं वहन्तीम् ।
पद्मं सौम्यामुरुकुचयुगां स्मेरवक्त्रेन्दुबिम्बां
ध्यायेद् देवीं धृतमणिघटप्रोल्लसन्सव्यपादाम् ॥

॥ श्रीः ॥

प्राक्कथन

भगवती श्रीभुवनेश्वरी की शास्त्रसम्मत हो और परम्परागत भी ऐसी साङ्गोपाङ्ग साधनापद्धति की रचना करने की मेरी चिरकाल से उत्कट उत्कण्ठा बनी हुई थी। अद्यः प्रातः पुनः प्रातः करते अत्यधिक समय बीतता गया, इतना बिलम्ब क्यों हुआ यह तो पराम्बा ही जानती है, परन्तु चिर प्रतिक्षित मेरा मनोरथ अब पूर्ण हो रहा है। पराम्बा भगवती भुवनेश्वरी के साधक समाज के समक्ष यह पद्धति प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। श्री विद्या सम्बन्धी साहित्य जो मेरा प्रकाशित हुआ, उनके लेखन काल में एक अवरोध सा उत्पन्न होता रहा, इस स्थिति पर मनन करने पर यह भासित होता कि भुवनेश्वरी साहित्य को प्राथमिकता देनी उचित है, इस का हेतु तो मेरा उपासना क्रम ही भुवनेश्वरी मन्त्र साधना से प्रारम्भ हुआ और इसी साधना से श्रीविद्योपासना में प्रवृत होने का सम्बल प्राप्त हुआ। मुझे साधनाकाल में श्रीभुवनेश्वरी की सुनिबद्ध पूजा पद्धति प्राप्त नहीं हुई, अतः साधकों के सौकर्य के लिये भुवनेश्वरी साधना से सम्बन्धित विधि विधानों को संगृहीत करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। पराम्बा की अनुकम्पा से यत् किञ्चित् प्राप्त बोध के द्वारा तन्त्रशास्त्र का जो अनुशीलन हुआ, इससे इस निर्णय पर पहुँचा कि शाक्त साधना भगवती भुवनेश्वरी की उपासना के विना पूर्णता को प्राप्त नहीं होती, अतः इसकी कृपा प्राप्त करना परमावश्यक है। एतदर्थ इस 'भुवनेश्वरी वरिवस्या' का प्रणयन सम्पन्न हुआ। इस निबन्धन की परिणति के उपक्रम उपसंहार प्रस्तुति के दो शब्द प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक "श्रीभुवनेश्वरी

वरिवस्या' में मुख्य रूप से आह्निक, सपर्या, स्तोत्र, होम, परिशिष्ट ये पांच प्रकरण है। आह्निक प्रकरण में ब्राह्ममूहूर्त में साधकों के लिये गुरुस्मरण और इष्टस्मरण आवश्यक कर्तव्य है। एवं क्षिप्रसिद्धि के लिये अजपाजप विधि, कुण्डलीभावना, भुवनेश्वरीपञ्चक भी निबद्ध किया गया है। तदनन्तर दन्त धावन, स्नान, तान्त्रिक सन्ध्या, इष्ट तर्पण आदि विधियों को सरल सुगम करके प्रस्तुत किया गया है।

सपर्याप्रकरण में भूतशुद्धि, मातृकान्यासादि न्यास प्रकरण, पात्रासादन, अन्तर्याग, यन्त्रपूजन बहिर्याग, आवरण देवताओं का अर्चन, उत्तराङ्गपूजन पात्रोद्वासन आदि विधियों का सन्निवेश हुआ है।

संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ साधकों की सुगमता के लिये–विधियों का हिन्दी भाषा में रूपान्तरण कर दिया गया है।

स्तोत्र प्रकरण में रुद्रयामलतन्त्रोक्त, शङ्कराचार्य, पृथ्वीधराचार्य विरचित शतनाम, सहस्रनाम, कवच, हृदय, स्तोत्र आदि सुललित स्तुतियों को संगृहीत किया गया।

होमप्रकरण स्वसम्प्रदाय का 'श्रीविद्यारत्नाकर' को आधार मानकर श्रीविद्यार्णव तन्त्रोक्त पात्रासादन कुशकण्डिकादि विधियों से विस्तृत करके भुवनेश्वरी होम विधि को पूर्णाङ्ग बनाने का प्रयत्न किया गया है।

परिशिष्ट में श्रीभुवनेश्वरी मन्त्र की महिमा, पुरश्चरण विधि, मन्त्रसिद्धि के लिये नियम पालन, काम्य कर्म आदि का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, ये गुरु द्वारा ही ज्ञातव्य विषय है सार्वजनिक रूप से प्रकट करना शास्त्रों में निषेध किया है।

श्रीविद्यारण्य स्वामी ने श्रीविद्यार्णव तन्त्र में भुवनेश्वरी पारिजात, दक्षिणामूर्ति संहिता, शारदातिलक, प्रपञ्चसार, सारसंग्रह, दशपटली, प्रयोगसार आदि प्रामाणिक ग्रन्थों का सार सर्वस्व भुवनेश्वरी प्रकरण में संगृहीत किया है। उसमें संक्षिप्त सूत्र रूप में पूजापद्धति की प्रयोग विधि, मन्त्र पुरश्चरण विधान, काम्यहोम द्रव्य, मन्त्र और

यन्त्रों के सिद्ध प्रयोग, आदि प्रामाणिक विधियों का समावेश है, वह भी यहाँ उद्धृत किया गया है। यह प्रस्तुत 'निबन्ध' की प्रामाणिकता के लिये पर्याप्त होगा, एवं विद्वान् साधकों के सन्तोष के लिये भी आवश्यक प्रतीत हुआ।

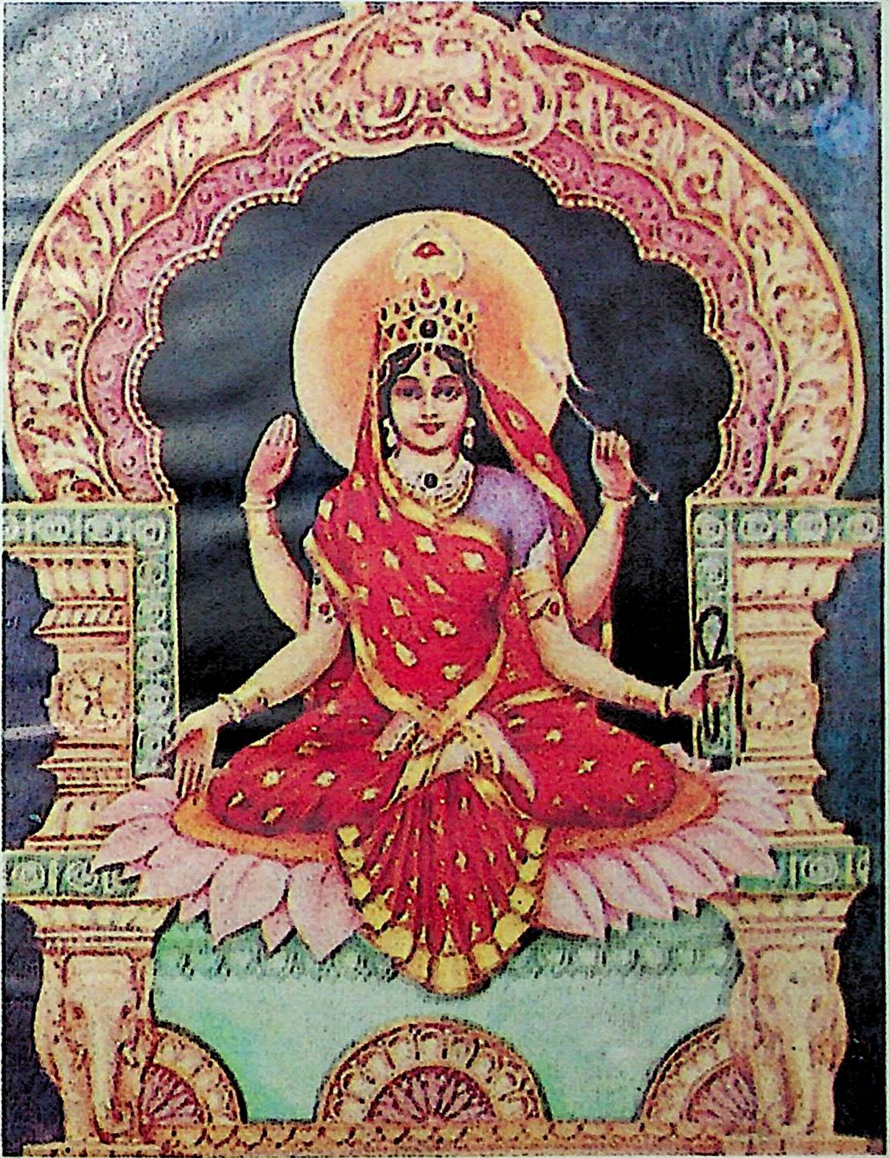
निबन्धन

श्रीभुवनेश्वरी के 'ह्रीँल्लेखा' एकाक्षर बीजमन्त्र परक इस पद्धति की रचना की गयी है, भुवनेश्वरी के विभिन्न मन्त्रों की साधना में भी इसका उपयोग होगा, सभी मन्त्रों का यन्त्र एवं पूजन प्रकार समान है। केवल स्वेष्ट मन्त्र का ऋष्यादि न्यास ही भिन्न होता है, अतः एकाक्षर मन्त्र के स्थान पर स्वेष्ट मन्त्र प्रयुक्त करके सभी विधियों का सम्पादन होगा। 'नामूलं लिख्यते किञ्चित् नानपक्षितमुच्यते' के अनुसार सम्प्राप्त पूजा-पद्धतियों की विभिन्नताओं को दृष्टिगत करके आप्त तन्त्रों के मौलिक सिद्धान्तों का समन्वय करके संक्षेप और विस्तार करने का प्रयत्न किया है। मुख्य रूप से आद्य शङ्कराचार्य विरचित प्रपञ्चसार, शारदातिलक, श्रीविद्यार्णवतन्त्र, प्रातः स्मरणीयचरण स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज द्वारा रचित एवं मेरे द्वारा सम्पादित 'श्रीविद्यारत्नाकर' और 'श्रीविद्यावरिवस्या' पृथ्वीधराचार्य कृत 'भुवनेश्वरीक्रम चन्द्रिका' पुज्यपाद राजगुरु पं. हरिदत्त शास्त्रीजी द्वारा लिखित हिन्द व्याख्या सहित 'भुवनेश्वरी रहस्य' इत्यादि ग्रन्थों के आधार से इसका निबन्धन हुआ है। इस प्रकार चिरकाल से प्रतिक्षित वाञ्छावल्लरीको पल्लवित और कुसमित देखकर हर्षातिरेक से पुलकित अन्तराल से मातृचरणों में प्रणिपातपूर्वक शत-शत नमन करता हूँ। जिनकी कृपा के विना यह कार्य कदापि सम्भव न होता।

श्रीराजगुरुजी

इस कृपा के सूत्रधार प्रातःस्मरणीय राजगुरु हरिदत्तजी शास्त्री है। जिनकी अहेतुकी कृपा से मुझे भुवनेश्वरी मन्त्र का उपदेश प्राप्त हुआ। मेरे प्रथम मन्त्रोपदेष्टा पुज्यपाद श्रीराजगुरुजी का इस अवसर पर संस्मरण करता हुआ मैं अपने को कृत-कृत्य अनुभव कर रहा हूँ। जिनके मन्त्र शक्ति के अनेको चमत्कार देखने के मुझे अवसर प्राप्त हुए। इस स्वल्प लेख में उनकी महिमा का वर्णन सम्भव नहीं है। इनका जीवन चरित्र 'गुरुमण्डल ग्रन्थमाला' कलकत्ता से प्रकाशित हिन्दी व्याख्या सहित 'ललिता सहस्रनाम की भूमिका' में विस्तृत रूप से प्रकाशित हुआ है। उसमें इनके अलौकिक मन्त्रशक्ति के प्रत्यक्ष चमत्कारों का वर्णन किया गया है। इनकी 'ललिता सहस्रनाम' और 'सौन्दर्य लहरी' की हिन्दी व्याख्या कलकत्ता नगरी के शिष्यों द्वारा मुद्रित करवाकर निःशुल्क वितरित हुई थी। और भी कई पुस्तकें आध्यात्मिक साहित्य की मुद्रित हुई थी। गुरु मण्डल ग्रन्थमाला में स्मृति सन्दर्भ, और पुराणों का जो प्रकाशन हुआ, इसके प्रेरणा स्रोत आप ही थे। पाँच वर्ष की अवस्था में माता के द्वारा मन्त्रोपदेश हुआ था, बाल्यकाल में ही राजमाता को पुराणों की कथा सुनाने लग गये थे। कालान्तर में ठीहरी गढ़वाल के राजगुरु रूप में सम्मानित रहे। राज्य की ओर से मन्दिरों की व्यवस्था के लिये आपने वाइस वार वदरी नारायण की यात्रा की थी, उसी समय में हिमालय पर एकबार अश्वत्थामा का साक्षात्कार हुआ यह घटना स्वयं उन्होंने मुझे सुनाई थी। मन्त्र सिद्धि से ज्योतिष शास्त्र में विलक्षण पाण्डित्य प्राप्त था, इससे राजा महाराजाओं में प्रख्यात हो गये थे। कलकत्ता में मेरा उनसे सम्पर्क हुआ था। वे देहरादून में रहते थे। शीतकाल में एक महीने कलकत्ता आते थे और गीष्मकालमें मसूरी में रहते थे, मैं दोनों ही स्थानों पर आपकी सेवा में रहता था। मेरे ऊपर उनकी स्नेह भरी कृपा थी। आशीर्वाद के रूप में मुझे स्फटिक श्रीयन्त्र प्रदान

श्रीभगवती भुवनेश्वरी



उद्योदिनद्युतिमिन्दु-किरीटां, तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

किया। शेषकाल में आपके अस्वस्थ होने पर मैं देहरादून गया था तो 'उनका स्वास्थ्य शिथिल देखकर मैंने प्रार्थना रूप में निवेदन किया कि महाराज! अब इस साधना का मार्गदर्शन मुझे कैसे प्राप्त होगा तो उन्होंने बड़े स्नेहपूर्वक आशीर्वाद दिया 'बेटा जब जो आवश्यक होगा वह पूर्ण होगा' उनके इस आशीर्वाद से ही अभिनव शङ्कर धर्म सम्राट् स्वामी करपात्रीजी महाराज की चरण-शरण प्राप्त हुई और उनकी महती कृपा से श्रीविद्योपासना के क्रम में पूर्णाभिषिक्त होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्रीराजगुरुजी के भावमय चरणसरोरुह में सश्रद्ध शब्द सुमनाञ्जलि समर्पित करके उनकी पावन स्मृति से अपने को धन्य-धन्य अनुभव करता हूं।

मुद्रण व्यवस्था

इस प्रकाशन में मुख्य रूप से बम्बई के श्री प्रताप शङ्करजी पण्ड्या की विशेष प्रेरणा रही। इनके पिता श्री रेवाशङ्करजी पण्ड्या भगवती भुवनेश्वरी के परम उपासक थे, उनका जीवन साधनामय ही रहा। उनके जीवन वृत्त से ज्ञात होता है, कि वे परम आस्तिक धर्मपरायण-आचारवान् उपासक थे। वैदिक संस्कृति में आपकी अगाध श्रद्धा थी, वाराणसी में ही शिक्षा प्राप्त किये थे। आस्तिक धर्मपरायण व्यक्ति स्वयं का तो कल्याण कर ही लेता है। आनेवाली सन्तति के लिये भी उसका जीवन प्रेरणा-स्रोत बन जाता है। वर्तमान में उनके वंशज परम धार्मिक उपासना परायण ऐश्वर्यशाली सम्पन्न परिवार है। श्रीप्रतापशङ्करजी तो श्रीविद्या के निष्ठावान् उपासक है, साधना सम्बन्धी जिज्ञासा से वाराणसी में मेरा इनसे सम्पर्क हुआ तब किसी प्रसंग में मैंने इनको पिताजी की स्मृति में भुवनेश्वरी उपासना सम्बन्धी साहित्य प्रकाशित कराने के लिये प्रेरित किया था तो तत्क्षण स्वीकृत करके अपने समन्धित प्रेस को मुद्रण का आदेश दे दिया था। यह वार्ता प्रायः सात वर्ष पूर्व हुई थी, बीच-बीच में

आप मुझे प्रेरित भी करते रहे, कारणान्तरों से विलम्ब होता गया। अब यह सङ्कल्प साकार हो रहा है। माता भुवनेश्वरी के परम उपासक रेवाशङ्करजी पण्ड्या की पावन स्मृत में 'पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता' इस दृष्टि से उपासक पिता की स्मृति में उपासना सम्बन्धी प्रकाशित पूजा-पद्धति भुवनेश्वरी उपासकों के पथ-प्रदर्शन से साधना सोपान परम्परा को अनुप्राणित करती रहेगी। एतदर्थ इस सत्कार्य के प्रेरक और पूर्ण मुद्रण व्यय भार ग्रहण करने के लिये सपरिवार प्रतापशङ्करजी के श्रेय प्रेय के लिये पराम्बा से प्रार्थी हूँ। श्री रेवाशङ्करजी पण्ड्या को अपने जीवन काल में ही अपने इष्ट देवता श्रीभुवनेश्वरी की शास्त्रोक्त पूजा पद्धति प्रकाशित करवाने की प्रबल इच्छा थी, परन्तु अब उनके पुत्र आनन्दशङ्कर, प्रतापशङ्कर, गोविन्दशङ्कर पण्ड्या ने उनकी इस सदिच्छा को पूर्ण करने के लिये इस 'भुवनेश्वरी वरिवस्या' का प्रणयन प्रकाशन करवाके इस कल्याणकारी कार्य को सम्पादित किया। अतः पूरा परिवार ही साधुवाद का अधिकारी है।

साधुवाद

इस अवसर में डा. रुद्रदेवजी त्रिपाठी को साधुवाद से सभाजित करना नैसर्गिक है। पद्धति प्रणयन समय में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के किसी सम्पादन प्रसङ्ग में आप काशी आये हुए थे, और वह प्रवास काल व्यतीत हुआ मेरे पास काशी मुमुक्षु भवन में। सम्पादन कला में निपुण श्रीत्रिपाठीजी के कई सुझावों से मैं उपकृत हुआ, अतः प्रणयन की सर्वाङ्ग पूर्णता में योगदान के लिये पुनः-पुनः भूरि-भूरि साधुवाद से सभाजित करने में कृपणता क्यों। भुवनेश्वरी के उपासक पं. मुरलीधर पाण्डेय के सेवाभाव से योगदान को विस्मृत न करके उनके कल्याण की कामना करता हूँ।

रत्ना प्रेस के संचालक श्रीविनयशङ्करजी पण्ड्या जो 'यथा नाम तथा गुणः' हैं। एक मास के स्वल्पकाल में ही इस पुस्तक का मुद्रण करके अपनी कार्य क्षमता का अनुपमेय उदाहरण प्रस्तुत किया, एतवता आप के समधिक अभ्युदय का अभिलाषी हूँ।

शेष में आध्यात्मिक शास्त्रीय साहित्य स्रष्टा साधु सन्त महात्मा आचार्य महामनीषीयों को प्राञ्जलिबद्ध प्रणतिततति निवेदन करता हूँ। जिनके सृजित सत्साहित्य से निबद्धमान साहित्य सर्वदा अनुप्राणित होता रहता है। एवं पराम्बा भगवती भुवनेश्वरी के साधक और सिद्ध समुदाय से 'गच्छतस्खलनंवापि' की दृष्टि से इसमें हुई त्रुटियों के लिये सविनय क्षमा प्रार्थी हूँ, तथा उनके मन्तव्यों के लिये सप्रश्रय निवेदन करता हूँ।

श्रीगुरुचरणसरोजरेणु

दत्तात्रेयानन्दनाथ

(सीतारामकविराज)

आचार्यप्रवर पद्मभूषण पं. श्रीबलदेवजी उपाध्याय के आशीर्वचन

शौरिश्चकास्ति हृदयेषु शरीरभाजां
तस्यापि देवि हृदयं त्वमनु प्रविष्टा ।
पद्मे तवापि हृदये प्रथते दयेयं
त्वामेव जाग्रदखिलातिशयां श्रयामः ॥

शरीरधारी व्यक्तियों के हृदयों में भगवान् विराजमान रहते हैं । भगवती उनके हृदय में तुम प्रविष्ट रहती हो तथा तुम्हारे भी हृदय में यह मंगलकारिणी करुणा विराजती है । फलतः समस्त अतिशयों के जागरण से सम्पन्न भगवती का हम आश्रय ले रहे हैं ।

भगवती की इसी दया से ही अध्यात्मचिन्तन का सुयोग भाग्यवन्तों को प्राप्त होता है तथा उसी दया के फलस्वरूप ऐसे चिन्तन से संभूत दिव्यग्रन्थों के अध्ययन का भी अवसर मिलता है और आज मुझे ऐसे ही ग्रन्थ के अध्ययन मनन का शुभ अवसर उपलब्ध हुआ है । ग्रन्थ का नाम है भुवनेश्वरी वरिवस्या और इसके भाग्यशाली ग्रन्थकार का अभिधान है–पण्डित श्रीसीताराम कविराज, जिनका दीक्षा नाम है– "दत्तात्रेयानन्दनाथ" । ग्रन्थ का प्रकाशन श्रीविद्या साधनापीठ (वाराणसी) ने इसी वर्ष सम्पन्न किया है ।

पण्डित कविराजजी भगवती ललिता के परम आराधक तथा आगमविद्या के गम्भीर चिन्तक हैं । शाक्तसाधना तथा शास्त्रीय वैदुष्य का अनुपम संयोग उनके व्यक्तित्व का महान् वैशिष्ट्य है। स्वामी करपात्रीजी महाराज के सान्निध्य में उपदेश को ग्रहण कर इन्होंने अपने सात्विक जीवन को उदात्तता की परम उच्चकोटि में पहुँचा दिया है । ये श्रीविद्या के महनीय आचार्य हैं और अपने तान्त्रिक उपदेशों के द्वारा शिष्यजनों का सातिशय उपकार करते हैं । आगमशास्त्र के प्रचार प्रसार के निमित्त ही वाराणसी में 'श्रीविद्यासाधनापीठ' की स्थापना कर ये बड़ा ही महनीय कार्य का सम्पादन करते हैं । प्रथमतः इन्होंने श्रीविद्याविषयक ग्रन्थों का

सम्पादन किया, जिनमें 'श्रीविद्यारत्नाकर' तथा 'श्रीविद्यावरिवस्या' श्रीविद्या के गम्भीर उपासना का रहस्योद्घाटन करते हैं। 'साम्बपञ्चाशिका' तथा 'विरूपाक्षपञ्चाशिका की हिन्दी व्याख्या कविराजजी के शास्त्रीय ज्ञान का विमल परिचय देती हैं। अब इनका ध्यान भगवती भुवनेश्वरी की उपासना तथा अध्यात्मचिन्तन की ओर आकृष्ट हुआ है और इसी साधना का उद्दीप्त उदाहरण यह वर्तमान ग्रन्थ है। भुवनेश्वरी शाक्त दशमहाविद्याओं में अन्यतम हैं। इनकी आराधना के विषय में जितना ज्ञातव्य विषय भिन्न-भिन्न आगमग्रन्थों में उपलब्ध होता है उन सब का एकत्र संग्रह पण्डितजी ने इस ग्रन्थ में जिज्ञासु जनों के लिये कर दिया है। आपके ऊपर पराम्बा की महती कृपा है, जिसका अनुभव इस ग्रन्थ के पारायण, मनन तथा चिन्तन से आलोचक विद्वानों को भलीभांति हो जाता है। ग्रन्थ में पाँच प्रकरणों के विषय हैं आह्निप्रकरण, सपर्याप्रकरण, न्यासप्रकरण, पात्रासादन, आवरणपूजन, स्तोत्रप्रकरण, होमप्रकरण तथा परिशिष्ट।

कविराजजी यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्र-इन तीनों आगम सम्बद्ध विषयों के गम्भीर विज्ञाता, पूर्णआराधक तथा उदात्तसाधक हैं। इसका परिचय ग्रन्थ में पदे पदे होता है। मन्त्रों का पूर्ण परिचय प्राप्त करना साधक का नितान्त आवश्यक कार्य है। पण्डितजी ने भुवनेश्वरी से सम्बद्ध इन विषयों का ज्ञान अपने आराध्य गुरु पण्डित हरिदत्त शास्त्री से प्राप्त किया है, जिन्हें इन विषयों का अद्भुत ज्ञान प्राप्त था। फलतः पण्डित हरिदत्त शास्त्री तथा धर्मसम्राट् करपात्रीजी महाराज से प्राप्त गम्भीर उपासना तथा विस्तृत तान्त्रिक ज्ञान के प्रचार का यह कार्य बड़ा ही उपयोगी, आवर्जक तथा व्यापक है। जिसके लिये आगम ज्ञान के रसिक प्रेमी सज्जन हमारे कविराजजी को सर्वदा स्मरण करते रहेगें।

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते,
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः
किञ्चित् स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च महतीं वसुधां दधाति ॥

बलदेव उपाध्याय
पौषी पूर्णिमा
२०४० वि. सं.

बलदेव उपाध्याय

पौषी पूर्णिमा, २०४० वि. सं.

"श्रीः"
नम्र निवेदन

मेरे पिता श्रीरेवाशङ्करजी, देवी भुवनेश्वरी के कृपा प्राप्त निष्ठावान् श्रद्धालु उपासक थे। इनकी उपासना के प्रभाव से ही मुझे भी सर्वप्रथम भुवनेश्वरी उपासना का ही सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार हमारी कुल देवी भुवनेश्वरी की शास्त्रीय साधना पद्धति प्रकाशित कराने की मेरी इच्छा थी, एवं हमारे पिताजी के साधनामय जीवन का पावन संस्मरण होता रहे इसके लिये भी कुछ करना आवश्यक था, यह दोनों ही कार्य पुज्य कविराजजी के निर्देश से एक साथ सम्पन्न हो रहे हैं। इस अवसर पर उनके पवित्र जीवन धारा का किञ्चित् स्मरण करना मेरा कर्तव्य है।

मेरे पिता श्रीरेवाशङ्करजी (सुपुत्र दुर्गाशङ्करजी पण्ड्या) का सागर में जंन्म हुआ, विद्या प्राप्ति के लिये काशी आ गये। वाराणसी में गंगा तट पर ब्रह्माघाट पर योगिराज ब्रह्मचारीजी के आश्रम में रहकर योगाभ्यास और अध्ययन दोनों ही चलते रहे। काशी विश्व विद्यालय में इनके अध्यापक आचार्य जे. बी. कृपलानी की प्रेरणा और महात्मा गांधीजी के आह्वान से स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। भारतीय वैदिक संस्कृति और धर्मनिष्ठ ब्राह्मणों पर इनकी अगाध श्रद्धा थी। इनके द्वारा काशी में निरन्तर धर्मानुष्ठान रुद्राभिषेक, शतचण्डी आदि देवाराधन चलते रहते थे। स्वयं योगसाधना और भुवनेश्वरी उपासना में तत्पर रहते थे। तन्त्र शास्त्र के पूर्णज्ञाता और उच्चकोटि के उपासक हरनगर निवासी श्रीचन्द्रशेखरजी झा के द्वारा कामाख्या धाम में इनको भुवनेश्वरी की दीक्षा प्राप्त हुई थी। इनके पुत्र दुर्गादत्त झा ने मेरे पिताजी की प्रेरणा से विन्ध्याचल काली खोह में एक वर्ष तक कठोर साधना की। इनके

द्वारा ही मुझे भुवनेश्वरी मन्त्र प्राप्त हुआ। तदनन्तर मां भुवनेश्वरी की कृपा से उर्ध्वाम्नाय सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी शङ्करानन्द सरस्वती से षोडशी मन्त्र प्राप्त हुआ। इन्हीं की प्रेरणा से धर्म सम्राट् स्वामी करपात्रीजी के शिष्य श्रीसीतारामजी कविराज (दत्तात्रेयानन्दनाथ) से श्रीविद्या में पूर्ण दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनके द्वारा रचित 'श्री भुवनेश्वरी वरिवस्या' शास्त्रोक्त प्रामाणिक पूजा पद्धति होगी इसमें सन्देह नहीं। क्योंकि श्री स्वामीजी की कृपा से इनका श्रीविद्या साधना का मार्ग प्रशस्त हुआ। इनके द्वारा सम्पादित 'श्री विद्यारत्नाकर' श्रीविद्या वरिवस्या' तन्त्र-शास्त्र के दार्शनिक ग्रन्थ–'साम्बपञ्चाशिका' 'विरुपाक्षपञ्चाशिका' की हिन्दी व्याख्या (जो संम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित है) देखकर साधना सम्बन्धी तन्त्र शास्त्र के गहन अध्ययन का परिचय मिलता है। साधक समुदाय से मेरा नम्र निवेदन है कि माता भुवनेश्वरी की इस वाङ्मयी पूजा से भुवनेश्वरी के उपासक मेरे पिता रेवाशङ्करजी के साधनामय संस्मरण से हम प्रेरणा प्राप्त करते रहे एवं भुवनेश्वरी उपासक इसके द्वारा साधना में अग्रसर होकर एहिक और पारलौकिक कल्याण प्राप्त कर साधना परम्परा को अनुप्राणित करते रहे यही मेरी मनोकामना है। शेष में मैं पूज्य कविराजजी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने सर्वाङ्गपूर्ण शास्त्रीय पद्धति लिखकर भुवनेश्वरी उपासकों का साधना मार्ग प्रशस्त किया।

प्रतापशङ्कर पण्ड्या, बम्बई

॥ श्रीः ॥

श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या-

विषयानुक्रमः

●

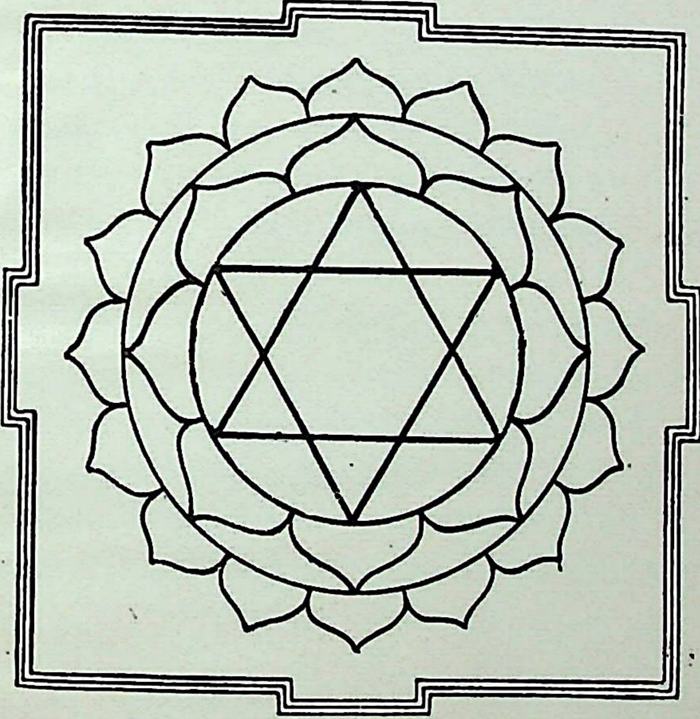
शुद्धिपत्रम्

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१४	श्रीदेशिकाघ्रिं	श्रीदेशिकांघ्रिं
२	२४	ज्ञनाञ्जन	ज्ञानाञ्जन
८	४	सिद्धं	सिद्धिं
८	२१	रवेः	रवे !
१२	१४	ह्लीं.अनङ्गमदनासुरा	ह्लींअनङ्गमदनातुरा
१९	२०	ह्रीं दोग्घ्रै	ह्रीं दोग्ध्यै
२८	१७	मणिपुरे	मणिपूरे
२९	९	ब्राह्मयान्यास	ब्राह्मयादिन्यास
३९	१३	छूट	सोऽहं हंसः शिवः
४४	१०	उद्यद्दिन	उद्यदिन
४५	१०	कुसुममला	कुसुममालाः
५७	१३	बं बीज	वं. बीज
७६	१३	भवमोहिनीत्वां	भवमोहिनीं त्वां
१०२	२१	षोडशकमलाय स्वाहा	करात्यै स्वाहा, विकराल्यैस्वाहा,
१२०	१२	सेवन्तु	सेव्यन्तु

चतुर्भुज भुवेश्वरी चित्र में उद्योदि-उद्यदि

१०६ पत्र से ११९ पत्र तक परिशिष्ट के स्थान पर प्राक्कथन छप गया है इसे परिशिष्ट कर लेवें।

श्रीभुवनेश्वरी यन्त्रम्



आदौ कृत्वा तु षट्कोणं तद्बाह्येऽष्टदलाम्बुजम् ।
तद्बाह्ये षोडशदलं चतुरस्रत्रयं बहिः ॥
चतुर्द्वारसमोपेतं मण्डलं प्रोक्तमुत्तमम् ।
तत्र पीठं यजेत् पूर्वं नवशक्तिसमन्वितम् ॥



श्रीभुवनेश्वरी-वरिवस्या

श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीमहागणपतये नमः । श्रीभुवनेश्वर्यै नमः ।

उद्यद्बिन्दुविमर्शनादकलनात् प्रादुर्भवन्तीं परां,
भास्वद्-भव्यप्रभाप्रभासितकलामानन्दसच्चिन्मयीम् ।
पूर्णात् पूर्णतरां परात् परतरां स्पन्दात्मिकां संविदं,
नौमि श्रीभुवनेश्वरीं भगवतीं भूतिप्रदां भैरवीम् ॥ १ ॥

आराध्य विद्यां भुवनेश्वरीं यो ख्यातिङ्गतःसाधकपुङ्गवेषु ।
सम्मानना राज़कुलेषु जाता प्रख्यापितो राजगुरुर्बभूव ॥ २ ॥
सिद्ध्युर्जितैस्तैः हरिदत्तसिद्धैः मन्त्रोपदिष्टो भुवनाम्बिकायाः ।
अवाप्य मन्त्रं समवाप्य यन्त्रं भक्त्या समाराध्य, शिवङ्करीन्ताम् ॥ ३ ॥
श्रीस्वामिचरणैः करपात्रप्रख्यैः पूर्णाभिषिक्तस्त्रिपुराविधाने ।
कृपां समासाद्य कथञ्चिदेषां श्रीसुन्दरीसेवनतत्परोऽहम् ॥ ४ ॥
पूजाविधिं श्रीभुवनेशिकायाः तत्साधकानाञ्च हिताय सद्यः ।
निबन्धरूपां रचयामि सोऽहं श्रीदेशिकाङ्घ्रिं नुतिभिर्विभाव्य ॥ ५ ॥

आह्निक-प्रकरणम्

ब्राह्ममुहूर्त-कृत्यम्

साधक को चाहिये कि वह सूर्योदय से ४५ मिनट पूर्व ब्राह्ममुहूर्त में निद्रा त्यागकर शय्यास्थान से बाहर आकर तथा आवश्यक लघुशङ्का आदि से निवृत्त होकर हाथ, पैर एवं मुख-प्रक्षालन करे। तदनन्तर यथासम्भव रात्रि में पहने हुए वस्त्र त्यागकर शुद्धवस्त्र पहने और आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर मस्तक के ऊपर ब्रह्मरन्ध्र में श्वेतवर्ण द्विभुज, शिवरूप स्वगुरु का ध्यान करे।

श्रीगुरु-स्मरणम्

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि॥

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्याऽवतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह !॥
नवाय नवरूपाय परमार्थस्वरूपिणे।
सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते॥
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय शिवात्मने।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे॥
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्॥
इत्येवं पञ्चभिः श्लोकैः स्तुवीत यतमानसः।
प्रातः प्रबोधसमये जपात् सुदिवसं भवेत्॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

श्रीगुरुपादुका-स्मरणम्

इसके पश्चात् गुरुपादुका-स्मरण करे—

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः (स्वरूपनिरूपणहेत्वमुकाम्बासहित)श्रीगुरुपादुकां पूजयामि'

('स्वच्छंप्रकाशविमर्शहेत्वमुकाम्बासहित) श्रीपरमगुरुपादुकां पूजयामि' ('स्वात्मारामपञ्जरविलीनचेतस्कामुकाम्बासहित) श्रीपरमेष्ठि-गुरुपादुकां पूजयामि' ।

जिस साधक को गुरुपादुका-मन्त्र एवं गुरुदेव का दीक्षानाम प्राप्त नहीं हुआ हो, वह—श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीपरमगुरुभ्यो नमः । श्रीपर-मेष्ठिगुरुभ्यो नमः । इन मन्त्रों का उच्चारण करके तीनों गुरुओं को प्रणाम करें, और भाव पुष्पाञ्जलि अर्पित करके नमन करे । यथा—

तस्मै दिशे सततमञ्जलिरेषः पौष्पः
प्रक्षिप्यते मुखरितो भ्रमितद्विरेफैः ।
जागर्ति यत्र भगवान् गुरु चक्रवर्ती
विश्वोदय-प्रलय-नाटक-नित्यसाक्षी ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

इस प्रकार गुरु को प्रणाम करके मस्तक पर स्थित गुरु के चरणारविंदो से झर रहे अमृतरस से मेरा समस्त शरीर आप्लावित हो रहा है, ऐसी भावना करे । तत्पश्चात्—'सुमुख, सुवृत, चतुरस्र, मुद्गर तथा योनिमुद्रा से गुरु को प्रणाम करे ।

कुण्डलीध्यानम्

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्त मन्त्रमयी कुण्डलिनी का ध्यान करते हुए ऐसी भावना करे कि—करोड़ों सूर्य के समान परम प्रकाशवाली, कोटिचन्द्र के समान सुशीतल, विद्युत् पुञ्ज जैसी तीव्रद्युति से युक्त और मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक तेजोदण्ड रूप कुण्डलिनी व्याप्त है ।

फिर श्वासको रोककर मस्तकस्थित ब्रह्मरन्ध्र से झरती हुई अमृत बिन्दुओं से मेरी समस्त नाडियों का सिञ्चन हो रहा है। मूलमन्त्र-मयी ब्रह्मरन्ध्र में जाकर अमृतवर्षा कर रही है और वह पुनः मूलाधार में आती है, ब्रह्मरन्ध्र में जाती है। इस प्रकार उसका निरन्तर गमनागमन हो रहा है। इस प्रकार की भावना के साथ मूलमन्त्र का स्मरण करते हुए प्रार्थना करे। (१) यथा सम्भव परिशिष्ट में लिखे हुए कुण्डली जागरण का पारायण करे।

प्रकाशमाना प्रथमे प्रयाणे, प्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमाना।
अन्तः पदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामबलां प्रपद्ये॥
मूलादि-ब्रह्मरन्ध्रान्तं संस्मरेन्निजदेवताम्।
सूर्यकोटि – प्रतीकाशां चन्द्रकोटि – सुशीतलाम्॥
उद्यद्दिवाकरद्योतां यावच्छ्वासं दृढासनः।
ध्यात्वा तदैकरस्येन कञ्चित् कालं सुखी भवेत्॥ इतिवचनात्।

साथ ही इस क्रिया को गुरुमुख से अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, तभी इससे लाभ होता है और 'कुण्डलिनी' की रश्मियों से मेरी समस्त पापराशि भस्म हो गई है। ऐसी भावना करके १० बार अपने इष्ट मन्त्र का जप करे।

अजपा-जपविधिः

स्वस्थ पुरुष के एक मिनट में पन्द्रह श्वास-प्रश्वास होते हैं। इस प्रकार २४ घण्टों मे २१६00 (इक्कीस हजार छः सौ) श्वास-प्रश्वास हुए। अपने आप ही बिना लिए हुए इन श्वास-प्रश्वासों से स्वयं होने वाले जप को 'अजपाजप' कहते हैं। इस जप को शरीर के सात चक्रों में स्थित देवताओं को समर्पण किया जाता है। इससे महापुण्यफल की प्राप्ति होती है। अतः इसकी विधि दी जा रही है। यथा—पहले यह संकल्प करे कि 'गत सूर्योदय से आज के सूर्योदय पर्यन्त किये हुए अजपाजप मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक स्थित देवताओं

को समर्पित करता हूँ। फिर नीचे लिखे हुए वाक्यों का उच्चारण करते हुए देवताओं को समर्पण करे।

यथा—मूलाधारे चतुर्दलपद्मे वं शं षं सं चतुरक्षरे लं बीजे स्थिताय सिद्धिबुद्धिसहिताय कुङ्कुमवर्णाय महागणपतये षट्शतमजपाजपं निवेदयामि।

स्वाधिष्ठाने षड्दलपद्मे बं भं मं यं रं लं, वं बीजे स्थिताय सरस्वतीशक्तिसहिताय सिन्दूरवर्णाय ब्रह्मणे षट् सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।

मणिपूरकचक्रे दशदलपद्मे डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं, रं बीजे स्थिताय लक्ष्मीशक्तिसहिताय नीलवर्णाय विष्णवे षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।

अनाहतचक्रे द्वादशदलपद्मे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं, यं बीजे स्थिताय पार्वतीशक्तिसहिताय हेमवर्णाय परमशिवाय षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।

विशुद्धिचक्रे षोडशदलपद्मे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः हं बीजे स्थिताय प्राणशक्तिसहिताय शुद्धस्फटिकसङ्काशाय जीवाय सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि।

आज्ञाचक्रे द्विदलपद्मे स्वेतवर्णे हं क्षं द्व्यक्षरे ज्ञानशक्तिसहिताय विद्युद्वर्णाय गुरवे सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि,

ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रदलपद्मे चित्रवर्णे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इति विंशतिवारोच्चारिते सहस्राक्षरे सिंहासने स्थिताय नानावर्णाय वर्णातीताय चिच्छक्तिसहिताय परमात्मने सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि (इति निवेदयेत्)।

फिर कुछ क्षण तक 'हंसः सोऽहम्' इस मन्त्र की श्वासोच्छ्वास में भावना करे।

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्पुनः।
हंसोऽतिपरमं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा ॥

तथा मानसोपचार से देवताओं की पूजा करे। यथा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि (कनिष्ठकाङ्गुष्ठाभ्याम्)।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्)।
यं वाय्वात्मकं धूममाघ्रापयामि (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्)।
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि (अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्)।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्)।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारान्
समर्पयामि। (साङ्गुष्ठाभिस्सर्वाभिः)।

तदनन्तर यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करके नीचे लिखे हुए पद्यों के द्वारा श्रीभगवती की प्रार्थना करे। यथा–

त्रैलोक्य-चैतन्यमये परेशि, श्रीशङ्करि! त्वच्चरणाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं, संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥
संसारयात्रामनुवर्तमानं त्वदाज्ञया श्रीभुवनेश्वरीशि।
स्पर्द्धा-तिरस्कार-कलिप्रमाद-भयानि मां माऽभिभवन्तु मातः ॥
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया हृषीकेशि हृदिस्थयाऽहं, यथानियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

प्रातः प्रभृति सायान्तं, सायादि-प्रातरन्ततः।
यत् करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम् ॥
मञ्जुशिञ्जित-मञ्जीरं वाममर्धं महेशितु।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम् ॥
अहं देवी न चान्योऽस्मि, ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं, स्वात्मानमिति चिन्तयेत् ॥
अहं तीर्णो भवं घोरं कृत्यं किञ्चिन्न चास्ति मे।
तथापि देहि मे मातराज्ञां तव सुसेवने ॥

इसके पश्चात् भूमि-प्रार्थना करके अग्रिम कार्य करे।

भूमि प्रार्थना—समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके उस समय नासिका के जिस भाग से श्वास चल रहा हो उसी ओर के पैर को पहले भूमि पर रखकर शौचादि कर्म के लिए बाहर जाए ।

श्रीभुवनेश्वरी पञ्चकम्

प्रातः स्मरामि भुवना-सुविशालभालं,
माणिक्य-मौलि-लसितं ससुधांशु-खण्डम् ।
मन्दस्मितं सुमधुरं करुणाकटाक्षं,
ताम्बूलपूरितमुखं श्रुति-कुण्डले च ॥ १ ॥
प्रातः स्मरामि भुवना-गलशोभि मालां,
वक्षःश्रियं ललिततुङ्ग-पयोधरालीं
संवित् घटञ्च दधतीं कमलं कराभ्यां
कञ्जासनां भगवतीं भुवनेश्वरीं ताम् ॥ २ ॥
प्रातः स्मरामि भुवना-पदपारिजातं,
रत्नौघनिर्मित-घटे घटितास्पदञ्च
योगञ्च भोगममितं निजसेवकेभ्यो
वाञ्छाऽधिकं किलददानमनन्तपारम् ॥ ३ ॥
प्रातः स्तुवे भुवनपालनकेलिलोलां
ब्रह्मेन्द्रदेवगण-वन्दित-पादपीठाम्
बालार्कबिम्बसम-शोणित-शोभिताङ्गीं
विन्द्वात्मिकां कलितकामकलाविलासाम् ॥ ४ ॥
प्रातर्भजामि भुवने तव नाम रूपं
भक्तार्तिनाशनपरं परमामृतञ्च ।
ह्रीङ्कारमन्त्र-मननी जननी भवानी
भद्रा विभा भयहरी भुवनेश्वरीति ॥ ५ ॥

य: श्लोकपञ्चकमिदं स्मरति प्रभाते
भूतिप्रदं भयहरं भुवनाम्बिकाया:
तस्मै ददाति भुवना सुतरां प्रसन्ना
सिद्धं मनोः स्वपदपद्म-समाश्रयञ्च ॥

इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ-विरचितं श्रीभुवनेश्वरी-पञ्चकम् ।

इति श्रीभुवनेश्वरी प्रातः स्मरणम्

दन्तधावनम्

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजा-पशु-वसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

इस मन्त्र से दन्तकाष्ठ का अभिमन्त्रण करके "ह्रीं क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः" इस मन्त्र द्वारा दन्तधावन करे । तदनन्तर ह्रीं मन्त्र द्वारा जिह्वा शोधन करके कफ विमोचन, नाशाशोधन और दुषिका निरसन सहित २० कुल्ला करे । फिर ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । 'श्रीं ह्रीं क्लीं' । श्रीं सकलह्रीं श्रीं' । इन चार मन्त्रों से अथवा इष्ट मन्त्र से मुख प्रक्षालन करे ।

स्नानविधिः

तदनन्तर नदी आदि में वैदिक स्नान करके 'श्रीभुवनेश्वरी-प्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानमहं करिष्ये' ऐसा सङ्कल्प करके—जल में अपने आगे चतुरस्र मण्डल बनाकर वहां—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवेः ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इस मन्त्र से सूर्य की पूजा करके—

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि !
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इससे गङ्गा की प्रार्थना करे तथा "ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रों" इस मन्त्र को बोलकर अङ्कुशमुद्राद्वारा सूर्यमण्डल का भेदन कर गङ्गा आदि सब तीर्थों का आवाहन करे। 'वं' इस सलिल बीज से जल को सात बार अभिमन्त्रित कर इसी बीज का बार-बार उच्चारण करते हुए मस्तक पर तीन अञ्जलि जल की छोड़े, तीन बार आचमन करे और पूर्ण स्नान करके मूलमन्त्रपूर्वक–"श्रीभुवनेश्वरीं तर्पयामि' से तीन बार तर्पण करे। फिर मूलमन्त्र से योनिमुद्रा द्वारा तीन बार स्वयं का प्रोक्षण करे।

(घर में स्नानाङ्ग तर्पण नहीं करना चाहिए। असमर्थ होने पर मन्त्रस्नान अथवा भस्मस्नान करके मूलमन्त्र से केवल तीन आचमन और प्रोक्षण करे)।

तान्त्रिक सन्ध्या-विधि–

साधक को चाहिए कि वह शुद्ध धुले हुए अधोवस्त्र और उत्तरीय धारण कर भस्म का त्रिपुण्ड्र लगाकर 'वैदिकसन्ध्या' करने के पश्चात् 'तान्त्रिक-सन्ध्या' करे। यथा–मूल मन्त्र से आचमन करके अपने वामहस्त में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढ़क ले तथा 'लं वं रं यं हं' इन बीजों से तीन बार अभिमन्त्रित करे और तत्त्वमुद्रा द्वारा मस्तक पर मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए सात बार जल छिड़के तथा शेष जल को दाहिने हाथ में लेकर उसके तेजोरूप ध्यान कर इडा से आकृष्ट करे। फिर देह में स्थित पाप के प्रक्षालन से कृष्णवर्ण बने हुए उस जल को पापरूप समझकर पिङ्गला के द्वारा विरेचित करे और अपने समक्ष कल्पित वज्रशिला पर 'फट्' इस मन्त्र से गिराये।

तदनन्तर अर्घ्यपात्र को उठाकर ह्रां ह्रीं ह्रूं सः श्रीमार्तण्ड-भैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय इदमर्घ्यं परिकल्पयामि नमः' इस मन्त्र द्वारा उदित होते हुए सूर्य के लिये तीन अर्घ्य प्रदान करे, और उसी

सूर्यमण्डल में भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करके "श्रीभुवनेश्वर्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्" इस गायत्री मन्त्र से तीन बार अर्घ्य दे। और मूलमन्त्र और श्रीभुवनेश्वरी पादुकां तर्पयामि नमः' बोलकर तीन बार तर्पण करे।

मूलमन्त्रजप विधि

इसके पश्चात् भुवनेश्वरी के मूलमन्त्र के विनियोग, न्यास-ध्यानादि-करके मन्त्रजप करे यथा–विनियोगः–"अस्य श्रीभुवनेश्वरी-मन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीभुवनेश्वरी देवता हं बीजं ईं शक्तिः रं कीलकं श्रीभुवनेश्वरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः" ।

ऋष्यादिन्यासः–

शक्तिऋषये नमः (शिरसि) गायत्री छन्दसे नमः (मुखे), श्रीभुवनेश्वरी देवतायै नमः (हृदये) हं बीजाय नमः (गुह्ये) ईं शक्तये नमः (पादयोः) रं कीलकाय नमः (नाभौ) श्रीभुवनेश्वरीप्रीत्यर्थे विनियोगाय नमः–(करसम्पुटे)।

कर–षडङ्गन्यासाः–	(प्रथमबार)	(द्वितीयबार)
ह्रां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूँ	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ह्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से तीन बार व्यापक करें और निचे लिखे ध्यान का स्मरण करें।

उद्यदिनद्युतिमिन्दु–किरीटां, तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥

तदनन्तर मानसिक पञ्चोपचारपूजा करके मूलमन्त्र का जप करे। कृतेनानेन तान्त्रिकसन्ध्याकर्मणा श्रीभुवनेश्वरी देवता प्रीयताम्।

सन्ध्याङ्गतर्पणम्–

पूर्वोक्त रीति से आचमन, प्राणायाम, मूलमन्त्र के विनियोग-ऋष्यादिन्यास कर षडङ्गन्यास ध्यानादि करके पात्र में जल भरे और तीर्थ का आवाहन करके मूलमन्त्र से उस जल का धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे। फिर उसमें यन्त्र को रखे अथवा मत्स्यमुद्रा से यन्त्र लिखे। उस यन्त्र में देवी को परिवार सहित अपने हृदय से लाकर षडङ्गमन्त्र द्वारा सकलीकृत कर कुण्डली के प्रयोग से अमृताभिषेक करे। अभिषेक के पश्चात् विधिवत् गन्ध आदि से पूजित करके अपने गुरुओं का तर्पण करे। यथा–

ह्रीं अमुकानन्दनाथगुरुस्तृप्यताम् (तीनबार)
ह्रीं अमुकानन्दपरमगुरुस्तृप्यताम् (तीनबार)
ह्रीं अमुकानन्दपरमेष्ठिगुरुस्तृप्यताम् (तीनबार)
ह्रीं दिव्यौघ-गुरवस्तृप्यन्ताम् (तीनबार)
ह्रीं सिद्धौघ-गुरवस्तृप्यन्ताम् (तीनबार)
ह्रीं मानवौघ-गुरवस्तृप्यन्ताम् (तीनबार)

पुनः मूल देवी का तीनबार मूलमन्त्र से तर्पण करके यन्त्रोक्त-परिवार देवताओं का तर्पण करे।–

परिवारदेवता-तर्पणम्–

ह्रीं ह्रां हृदयं तृप्यताम्
ह्रीं ह्रीं शिरस्तृप्यताम्
ह्रीं ह्रूं शिखा तृप्यताम्
ह्रीं ह्रैं कवचं तृप्यताम्
ह्रीं ह्रौं नेत्रत्रयं तृप्यताम्
ह्रीं ह्रः अस्त्रं तृप्यताम्

ह्रीं ओं हृल्लेखा तृप्यताम्
ह्रीं ऐं गगना तृप्यताम्
ह्रीं उं रक्ता तृप्यताम्
ह्रीं इं करालिका तृप्यताम्
ह्रीं अं महोच्छुष्मा तृप्यताम्
ह्रीं गङ्गा तृप्यताम्

ह्रीं यमुना तृप्यताम्
ह्रीं सरस्वती तृप्यताम्
ह्रीं गायत्रीसहित ब्रह्मा तृप्यताम्
ह्रीं सावित्रीसहितविष्णुस्तृप्यताम्
ह्रीं सरस्वतीसहितरुद्रस्तृप्यताम्
ह्रीं लक्ष्मीसहितकुबेरस्तृप्यताम्
ह्रीं रतिसहितमदनस्तृप्यताम्
ह्रीं पुष्टिसहितविघ्नराजस्तृप्यताम्
ह्रीं शङ्खनिधिस्तृप्यताम्
ह्रीं पद्मनिधिस्तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गकुसुमा तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गकुसमातुरा तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमदना तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमदनासुरा तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमेखला तृप्यताम्
ह्रीं भुवनपालिनी तृप्यताम्
ह्रीं गगनवेगा तृप्यताम्
ह्रीं शशिशेखरा तृप्यताम्
ह्रीं कराली तृप्यताम्
ह्रीं विकराली तृप्यताम्
ह्रीं उमा तृप्यताम्
ह्रीं सरस्वती तृप्यताम्
ह्रीं श्रीः तृप्यताम्
ह्रीं दुर्गा तृप्यताम्
ह्रीं उषा तृप्यताम्
ह्रीं लक्ष्मीस्तृप्यताम्
ह्रीं श्रुतिस्तृप्यताम्
ह्रीं स्मृतिस्तृप्यताम्
ह्रीं धृतिस्तृप्यताम्
ह्रीं श्रद्धा तृप्यताम्
ह्रीं मेधा तृप्यताम्
ह्रीं मतिस्तृप्यताम्
ह्रीं कीर्तिस्तृप्यताम्
ह्रीं आर्या तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गरूपा तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमदना तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमदनातुरा तृप्यताम्
ह्रीं भुवनवेगा तृप्यताम्
ह्रीं भुवनपालिका तृप्यताम्
ह्रीं सर्वशिशिरा तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमदना तृप्यताम्
ह्रीं अनङ्गमेखला तृप्यताम्
ह्रीं ब्राह्मी तृप्यताम्
ह्रीं माहेश्वरी तृप्यताम्
ह्रीं कौमारी तृप्यताम्
ह्रीं वैष्णवी तृप्यताम्
ह्रीं वाराही तृप्यताम्
ह्रीं इन्द्राणी तृप्यताम्
ह्रीं चामुण्डा तृप्यताम्
ह्रीं महालक्ष्मीः तृप्यताम्
ह्रीं इन्द्रस्तृप्यताम्
ह्रीं अग्निस्तृप्यताम्
ह्रीं यमस्तृप्यताम्
ह्रीं निर्ऋतिस्तृप्यताम्

ह्रीं वरुणस्तृप्यताम्
ह्रीं वायुस्तृप्यताम्
ह्रीं सोमस्तृप्यताम्
ह्रीं ईशानस्तृप्यताम्
ह्रीं ब्रह्मा तृप्यताम्
ह्रीं विष्णुस्तृप्यताम्
ह्रीं अनन्तस्तृप्यताम्
ह्रीं वज्रस्तृप्यताम्

ह्रीं शक्तिस्तृप्यताम्
ह्रीं दण्डस्तृप्यताम्
ह्रीं खड्गस्तृप्यताम्
ह्रीं पाशस्तृप्यताम्
ह्रीं ध्वजस्तृप्यताम्
ह्रीं गदा तृप्यताम्
ह्रीं त्रिशूलं तृप्यताम्
ह्रीं पद्मं तृप्यताम्
ह्रीं चक्रं तृप्यताम्

इस प्रकार तर्पण करके पूर्ववत् ऋष्यादिन्यास कर देवी को अपने हृदय में विसर्जित कर तीर्थों को यथास्थान विसर्जित करे।

कृतानेन तर्पणकर्मणा श्रीभुवनेश्वरी देवता प्रीयताम्।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ-विरचितायां-श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्यायां
आह्निकप्रकरणम् सम्पूर्णम्।



केचिद् विदन्ति भवतीमनलात्मिकाञ्च
सोमात्मिकां सकल विश्व वितान भूतां।
शैवीं कलां तनुगतां विमलां सुषुम्नाम्
विन्दे कदा नु भवतीमथ ब्रह्मनाडीम्॥

सपर्या प्रकरणम्

श्रीगुरुभ्यो नमः ।

श्रीमहागणपतये नमः ।

श्रीभुवनेश्वर्यै नमः ।

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम्

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ॥

ह्रीं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः, सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं, शक्तिं च तत्पुत्रपराशरञ्च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकञ्च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि ॥

यागमन्दिर-प्रवेशः

ह्रीं भं भद्रकाल्यै नमः । द्वार की दाईं ओर
ह्रीं भं भैरवाय नमः । द्वार की बाईं ओर
ह्रीं लं लम्बोदराय नमः । द्वार के ऊपर की ओर
(इति द्वारदेवताः सम्पूज्य)

पूजापीठ एवं पूजा-सामग्री व्यवस्था

पूजा के लिये पूजक के सामने नाभि-पर्यन्त की ऊँचाई वाली लकड़ी की चौकी रखे । उस पर मध्य में यन्त्रराज, यन्त्रराज के वामभाग में तिल तैल का लाल बत्ती सहित दीपक, दाहिने भाग में श्वेत बत्ती वाला घृत दीपक और धूपपात्र रखे । इस प्रकार यन्त्र के वामभाग में घण्टा, अपने सामने आचमन पात्र, अपने दाहिने भाग में पूजापात्र तथा पुष्प, अपनी बाईं ओर जलकलश और नैवेद्यादि पूजन सामग्री रखे । फिर पूजा प्रारम्भ करें ।

तत्त्वाचमनम्

ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
ह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

गुरुपादुका मन्त्र[1]**–**

मस्तक पर मृगीमुद्रा द्वारा–ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्री परमगुरवे नमः, श्रीअमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

---

1. यदि गुरुपादुका प्राप्त न हो तो पूर्ववत् नाममन्त्र से स्मरण करे ।

इस प्रकार स्मरण करके तथा सुमुख, सुवृत्त, चतुरस्र, मुद्गर, योनि इन पाँच मुद्राओं से गुरु को वाम भुजा में और गणपति मन्त्र से गणपति को दक्षिण भुजा में प्रणाम करे।

घण्टापूजा

हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत्॥
आगमार्थं च देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम्॥

(इति घण्टानादं कृत्वा)

सङ्कल्पः

शुक्लाम्वरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

मूलेन प्राणानायम्य। देशकालौ संकीर्त्य–मम श्री–भुवनेश्वरी प्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यैः यथाशक्तिसपर्याक्रमं निवर्तयिष्ये।

इस प्रकार सङ्कल्प करके स्वयं को तिलकादि से अलङ्कृत करे तथा ताम्बूल से या पञ्चतिक्त से सुगन्धित मुख करके प्रसन्नचित्त होकर 'शिवोऽहम्' की भावना करे।

पुष्पशोधनम्

ह्रीं पुष्पकेतुराजार्हते शताय सम्यक् समन्धाय ह्रीं पुष्पे-पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पभूषिते पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल से पुष्पों का प्रोक्षण करे।

आसनपूजा

आसन बिछाकर "सौः" इस मन्त्र को दस बार जपकर जल को अभिमन्त्रित करे। उस जल से एवं मूलमन्त्र से आसन का प्रोक्षण करे, पुनः–अस्य श्री आसनमहामन्त्रस्य–पृथिव्याः मेरु पृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
ह्रीं योगासनाय नमः, वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः ।
ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ।

इससे पुष्पाक्षत द्वारा आसन की पूजा करके आसन पर बैठे ।

(ह्रीं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः)

इससे भूमि पर पुष्पाञ्जलि प्रदार करे ।

देहरक्षा

ह्रीं श्रीभुवनेश्वरि आत्मानं रक्ष रक्ष–इससे स्वशरीर पर तीन बार व्यापक करे,

गुं गुरुभ्यो नमः	(दक्षिण भुजा में)
गं गणपतये नमः ।	(वाम भुजा में)
दुं दुर्गायै नमः ।	(दक्षिण ऊरु में)
वं वटुकाय नमः ।	(वाम ऊरु में)
यां योगिनीभ्यो नमः ।	(दोनों पैरों पर)
क्षं क्षेत्रपालाय नमः	(नाभि पर)
पं परमात्मने नमः	(हृदय पर) स्पर्श करे ।

ह्रीं ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशु–जनमनश्चक्षुः श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ।
ह्रीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुँ फट् स्वाहा ॥
ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हूँ फट् स्वाहा ।

इससे चारों ओर प्राकार की भावना करे ।

(ह्रीं भूर्भुवस्स्वरों,) इससे छोटिका बजाकर दिग्बन्धन करे। मूलाधार से कुण्डलिनी को ब्रह्मरन्ध्र में स्थित महाशिव के साथ समायोग द्वारा निःसृत अमृत की धारा से अपना शरीर आप्लावित हो रहा है ऐसी भावना करे, और सावधान होकर मन को एकाग्र करे।

तदनन्तर मूलमन्त्र से यन्त्र पर पुष्पाञ्जलि दे तथा अपने बायें और दायें भाग में भी पुष्प छोड़े।

इसके पश्चात् (ह्रीं ऐं ह्रः अस्त्राय फट्) इस मन्त्र का आवर्तन करते हुए अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका पर्यन्त तथा दोनों करतल तथा शरीर पर न्यास एवं व्यापक करे।

अर्चनानुज्ञा—

ह्रीं श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक।
अनुज्ञां देहि भगवन् भुवनेश्यर्चनाय मे॥
ह्रीं अतिक्रूरमहाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥

सुवर्ण या रजत पत्र पर अष्टगंधादि से षट्कोण बनाकर उसके बाहर अष्टदल बनावें, फिर षोडशदल बनाकर उसके बाहर तीन रेखा का चार द्वार वाला श्रीभुवनेश्वरी का पूजा यन्त्र बनाकर प्राण प्रतिष्ठा करे।

लघु प्राणप्रतिष्ठा[1]

'ह्रीं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रीं हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः श्रीभुवनेश्वरीयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः'।

ह्रीं आं ह्रीं क्रों श्रीभुवनेश्वरीयन्त्रस्य जीव इह स्थितः।

सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य—अस्मिन् यन्त्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

---

1. यह प्रतिष्ठा—प्रतिदिन यन्त्र लिखकर—पूजा करने वाले के लिये है। प्रतिष्ठित यन्त्र में प्रतिदिन प्रतिष्ठा अपेक्षित नहीं है।

पीठ-पूजा

यन्त्रराज के पीठ की भावना करके नीचे लिखे हुए पीठमन्त्रों से पुष्प-अक्षत चढ़ाते हुए अर्चन करे।

ह्रीं आधारशक्त्यै नमः
ह्रीं प्रकृत्यै नमः
ह्रीं कूर्माय नमः
ह्रीं अनन्ताय नमः
ह्रीं पृथिव्यै नमः
ह्रीं सुधासमुद्राय नमः
ह्रीं मणिद्वीपाय नमः
ह्रीं चिन्तामणिगृहाय नमः
ह्रीं पारिजाताय नमः
ह्रीं रत्नवेदिकायै नमः
ह्रीं मणिपीठाय नमः
ह्रीं नानामुनिगणेभ्यो नमः
ह्रीं नाना देवेभ्यो नमः
ह्रीं धर्माय नमः
ह्रीं ज्ञानाय नमः
ह्रीं वैराग्याय नमः
ह्रीं ऐश्वर्याय नमः
ह्रीं अधर्माय नमः
ह्रीं अज्ञानाय नमः
ह्रीं अवैराग्याय नमः
ह्रीं अनैश्वर्याय नमः
ह्रीं शेषाय नमः
ह्रीं पद्माय नमः
ह्रीं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः
ह्रीं वैश्वानरमण्डलाय नमः
ह्रीं सूर्यमण्डलाय नमः
ह्रीं सोममण्डलाय नमः
ह्रीं सं सत्त्वाय नमः
ह्रीं रं रजसे नमः
ह्रीं तं तमसे नमः
ह्रीं आं आत्मने नमः
ह्रीं अं अन्तरात्मने नमः
ह्रीं पं परमात्मने नमः
ह्रीं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः
ह्रीं जयायै नमः
ह्रीं विजयायै नमः
ह्रीं अजितायै नमः
ह्रीं अपराजितायै नमः
ह्रीं नित्यायै नमः
ह्रीं विलासिन्यै नमः
ह्रीं दोग्ध्यै नमः
ह्रीं अघोरायै नमः
ह्रीं मङ्गलायै नमः
ह्रीं परायै नमः
ह्रीं अपरायै नमः
ह्रीं परात्परायै नमः
ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः
ह्रीं विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः
ह्रीं पञ्चाशद्वर्णभूषितकर्णिकायै नमः

दीप-पूजा

पूर्वसूचना के अनुसार दोनों दीपकों को प्रज्वलित करके–

ह्रीं दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात् तावत् प्रज्वल सुस्थिरा ॥

इस प्रार्थना-मन्त्र द्वारा दीपकों के समक्ष पुष्पाञ्जलि दे। तदनन्तर मूलमन्त्र से यन्त्रराज पर पुष्पाञ्जलि देकर अपने समक्ष, वाम और दक्षिण भाग में भी पुष्पाञ्जलि दे।

भूतशुद्धि विधि

'भूतशुद्धि' द्वारा शरीर में स्थित 'सङ्कोच शरीर' जिसे 'पाप-शरीर' भी कहते हैं, उसका पृथिवी आदि पञ्चमहाभूतों के बीजाक्षरों से शोषण, दहन एवं अमृताप्लावन करके 'दिव्यशरीर' का उत्पादन और 'शिव-शक्तिमय-शरीर' का निर्माण किया जाता है। इसे एक प्रकार से 'नाडी-शुद्धि' भी कहते हैं। इसकी विधि इस प्रकार है–

सर्वप्रथम् नासिका के दाहिने भाग (पिङ्गला) से श्वास खींच कर–

'ह्रीं मूलशृङ्गाटकात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा'

बोलकर जीव शिव को ब्रह्मरन्ध्र में स्थापित करे और वहाँ परमशिव के साथ एकीभूत होने की भावना करके नासिका के वाम भाग (इडा) से श्वास का रेचन करे।

पुनः 'यं' बीज से इडा द्वारा पूरक करके–

'सङ्कोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा'

बोलकर पिङ्गला द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि

'सङ्कोचशरीर का शोषण हो गया।'

पुनः 'रं' बीज से पिङ्गला द्वारा पूरक करके–

सङ्कोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा।

बोलकर इडा द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'सङ्कोच शरीर' का दहन हो गया।

पुनः 'वं' बीज से इडा द्वारा पूरक करके–

'परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा'।

बोलकर पिङ्गला द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'जले हुए 'पाप-शरीर' की भस्म सहस्रार से झरे हुए अमृत से आप्लावित हो गई'।

पुनः 'लं' बीज से पिङ्गला द्वारा पूरक करके–

'शाम्भवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा'।

बोलकर इडा द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'इससे शाम्भव (दिव्य) शरीर उत्पन्न हो गया'।

पुनः 'ह्रीं' बीज से इडा द्वारा पूरक करके–

'शिवशक्तिमयं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा'।

बोलकर पिङ्गला द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–'दिव्य शरीर शिवशक्तिमय हो गया'।

पुनः **'हंसः सोहं'** मन्त्र से पिङ्गला द्वारा पूरक करके–

'अवतर अवतर शिवपदात् जीव सुषुम्नापथेन प्रविश मूलशृङ्गाटकमुल्लसोलस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोहं स्वाहा'।

बोलकर इडा द्वारा रेचक करते हुए भावना करे कि–शिव के साथ सहस्रार में जो जीवात्मा स्थापित किया था, वह सुषुम्ना मार्ग से पुनः मूलाधार में स्थित हो गया।

(यहाँ यह विशेष स्मरणीय है कि भूतशुद्धि की इस क्रिया में पूरक और रेचक को ही प्राणायाम कहते हैं। इसमें कुम्भक नहीं होता इसे नाड़ी शुद्धि भी कहा जाता है। पूरक में प्रत्येक बीज का

१६ बार उच्चारण होता है तथा रेचक में उसके आगे लिखे हुए वाक्य का उच्चारण होता है। इसका विशेष प्रकार जानने के लिये 'श्रीविद्यारत्नाकर' का 'भूतशुद्धि' प्रकरण देखें।)

आत्म-प्राण-प्रतिष्ठा

अपने हृदय पर दाहिना हाथ रखकर–

'ह्रीं आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि ह्रीं आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा'

यह वाक्य बोलकर प्राण प्रतिष्ठा की भावना करे तथा प्राणशक्ति की प्रार्थना करे–

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डभिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणम्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥

प्राणायामः–

आत्मप्राणप्रतिष्ठा के पश्चात् १६, १० अथवा ३ बार प्राणायाम करे। प्राणायाम की विधि इस प्रकार है–पहले 'नासिका के वामभाग से एक बार मन्त्र का मानसिक उच्चारण करते हुए पूरक करे तदनन्तर दोनों भागों की नासिका बन्द करके कुम्भक में चार बार मन्त्र का जप करे तथा उसके पश्चात् दो बार मन्त्र जपते हुए रेचक करे। पुनः नासिका के दक्षिणभाग से एक बार मन्त्रजप करते हुए पूरक, चार बार जप करते हुए कुम्भक तथा दो बार मन्त्रजप करते हुए रेचक करे।' यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्रकार कम-से-कम तीन प्राणायाम करने चाहिये। बाद में धीरे-धीरे मन्त्रों के जप की सङ्ख्या और प्राणायामों की सङ्ख्या बढ़ानी चाहिये।

प्राणायाम के द्वारा जठराग्नि दीप्त होती है। शरीर के सब विकार दूर होते हैं तथा शरीर में कान्ति और दीप्ति आदि का–

प्रादुर्भाव होता है और कुछ ही समय के पश्चात् साधक को इन गुणों की अनुभूति होने लगती है। अतः साधनावस्था में प्राणायाम करना आवश्यक है। प्राणायाम में मन्त्रप्रयोग के स्थान पर मातृकावर्णों का भी उच्चारण होता है जिनमें ५१ मातृका-वर्णों को तीन भागों में विभक्त किया जाता है। यथा–

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं
एं ऐं ओं औं अं अः — इन १० स्वरों से पूरक करे।
कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं
टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं
पं फं बं भं मं — इन २५ व्यञ्जनों से कुम्भक करे।
यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं। इन १० व्यञ्जनों से रेचक करें।

इसी प्रकार विपरीत क्रम से १० स्वरों से पूरक, २५ व्यञ्जनों से कुम्भक और १० व्यञ्जनों से रेचक करें। यह एक प्राणायाम होता है। ऐसे तीन प्राणायाम करने चाहिये।

विघ्नोत्सारणम्–

ह्रीं अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इस मन्त्र का उच्चारण करके बाँये पैर की एड़ी से भूमि पर आघात तथा दोनों हाथों से चुटकी बजाते हुए क्रूर दृष्टि से देखे और तीन ताली बजाये। इस प्रकार भूमिगत, आकाशगत एवं दिव्य विघ्नों को दूर करे।

तदनन्तर 'नमः' इस अङ्गुष्ठमन्त्र का उच्चारण करके शिखा बाँधे।



न्यासप्रकरणम्

मातृकान्यासः

विनियोगः—

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीमातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकानि मम श्रीभुवनेश्वरीपूजाङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ह्रीं ब्रह्मणे ऋषये नमः (शिरसि), गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे), श्रीमातृकासरस्वती देवतायै नमः (हृदये), हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः (गुह्ये), स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः (पादयोः), बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

इसके पश्चात् सम्पूर्ण मातृका—'अं-आं-इं-ईं॰ से क्षः' तक, बोलते हुए सर्वाङ्ग में तीन बार व्यापक करे।

करन्यासः—

ह्रीं अं कं खं गं घं ङं आं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां नमः।
ह्रीं एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रीं ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ह्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ह्रीं अं कं खं गं घं ङं आं	हृदयाय नमः।
ह्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं	शिरसे स्वाहा।

ह्लीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट् ।
ह्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम् ।
ह्लीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ह्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अस्त्राय फट् ।

'ह्लीं भूर्भुवः स्वरोम्' इससे दिशाओं में चुटकी बजाकर दिग्बन्ध करे।

ध्यानम्—

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहित-वदन-दोः-पादयुक्-कुक्षि-वक्षो—
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखित-वरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था—
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥

इससे ध्यान करके 'लं पृथिकात्मकं'॰ इत्यादि पूर्वोक्त मन्त्रों से पञ्चोपचार-पूजा करे। तदनन्तर क्रमशः अन्तर्मातृका और बहिर्मातृका न्यास करे।

(न्यास के लिये अनामिका एवं अंगूठे को मिलाकर 'तत्त्वमुद्रा' द्वारा लिखे हुए मातृकावर्ण का उच्चारण करके बताये गये अंग का स्पर्श करे। दाहिने हाथ पर बाँये हाथ से मुद्रा बनाकर न्यास करे तथा जिह्वा, दन्त, गुह्य आदि स्पर्श के अयोग्य स्थानों का केवल मानसिक स्मरण करे।)

अन्तर्मातृका-न्यासः

समस्त अक्षरों के पूर्व मूल मन्त्र बोले।

कण्ठगत विशुद्धि चक्र के षोडशदलकमल में दक्षिणावर्त से—

ह्लीं अं नमः । आं नमः । इं नमः । ईं नमः । उं नमः । ऊं नमः । ऋं नमः । ॠं नमः । लृं नमः । ॡं नमः । एं नमः। ऐं नमः। ओं नमः । औं नमः । अं नमः । अः नमः ।

हृदयगत अनाहत चक्र के द्वादशदलकमल में–

ह्रीं कं नमः । खं नमः । गं नमः । घं नमः । ङं नमः । चं नमः । छं नमः । जं नमः । झं नमः । ञं नमः । टं नमः । ठं नमः ।

नाभिगत मणिपूरचक्र के दशदलकमल में–

ह्रीं डं नमः । ढं नमः । णं नमः । तं नमः । थं नमः । दं नमः । धं नमः । नं नमः । पं नमः । फं नमः ।

उपस्थ-मूलगत स्वाधिष्ठानचक्र के षड्दलकमल मे–

ह्रीं बं नमः । भं नमः । मं नमः । यं नमः । रं नमः । लं नमः ।

(पायु और उपस्थ के बीच में) मूलाधारचक्र चतुर्दलकमल में–

ह्रीं वं नमः । शं नमः । षं नमः । सं नमः ।

भौहों के बीच आज्ञाचक्र के द्विदल में–

ह्रीं हं नमः । ह्रीं क्षं नमः ।

मस्तक पर सहस्रारचक्र में–

(यहाँ २० पत्रों में एक अक्षर का न्यास करने से एक हजार पत्रों में ५० मातृकाक्षरों का न्यास होता है ।) यथा–

अं नमः । आं नमः । इं नमः । ईं नमः । उं नमः । ऊं नमः । ऋं नमः । ॠं नमः । लृं नमः । लॄं नमः । एं नमः । ऐं नमः । ओं नमः । औं नमः । अं नमः । अः नमः । कं नमः । खं नमः । गं नमः । घं नमः । ङं नमः । चं नमः । छं नमः । जं नमः । झं नमः । ञं नमः । टं नमः । ठं नमः । डं नमः । ढं नमः । णं नमः । तं नमः । थं नमः । दं नमः । धं नमः । नं नमः । पं नमः । फं नमः । बं नमः । भं नमः । मं नमः । यं नमः । रं नमः । लं नमः । वं नमः । शं नमः । षं नमः । सं नमः । हं नमः । ळं नमः । क्षं नमः ।

इसका बीस बार उच्चारण करने से १००० पत्रों में न्यास होता है । इसके पश्चात् बहिर्मातृकान्यास करें–

बहिर्मातृकान्यासः

ह्रीं अं नमः (शिरसि)
ह्रीं आं नमः (ललाटे)
ह्रीं इं नमः (दक्षनेत्रे)
ह्रीं ईं नमः (वामनेत्रे)
ह्रीं उं नमः (दक्षकर्णे)
ह्रीं ऊं नमः (वामकर्णे)
ह्रीं ऋं नमः (दक्षनासापुटे)
ह्रीं ॠं नमः (वामनासापुटे)
ह्रीं ऌं नमः (दक्षकपोले)
ह्रीं ॡं नमः (वामकपोले)
ह्रीं एं नमः (ऊर्ध्वोष्ठे)
ह्रीं ऐं नमः (अधरोष्ठे)
ह्रीं ओं नमः (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ)
ह्रीं औं नमः (अधोदन्तपङ्क्तौ)
ह्रीं अं नमः (जिह्वाग्रे)
ह्रीं अः नमः (कण्ठे)
ह्रीं कं नमः (दक्षबाहुमूले)
ह्रीं खं नमः (दक्षकूर्परे) कोहनी)
ह्रीं गं नमः (दक्षमणिबन्धे) कलाई)
ह्रीं घं नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले)
ह्रीं ङं नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
ह्रीं चं नमः (वामबाहुमूले)
ह्रीं छं नमः (वामकर्पूरे)

ह्रीं जं नमः (वाममणिबन्धे)
ह्रीं झं नमः (वामकराङ्गुलिमूले)
ह्री ञं नमः (वामकराङ्गुल्यग्रे)
ह्रीं टं नमः (दक्षोरुमूले)कटि प्रदेश)
ह्रीं ठं नमः (दक्षजानुनि) घुटना)
ह्रीं डं नमः (दक्षगुल्फे) टखना)
ह्रीं ढं नमः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
ह्रीं णं नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
ह्रीं तं नमः (वामोरुमूले) कटिप्रदेश)
ह्रीं थं नमः (वामजानुनि) घुटना)
ह्रीं दं नमः (वामगुल्फे) टखना)
ह्रीं धं नमः (वामपादाङ्गुलिमूले)
ह्रीं नं नमः (वामपादाङ्गुल्यग्रे)
ह्रीं पं नमः (दक्षपार्श्व) दाहिनी पसली)
ह्रीं फं नमः (वामपार्श्वे) बाईं पसली)
ह्रीं बं नमः (पृष्ठे) पीठ)
ह्रीं भं नमः (नाभौ)
ह्रीं मं नमः (जठरे) उदर)
ह्रीं यं नमः (हृदये)
ह्रीं रं नमः (दक्षकक्षे) दाहिनी कोंख)
ह्रीं लं नमः (गलपृष्ठे)
ह्रीं वं नमः (वामकक्षे) बाईं कोंख)

ह्रीं शं नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं) हृदय से दाहिने हाथ की अंगुलियों तक)

ह्रीं षं नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं) हृदय से बाँयें हाथ का अंगुलियों तक)

ह्रीं सं नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं) हृदय से दाहिने पैर की अंगुलियों तक)

ह्रीं हं नमः (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं) हृदय से बायें पैर की अंगुलियों तक)

ह्रीं ळं नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं) कटि से पैर की अंगुलियों तक)

ह्रीं क्षं नमः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं) कटि से मस्तक पर्यन्त)

यहाँ प्रत्येक नाममन्त्र के पहले "ह्रीं" बीज लगाकर या अपना मूलमन्त्र, शेष में नमः लगाकर न्यास करें।

पीठन्यास–

सब नामों के आगे मूलमन्त्र बोले।

पहले मूलमन्त्र से 'व्यापक' करके पीठन्यास करे।

मूलाधरे–आधारशक्त्यै नमः । स्वाधिष्ठाने-प्रकृत्यै नमः, मणिपुरेकूर्माय नमः।

हृदये–अन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः, सुधासमुद्राय नमः, मणिद्वीपाय नमः। चिन्तामणिगृहाय नमः। पारिजाताय नमः।

हृदयमूले–रत्नवेदिकायै नमः । तस्योपरिमणि पीठाय नमः, दिक्षु नानामुनिगणेभ्यो नमः , नाना देवेभ्यो नमः।

दक्षस्कन्धे–धर्माय नमः । वामस्कन्धे-ज्ञानाय नमः । वामोरौवैराग्याय नमः।

दक्षोरौ–ऐश्वर्याय नमः । दक्षकुक्षौ–अधर्माय नमः । दक्षपृष्ठेअज्ञानाय नमः।

वामपृष्ठे–अवैराग्यायनमः।वामकुक्षौ–अनैश्वर्याय नमः। हृदये-शेषाय नमः, पद्मायनमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विकृतिमयकेशरेभ्यो नमः।

हृदयमध्ये–पञ्चाशद्वर्णभूषितकर्णिकायै नमः। वैश्वानरमण्डलाय नमः। सूर्याय मण्डलाय नमः। सोममण्डलाय नमः। सं सत्त्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः, आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

अष्टपत्रेषु–जयायै नमः। विजयायै नमः। अजितायै नमः। अपराजितायै नमः। नित्यायै नमः। विलासिन्यै नमः। दोग्ध्र्यै नमः। अघोरायै नमः।

मध्ये–मङ्गलायै नमः। ऐं परायै नमः। ऐं अपरायै नमः। ऐं परापरायै नमः, ह्रीं सर्वशक्ति-कमलासनाय नमः।

हृल्लेखादि-न्यासः

ओं ह्रील्लेखायै नमः (शिरसि) ऐं गगनायै नमः (मुखे) उं रक्तायै नमः। (हृदये) इं करालिकायै नमः (गुह्ये) अं महोच्छुष्मायै नमः (पादयोः)। इसके पश्चात् 'ओं हृल्लेखायै नमः'। इन मन्त्रों से क्रमशः मस्तक पर, पूर्व, दक्षिण, उत्तर तथा पश्चिम में पाँच मुखों की भावना करके उन स्थानों पर न्यास करे।

गायत्र्यादिन्यासः–

ह्रीं गायत्र्यै नमः (कण्ठे) ह्रीं सावित्र्यै नमः (वामस्तने)। ह्रीं सरस्वत्यै नमः (दक्षस्तने) ह्रीं ब्रह्मणे नमः (वामस्कन्धे) ह्रीं विष्णवे नमः (हृदये) ह्रीं रुद्राय नमः (दक्षस्कन्धे)।

मिथुनन्यासः–

ललाटे–ह्रीं गायत्र्यै ब्रह्मणे नमः, दक्षकपोले, ह्रीं सावित्र्यै विष्णवे नमः वामकपोले, ह्रीं महेश्वर्यै रुद्राय नमः वामकर्णे–ह्रीं श्रियै धनपतये नमः। मुखे–ह्रीं रत्यै कामाय नमः। दक्षकर्णे-ह्रीं पुष्ट्यै गणपतये नमः।
दक्षकर्णकपोलयोर्मध्ये–ह्रीं वसुधारायै शङ्खनिधये नमः।
वामकर्णकपोलयोर्मध्ये ह्रीं वसुमत्यै पद्मनिधये नमः।

मुखे— ह्रीं नमः।

गलमूले— ह्रीं गायत्र्यै ब्रह्मणे नमः।

वामस्तने— ह्रीं सावित्र्यै विष्णवे नमः।

दक्षस्तने— ह्रीं माहेश्वर्यै रुद्राय नमः।

वामस्कन्धे— ह्रीं श्रियै धनपतये नमः।

हृदये— ह्रीं रत्यै कामाय नमः।

दक्ष पार्श्वे— ह्रीं वसुधारायै शङ्खनिधये नमः।

वामपार्श्वे— ह्रीं वसुमत्यै पद्मनिधये नमः।

ब्राह्म्यान्यासः—

ललाटे— ह्रीं आं ब्राह्म्यै नमः।

वामस्कन्धे— ह्रीं ईं माहेश्वर्यै नमः।

वामपार्श्वे— ह्रीं ऊं कौमार्यै नमः।

उदरे— ह्रीं ॠं वैष्णव्यै नमः।

दक्षपार्श्वे— ह्रीं ॡं वाराह्यै नमः।

दक्षस्कन्धे— ह्रीं ऐं इन्द्राण्यै नमः।

गलपृष्ठे— ह्रीं औं चामुण्डायै नमः।

हृदये— ह्रीं अः महालक्ष्म्यै नमः।

मूलमन्त्रन्यासः—

तान्त्रिक सन्ध्या में लिखे अनुसार मूलमन्त्र के क्रमशः विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, षडङ्गन्यास और ध्यान करके मन्त्र जप करे। इसके पश्चात् अन्तर्याग करके पूजन प्रारम्भ करे।

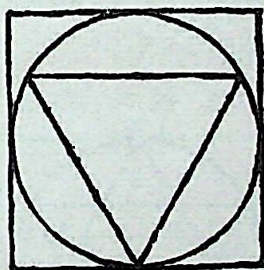
श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्रीभुवनेश्वरी-वरिवस्यायां न्यासप्रकरणम् सम्पूर्णम्।



अथ पात्रासादनम्

कलशस्थापन—

पूजापीठ पर अपने बायें भाग में मत्स्यमुद्रा द्वारा त्रिकोण, वृत्त और चतुरस्रात्मक मण्डल जल से बनाकर '(मूलमन्त्र) ह्रीं कलश-मण्डलाय नमः' बोलकर अक्षत और पुष्प से उसकी पूजा करे। मण्डल की आकृति इस प्रकार है—



फिर कलश के जल में सुगन्धित द्रव्य तथा गन्ध-पुष्प डालकर उक्त मण्डल पर कलश का स्थापन करके प्रार्थना करे—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः।
यामान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

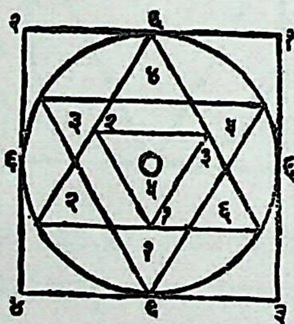
तदनन्तर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा दिखाये और उस जल से–

भुवनार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

पूजा-सामग्री एवं स्वयं को प्रोक्षित करे ।

सामान्यार्घ्य-विधिः

कलश (वर्धनीपात्र) की दाहिनी ओर[1] कलश के जल को अन्य लघुपात्र में लेकर उससे बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा द्वारा बनाकर मूलमन्त्र के षडङ्ग से उसका अर्चन करे । यथा–



चतुरस्र में–अग्नि, ईशान, नैर्ऋति, वायुकोण, मध्य तथा चारों दिशाओं में–

ह्रीं ह्रां हृदयाय नमः–	हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा–	शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ह्रीं ह्रूं शिखायै वषट्–	शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

1. पृथ्वीधराचार्य की पद्धति 'भुवनेश्वरी-क्रम चन्द्रिका' में पात्र-स्थापन का क्रम इस प्रकार वर्णित है–

आदौ कुम्भं ततः शङ्खं श्रीपात्रं शक्तिपात्रकम् ।
भोगं च गुरुपात्रं च बलिपात्राण्यपि क्रमात् ॥

ह्रीं हैं कवचाय हुं– कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं ह्रौं नैत्रत्रयाय वौषट्– नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं हः अस्त्राय फट्– अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

तदनन्तर षट्कोण में सामने के प्रदक्षिण क्रम से–

ह्रीं ह्रां हृदयाय नमः– हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा– शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं ह्रूं शिखायै वषट्– शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं हैं कवचाय हुम्– कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्– नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं हः अस्त्राय फट्– अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

तत्पश्चात् त्रिकोण में सामने प्रदक्षिण क्रम से–

ह्रीं ह्रीं नमः ह्रीं ह्रीं नमः ह्रीं ह्रीं नमः

और बिन्दु में ह्रीं ह्रीं नमः।

इसके बाद 'ह्रीं अस्त्राय फट्' इस मन्त्र से सामान्यार्घपात्र के त्रिपदी का कलश जल से प्रक्षालन करे–

ह्रीं अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीभुवनेश्वर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः'

इससे आधारत्रिपदी का मण्डल पर स्थापन करे और उस पर 'रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूँ अग्निमण्डलाय नमः"

इससे अग्निमण्डल की भावना करके अग्नि की दस कलाओं की नीचे लिखे अनुसार पूजा करे।

ह्रीं यं धूम्रार्चिष्किलायै नमः ह्रीं षं सुश्रीकलायै नमः।

ह्रीं रं ऊष्मा कलायै नमः ह्रीं सं सुरूपा कलायै नमः।

ह्रीं लं ज्वलिनी कलायै नमः ह्रीं हं कपिला कलायै नमः।

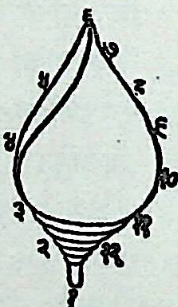
ह्रीं वं ज्वालिनी कलायै नमः ह्रीं ळं हव्यवाहिनी कलायै नमः।

ह्रीं शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः ह्रीं क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः।

'ह्रीं अस्त्राय फट्' इससे शङ्ख को प्रक्षालित करके–

ह्रीं उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीभुवनेश्वर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः।

इससे आधार पर स्थापित करे और उस पर ह्रीं ह्रां ह्रीं हूँ हैं ह्रौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः' इससे सूर्यमण्डल की भावना करके नीचे लिखे अनुसार बारह कलाओं की पूजा करे।–



ह्रीं कं भं तपिनीकलायै नमः ह्रीं छं दं सुषुम्नाकलायै नमः।
ह्रीं खं बं तापिनीकलायै नमः ह्रीं जं थं भोगदाकलायै नमः।
ह्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः ह्रीं झं तं विश्वाकलायै नमः।
ह्रीं घं पं मरीचिकलायै नमः ह्रीं ञं णं बोधिनीकलायै नमः।
ह्रीं ङ नं ज्वालिनीकलायै नमः ह्रीं टं ढं धारिणीकलायै नमः।
ह्रीं चं धं रुचिकलायै नमः ह्रीं ठं डं क्षमाकलायै नमः।

ह्रीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीभुवनेश्वर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः।

इससे कलश के जल से शंख में जल पूरित करे और क्षीर-बिन्दु भी डाले। फिर उसमें 'ह्रीं सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः'। इससे सोममण्डल की भावना करके उसमें सोलह सोमकलाओं की पूजा करे–

ह्रीं अं अमृताकलायै नमः ह्रीं ईं तुष्टिकलायै नमः
ह्रीं आं मानदाकलायै नमः ह्रीं उं पुष्टिकलायै नमः
ह्रीं इं पूषाकलायै नमः ह्रीं ऊं रतिकलायै नमः

ह्लीं ॠं धृतिकलायै नमः ह्लीं ऐं श्रीकलायै नमः।
ह्लीं ॠं शशिनीकलायै नमः ह्लीं ओं प्रीतिकलायै नमः।
ह्लीं लृं चन्द्रिकाकलायै नमः ह्लीं औं अङ्गदाकलायै नमः।
ह्लीं लॄं कान्तिकलायै नमः ह्लीं अं पूर्णाकलायै नमः।
ह्लीं एं ज्योत्स्नाकलायै नमः ह्लीं अः पूर्णामृता कलायै नमः।

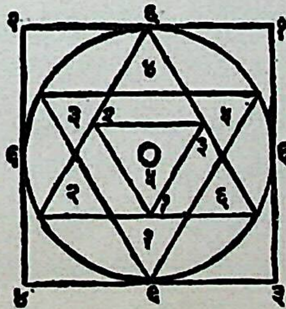
तदनन्तर शङ्ख में षट्कोण लिखकर पूर्वोक्त षडङ्ग मन्त्र से अर्चन करे। 'अस्त्राय फट्' इस से रक्षण 'कवचाय हुं' इससे अवगुण्ठन, धेनु और योनिमुद्रा प्रदर्शन मूलमन्त्र से सात बार उसे अभिमन्त्रित करे तथा उसके जल से पूजा-द्रव्यों का तथा स्वयं का–

भुवनार्चन-काले हि यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै॥

यह श्लोक बोलकर प्रोक्षण करे।

विशेषार्घ्यविधि

सामान्यार्घ्यपात्र के दक्षिण में शङ्खजल से पूर्ववत् आधार-मण्डल और बिन्दु में अनुस्वार-सहित चतुर्थ स्वर (ईं) लिखकर उसमें अपने अग्रकोण से प्रदक्षिणा क्रम का अनुसरण कर चतुरस्र में मूलमन्त्र के षडङ्ग से पूजा करे–



ह्रीं ह्रां हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रूं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रैं कवचाय हुं कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

तदनन्तर षट्कोण में सामने के अग्रकोण से प्रदक्षिण क्रम-पूर्वक पूर्ववत् पूजन करे। यथा–

ह्रीं ह्रां हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रूं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रैं कवचाय हुं कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं ह्रः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से त्रिकोण तथा बिन्दु में पूर्ववत् पूजा करे–

तीन काणों में–

ह्रीं ह्रीं नमः। ह्रीं ह्रीं नमः। ह्रीं ह्रीं नमः।

बिन्दु में–ह्रीं ह्रीं नमः।

'ह्रीं अस्त्राय फट्' मन्त्रद्वारा कलश जल से आधार को प्रक्षालित करके–

'ह्रीं अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीभुवनेश्वर्या विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः'।

इससे आधार को स्थापित करके–

'ह्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः'

इससे अग्निमण्डल की भावना करके दस वह्निकलाओं की पूजा करे। यथा–

ह्रीं यं धूमार्चिष्कलायै नमः ह्रीं षं सुश्रीकलायै नमः ।
ह्रीं रं ऊष्मा कलायै नमः ह्रीं सं सुरूपा नमः ।
ह्रीं लं ज्वलिनी कलायै नमः ह्रीं हं कपिला नमः ।
ह्रीं वं ज्वालिनी कलायै नमः ह्रीं ळं हव्यवाहिनी नमः ।
ह्रीं शं विस्फुलिङ्गिनी नमः ह्रीं क्षं कव्यवाहिनी नमः ।

ततः—

'ह्रीं अस्त्राय फट्' इस अस्त्रमन्त्र से विशेषार्घ्य पात्र को प्रक्षालित करके—

'ह्रीं उं सूर्यमण्डलायार्थप्रद-द्वादशकलात्मने श्रीभुवनेश्वर्या विशेषार्घ्य-पात्राय नमः ।

इससे विशेषार्घ्यपात्र को आधार पर स्थापित करके—

ह्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा' ।

इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देवे । तथा—

'ह्रीं हां ह्रीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः ।

इससे सूर्यमण्डल की भावना करके उसमें १२ सूर्यकलाओं की पूजा करे—

ह्रीं कं भं तपिनीकलायै नमः ह्रीं छं दं सुषम्नाकलायै नमः
ह्रीं खं बं तापिनीकलायै नमः ह्रीं जं थं भोगदाकलायै नमः
ह्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः ह्रीं झं तं विश्वाकलायै नमः
ह्रीं घं पं मरीचिकलायै नमः ह्रीं ञं णं बोधिनीकलायै नमः
ह्रीं ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः ह्रीं टं ढं धारिणीकलायै नमः
ह्रीं चं धं रुचिकलायै नमः ह्रीं ठं डं क्षमा-कलायै नमः ।

तदनन्तर विशेषार्घ्य में—

ह्रीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीभुवनेश्वर्या विशेषार्घ्यामृताय नमः ।

इससे अकार से क्षकार पर्यन्त और क्षकार से अकार पर्यन्त विन्दुसहित मातृका द्वारा कस्तूरी एवं केसर से सुवासित क्षीर को पूरित करके अष्टगन्ध से युक्त पुष्प उसमें डाले। और–

ह्रीं सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः।

इससे सोममण्डल की भावना करके षोडश कलाओं की पूजा करे–

ह्रीं अं अमृताकलायै नमः	**ह्रीं लृं चन्द्रिकलायै नमः**
ह्रीं आं मानदाकलायै नमः	**ह्रीं लॄं कान्तिकलायै नमः**
ह्रीं इं पूषाकलायै नमः	**ह्रीं एं ज्योत्स्नाकलायै नमः**
ह्रीं ईं तुष्टिकलायै नमः	**ह्रीं ऐं श्रीकलायै नमः**
ह्रीं उं पुष्टिकलायै नमः	**ह्रीं ओं प्रीतिकलायै नमः**
ह्रीं ऊं रतिकलायै नमः	**ह्रीं औं अङ्गदाकलायै नमः**
ह्रीं ऋं धृतिकलायै नमः	**ह्रीं अं पूर्णाकलायै नमः**
ह्रीं ॠं शशिनीकलायै नमः	**ह्रीं अः पूर्णामृताकलायै नमः**

और '**ह्रीं ॐ जूं सः स्वाहा**' इससे आठ बार अभिमन्त्रित करके विशेषार्घ्यपात्र में मत्स्यमुद्रा से षट्कोण बनाकर षडङ्गमन्त्रों से पूजा करे। तथा–

ह्रीं ह्रीं तां चिन्मयीमानन्दलक्षणाममृतकलशपिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा।

इससे सुधादेवी का अर्चन करके उस अर्घ्य से कुछ अर्घ्यामृत आचमनी से '**ह्रीं वषट्**' का उच्चारण कर निकालें, और '**ह्रीं स्वाहा**' इससे वहीं उस पात्र में छोड़ दें। '**ह्रीं हुं**' इससे अवगुण्ठन '**ह्रीं वौषट्**' से धेनुमुद्रा द्वारा अमृतीकरण करे फिर '**ह्रीं फट्**' से संरक्षण करके '**ह्रीं नमः**' इससे उसमें पुष्प छोड़े। तदनन्तर मूलमन्त्र बोलते हुए गालिनी-मुद्रा से उसका निरीक्षण कर '**ह्रीं एं**' बीजों से योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे और मूलमन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके सुधादेवी की षोडशोपचार पूजा करे तथा उसकी बिन्दुओं से–

भुवनार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

यह श्लोक बोलकर पूजासामग्री का प्रोक्षण करे तथा समस्त वस्तुओं के विद्यामय होने की भावना करे ।

शुद्धि-संस्कारः–

विशेषार्घ्यपात्र के दक्षिण में सामान्यार्घ्योदक से त्रिकोण, वृत्त, और चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा द्वारा बनाकर–

'ह्रीं ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय' मन्त्र से मण्डल की पूजा करे और उस पर आर्द्रकयुक्त शुद्धिपात्र को स्थापित करके **'ह्रीं ॐ श्लीं पशु हुं फट्'** मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करे तथा गन्धाक्षत से पूजा करे ।

इसी प्रकार उसके नीचे त्रिकोण, वृत्त एवं चतुरस्रात्मक और दो मण्डल बनाये जिनमें से एक में–

'ह्रीं हंसः शिवः सोहं हंसः शिवः सोहं हंसः हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः'

इससे पूजा करके गुरु-पात्र स्थापित करे और दूसरे मण्डल में **'ह्रीं हंसः नमः'** मन्त्र से मण्डल की पूजा करके आत्मपात्र स्थापित करे । इसके अनन्तर विशेषार्घ्य पात्र को दाहिने हाथ से स्पर्श करके नीचे लिखे मन्त्रों से अभिमन्त्रित करे । यथा–

वह्निकलाः

ह्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः | **ह्रीं षं सुश्रियै नमः**
ह्रीं रं ऊष्मायै नमः | **ह्रीं सं सुरूपायै नमः**
ह्रीं लं ज्वलिन्यै नमः | **ह्रीं हं कपिलायै नमः**
ह्रीं वं ज्वालिन्यै नमः | **ह्रीं ळं हव्यवाहिन्यै नमः**
ह्रीं शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः | **ह्रीं क्षं कव्यवाहिन्यै नमः**

सूर्यकलाः

ह्रीं कं भं तपिन्यै नमः
ह्रीं खं बं तापिन्यै नमः
ह्री गं फं धूम्रायै नमः
ह्रीं घं पं मरीच्यै नमः
ह्रीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः
ह्रीं चं धं रुच्यै नमः
ह्रीं छं दं सुषुम्नायै नमः
ह्रीं जं थं भोगदायै नमः
ह्रीं झं तं विश्वायै नमः
ह्रीं ञं णं बोधिन्यै नमः
ह्रीं टं ढं धारिण्यै नमः
ह्रीं ठं डं क्षमायै नमः

सोमकलाः

ह्रीं अं अमृतायै नमः
ह्रीं आं मानदायै नमः
ह्रीं इं पूषायै नमः
ह्रीं ईं तुष्ट्यै नमः
ह्रीं उं पुष्ट्यै नमः
ह्रीं ऊं रत्यै नमः
ह्रीं ऋं धृत्यै नमः
ह्रीं ॠं शशिन्यै नमः
ह्रीं लृं चन्द्रिकायै नमः
ह्रीं लॄं कान्त्यै नमः
ह्रीं एं ज्योत्स्नायै नमः
ह्रीं ऐं श्रियै नमः
ह्रीं ओं प्रीत्यै नमः
ह्रीं औं अङ्गदायै नमः
ह्रीं अं पूर्णायै नमः
ह्रीं अः पूर्णामृतायै नमः

हँसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वर-सदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ नमः ॥

प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ नमः ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ नमः ॥

तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाँसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ नमः ॥

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥ नमः ॥
'मूलं' नमः ॥
अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके ॥ नमः ॥

अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि ॥ नमः ॥

तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि ।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥ नमः ॥

ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥ नमः ॥

ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः । नमः ॥

इस प्रकार अभिमन्त्रित विशेषार्घ्यामृत से कुछ गुरुपात्र में लेकर गुरुत्रय की पादुकामन्त्र से पूजा करे । गुरुपात्र का क्षीर आत्मपात्र में लेकर मूलाधार में वालाग्रमात्र अनादिवासनारूप ईन्धन से प्रज्वलित कुण्डलिनी में स्थित चिदग्निमण्डल का ध्यान करके–'ह्रीं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः' इसके द्वारा मानसिक पूजा करके नीचे बताये अनुसार आचमनी से ग्रहण करे–

ह्रीं (मूलं) पुण्यं जुहोमि स्वाहा ह्रीं (मूलं) सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा
ह्रीं (मूलं) पापं जुहोमि स्वाहा ह्रीं (मूलं) विकल्पं जुहोमि स्वाहा
ह्रीं (मूलं) कृत्यं जुहोमि स्वाहा ह्रीं (मूलं) धर्मं जुहोमि स्वाहा
ह्रीं (मूलं) अकृत्यं जुहोमि स्वाहा ह्रीं (मूलं) अधर्मं जुहोमि स्वाहा
ह्रीं (मूलं) अधर्मं जुहोमि वौषट्

ह्रीं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न-सुसुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा।

इससे पूर्णाहुति की भावना करके—ह्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योति-रहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

इससे अपने कुण्डलिनीरूप चिदग्नि कुण्ड में होम-बुद्धि से हवन करे फिर विशेषार्घ्य से कुछ क्षीर क्षीरकशल में डाले।

समाप्ति-पर्यन्त शङ्ख और विशेषार्घ्य-पात्र को सुस्थिर रखे, चलाये नहीं।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्यायां पात्रासादनं सम्पूर्णम्।



केचित् गृणन्ति भवतीममृतेश्वरीति
संजीवनीं स्नुतसुधा रस संप्लुताङ्गीम्।
पीयूष वर्षण समुद्भव सोमवल्लीं
विन्दे कदा नुतिनतां सकलामयघ्नीम्॥

अन्तर्यागः

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र-पर्यन्त उल्लसित कमलनाल के सदृश अतिसूक्ष्म तन्तु के समान, दस हजार सूर्यों के समान प्रकाशवाली, सैकड़ों चन्द्ररश्मि के तुल्य शीतल एवं तेजोदण्ड की आकृति वाली चितिशक्ति कुण्डली की भावना करे।

तदनन्तर अन्तर्मातृका-न्यास में प्रोक्त षट्चक्रों की अपने शरीर में भावना करे। उन छह चक्रों में भुवनेश्वरी-यन्त्र के छह आवरणों की भावना करते हुए मूलमन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान कर भुवनेश्वरी यन्त्र के छहों चक्रों को ब्रह्मरन्ध्र में स्थापित करे और भुवनेश्वरी के चरणकमलों से निकलती हुई अमृतधाराओं से शरीरस्थ छह चक्रों का सिञ्चन हो रहा है ऐसी भावना करे। तदनन्तर पुष्पाञ्जलि में लाकर भगवती भुवनेश्वरी को हृदय में स्थापित करे।

ब्रह्मरन्ध्र से झर रही अमृतधाराओं को १- चन्दन, २- पुष्प, ३- धूप, ४- दीप, ५- नैवेद्य और ६- ताम्बूल लिये हुए १- पीत, २- हरित, ३- श्याम, ४- रक्त, ५- श्वेत एवं ६- पञ्चवर्णवाली १- पृथ्वी, २- आकाश, ३- वायु, ४- अग्नि, ५- जल तथा ६- सर्वभूतमयी पञ्चमहाभूतों की अधिष्ठात्री देवियाँ सर्वाङ्ग सुन्दरी, रूप, लावण्य-तारुण्य की आभा से देदीप्यमान, परम- सुन्दर युवतियाँ छहों उपचार लिये हुए उन्हें क्रम से समर्पित कर रही हैं। तत्पश्चात् गन्ध की अधिष्ठात्री पीतवर्णवाली देवी भगवती भुवनेश्वरी देवी की नासिका में विलीन हो गई, हरितवर्णवाली देवी कर्णों में, श्यामवर्ण-वाली धूप की अधिष्ठात्री नाभि में रक्तवर्णवाली दीप की अधिष्ठात्री नेत्रों में, श्वेतवर्णवाली नैवेद्य की अधिष्ठात्री जिह्वा में तथा पाँचों वर्णोंवाली ताम्बूल की अधिष्ठात्री मुख में विलीन हो गई ऐसी भावना करे।

इसके पश्चात् जीवात्मा भी भगवती के चरणों में विलीन हो गया, ऐसी भावना करके कुछ क्षणों तक किञ्चिन्मात्र भी चिन्तन न करे। श्वास-प्रश्वास को कुछ काल के लिये अवरुद्ध करे।

तदनन्तर भगवती को ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर त्रिखण्डामुद्रा में पुष्प लेकर नासिकारन्ध्र से भगवती को पुष्पों में लाकर यन्त्र पर पुष्प अर्पण करते हुए बोले–

ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्या अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः।

फिर यन्त्र में–

सपर्या प्रकरणे वहिर्यागः

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां, तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरीं प्रभजे भुवनेशीम्॥

इससे अथवा अपने मन्त्र का ध्यान जो गुरु ने उपदेश किया हो, वह ध्यान करे। तदनन्तर–

ह्रीं (मूलमन्त्र) महापद्मवनान्तःस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥

इससे भगवती को यन्त्रराज में विराजमान करके–

ह्रीं (मूलमन्त्र) आवाहिता भव। ह्रीं (मूलमन्त्र) सन्निरुद्धा भव।
ह्रीं (मूलमन्त्र) संस्थापिता भव। ह्रीं (मूलमन्त्र) सम्मुखी भव।
ह्रीं (मूलमन्त्र) सन्निधापिता भव। ह्रीं (मूलमन्त्र) अवगुण्ठिता भव।

इन मन्त्रों से आवाहनादि छह मुद्राएँ दिखाकर, ह्रीं (मूलमन्त्र) द्वारा वन्दन, धेनु, योनिमुद्राओं को दिखाये तथा हृदयादि षडङ्ग एवं आयुधों की मुद्राएँ भी दिखाये। तदनन्तर भगवती का ध्यान करके पूजन प्रारम्भ करे।

तदनन्तर विविध राजोपचार से श्रीभगवती का (यन्त्र में) या मूर्ति में पूजन करे अशक्त होने पर उनकी भावना से पुष्प अक्षत अर्पण करे–

ह्रीं भुवनेश्वर्यै पादयो पाद्यं कल्पयामि नमः

ह्रीं भुवनेश्वर्यै हस्तयोःअर्घ्यं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै मुखे आचमनीयं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै सर्वाङ्गे सुगन्धितैलाभ्यङ्गमुदवर्तनं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै सुवर्णकलशच्युतसकलतीर्थाभिषेकं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै धौतवस्त्रपरिमार्जनं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै अरुणदुकूलपरिधानं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै अरुणकूचोत्तरीयं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यैदिव्यगन्धसर्वाङ्गीणविलेपनंकल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै केशभारस्य कालागुरुधूपं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै कुसुममाला कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै माणिक्यमुकुटं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै चन्द्रसकलं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै सीमन्तसिन्दूरं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै तिलकरत्नं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै कृष्णाञ्जनं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै मणिकुण्डलयुगलं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै प्रथमभूषणं (माङ्गलसूत्रं) कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै मुक्तावलिं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै वलयावलिं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै ऊर्मिकावलिं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै काञ्चीदाम कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै कटिसूत्रं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै पादकटकं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै रत्ननूपुरं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै पादाङ्गुलीयकं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै एककरे पाशं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै अन्यकरेऽङ्कुशं कल्पयामि नमः

ह्रीं भुवनेश्वर्यै इतरकरे वरं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै अपरकरे अभयं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै श्रीमन्माणिक्यपादुके कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै स्वसमानवेषाभिरावरणदेवताभिः सह महा-चक्राधिरोहणं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै अमृतासवचषकं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै आचमनीयं कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै कर्पूरवीटिकां कल्पयामि नमः
ह्रीं भुवनेश्वर्यै आनन्दोल्लासविलासहासं कल्पयामि नमः

मङ्गलारार्तिक्यम्—चाँदी के पात्र में कुङ्कुम-चन्दन आदि से लिखित अष्टदल, षट्दल अथवा चतुर्दल में से किसी एक प्रकार के कमल की आकृति बनाकर दलों में दूध तथा शक्कर से साँधे हुए जौ अथवा गेहूँ के आटे के द्वारा ऊपर से त्रिकोणाकार डमरु की आकृतिवाले, चार अंगुल ऊँचे घी में पकाये हुए नौ, सात अथवा पाँच विषम संख्या में बने दीपपात्रों को रखकर उनमें गोधृत पूरित कर कर्पूर से युक्त बत्तियों को हृल्लेखा से जलाकर—

'ह्रीं श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं'—इस नवाक्षरी रत्नेश्वरी विद्या से अभिमन्त्रित करके चक्रमुद्रा दिखाये तथा मूलमन्त्र से उसकी अर्चना करके—

ह्रीं जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा—इससे मन्त्रपूर्वक गन्ध- अक्षतादि से घण्टा की पूजा करके उसे बजाते हुए दोनों घुटने जमीन पर टिकाकर उस आरार्तिक के पात्र को ऊपर, मस्तक तक उठाकर—

ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै मङ्गलारार्तिकं कल्पयामि नमः।

सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां,
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारार्तिकस्य।
मुखकमलसमीपे तेऽम्ब सार्धत्रिवारं,
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः॥

इससे नौ बार भगवती के समक्ष मस्तक से चरणकमलों तक घुमाकर दाहिने भाग में रख दे। तदनन्तर—

ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै छत्रं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै चामरयुगलं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै दर्पणं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै तालवृन्तं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै गन्धं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै पुष्पं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै धूपं कल्पयामि नमः
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै दीपं कल्पयामि नमः

नैवेद्यार्पणम्—

तत्पश्चात् नैवेद्य अर्पित करे। यथा—देवी के समक्ष अपनी दाहिनी ओर चतुरस्रमण्डल बनाकर वहाँ आधार पर नैवेद्य रखे और उसे मूलमन्त्र से प्रोक्षित तथा गन्ध-पुष्प से अर्चन करके 'वं' बीज सहित धेनुमुद्रा द्वारा अमृतीकृत करके मूलमन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित कर आपोशन दे।

ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै नैवेद्यं कल्पयामि नमः।
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै पानीयं कल्पयामि नमः।
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै उत्तरापोशनं कल्पयामि नमः।
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै हस्तप्रक्षालनं कल्पयामि नमः।
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै मुखशुद्धिजलं कल्पयामि नमः।
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै आचमनीयं कल्पयामि नमः।
ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै ताम्बूलं कल्पयामि नमः।

इसके अनन्तर मुद्रा प्रदर्शित करे। यथा—

१- पाश, २- अङ्कुश, ३- अभय, ४- वर, ५- पुस्तक, ६- ज्ञान तथा ७- योनि।

इसी प्रकार निम्नलिखित पाँच मुद्राएँ भी प्रदर्शित करे ।

१- क्षोभणी, २- द्राविणी, ३- आकर्षिणी, ४- वशिनी और ५- आह्लादिनी ।

(ये मुद्राएँ योनिमुद्रा से पाँच स्थानों–१- हृदय, २- मुख, ३- भ्रूमध्य, ४- ललाट और ५- ब्रह्मरन्ध्र के स्पर्श करने से सम्पन्न होती है ।)

इसके पश्चात् परिवारार्चन की आज्ञा माँग कर पूजन करें–

यथा– संविन्मये परे देवि, परामृतचरुप्रिये ।
अनुज्ञां देहि देवेशि, परिवारार्चनाय मे ॥

(ऐसी प्रार्थना करके) बिन्दु में–

आवरण-पूजन

ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इससे तीन बार पूजन और तर्पण करे। तदनन्तर षट्कोण के मध्य में देवी के अग्र-भाग से दक्षिणावर्त क्रम से हृल्लेखादि पाँच शक्तियों की पूजा करे ।

हृल्लेखादि-पञ्च-शक्ति-पूजनम्

यथा–

षट्कोणमध्ये ह्रीं ओं हृल्लेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
देव्यग्रे ह्रीं ऐं गगना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
देवीदक्षिणे ह्रीं उं रक्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
देव्युत्तरे ह्रीं इं करालिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
देवीपृष्ठे ह्रीं अं महोच्छुष्मा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

षडङ्ग-पूजन–

विन्दोराग्नेय कोणे ह्रीं ह्रां हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

विन्दोईशानकोणे ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

विन्दो नैऋत्यकोणे ह्लीं ह्रूं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

विन्दो वायुकोणे ह्लीं ह्रैं कवचाय हुम् कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

विन्दो मध्यकोणे ह्लीं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चतुर्दिक्षु ह्लीं ह्रः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

गुरुमण्डपपूजनम्—

वहीं विन्दु के ऊपर तीन रेखाओं की भावना करके 'गुरुमण्डल' का पूजन करे।

ह्लीं दिव्यौघगुरुपङ्क्तये नमः दिव्यौघ गुरुपङ्क्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्लीं सिद्धौघगुरुपङ्क्तये नमः सिद्धौघ गुरुपङ्क्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्लीं मानवौघगुरुपङ्क्तये नमः मानवौघ गुरुपङ्क्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्लीं (गुरुपादुकामुच्चार्य) परमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ परमेष्ठिगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्लीं परमगुरवे नमः अमुकानन्दनाथ परमगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्लीं गुरवे नमः अमुकानन्दनाथगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

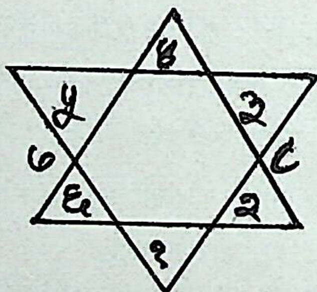
अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षडङ्गावरणार्चनम्॥

शङ्ख के जल से देवी के वामहस्त में समर्पण करके योनिमुद्रा द्वारा प्रणाम करे।

मिथुनाष्टक-पूजनम्

'ह्रीं श्रीषट्कोणचक्राय नमः'

इससे पुष्पाञ्जलि देकर देवी के अग्रकोण तथा वामावर्त-क्रम से पूजन करे—



१- ह्रीं गायत्रीसहित ब्रह्म—श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२- ह्रीं सावित्रीसहित विष्णु—श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३- ह्रीं सरस्वतीसहित रुद्र—श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४- ह्रीं लक्ष्मीसहित धनपति—श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५- ह्रीं रतिसहित काम—श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
६- ह्रीं पुष्टिसहितगणपति—श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इस प्रकार मिथुनषट्क का अर्चन करके षट्कोण के दक्षिण और वामभाग में क्रमशः—

७- ह्रीं वसुधारासहित शङ्खनिधि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८- ह्रीं वसुमतीसहित पद्मनिधि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्रीं एता मिथुनाष्टक-देवताः षट्कोणचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इससे पुष्पाञ्जलि देकर)—

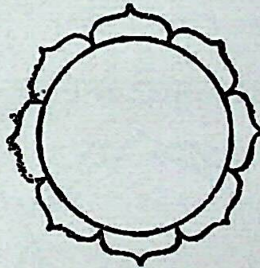
अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं मिथुनाष्टकपूजनम् ॥

इसके द्वारा सामान्यार्घ्य के जल से देवी के वामहस्त में पूजा समर्पित करके–

ह्रीं मिथुनाष्टकसहितायै श्रीभुवनेश्वर्यै नमः ।

इससे योनिमुद्रा दिखाकर प्रणाम करे ।

अनङ्गकुसुमाद्यष्टकपूजनम्



अष्टदल कमल में–

'ह्रीं अष्टदलकमलाय नमः'

इससे पुष्पाञ्जलि देकर देवी के अग्रदल से आरम्भ कर दक्षिणावर्तक्रम से पूजन करे । यथा–

ह्रीं अनङ्गकुसुमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं अनङ्गकुसुमातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं अनङ्गमदनातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं भुवनपालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं गगनवेगा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं शशिरेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं गगनरेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ह्रीं एता अनङ्गकुसुमाद्या देवता अष्टदलकमले समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इससे पुष्पाञ्जलि देकर)–

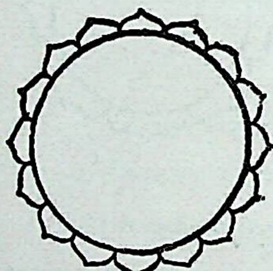
ह्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पयेऽनङ्गकुसुमादि-समर्चनम् ॥

इसके द्वारा सामान्यार्घ्य के जल से देवी के वामहस्त में पूजा समर्पित करके–

ह्रीं अनङ्गकुसुमादि-सहितायै श्रीभुवनेश्वर्यै नमः ।

इससे योनिमुद्रा दिखाकर प्रणाम करे ।

षोडशकमलदेवता-पूजनम्



षोडशदल में देवी के अग्रदल से प्रदक्षिणक्रम में–

ह्रीं कराली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं विकराली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं उमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं सरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं श्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं दुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं उषा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ह्रीं श्रुति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ह्रीं स्मृति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं धृति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं श्रद्धा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं मेधा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं मति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं कान्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं आर्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

तथा षोडशदलों के बाहर सन्धियों में—

ह्रीं आं ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं ईं माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं ऊं कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं ॠं वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं ॡं वाराही श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं ऐं इन्द्राणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं औं चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं अः महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

और षोडशदल तथा चतुरस्र के अन्तरालवर्ती आठ दिशाओं में देवी के अग्रभाग से आरम्भ करके—

ह्रीं अनङ्गरूपा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं अनङ्गमदनातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं भुवनवेगा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं भुवनपालिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं सर्वशिशिरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं अनङ्गदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ह्रीं अनङ्गमेखला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

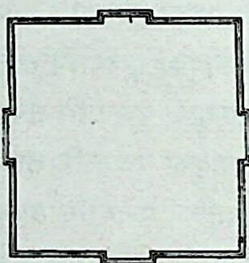
ह्रीं एताः कराल्याद्या देवताः षोडशदलकमले समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (इससे पुष्पाञ्जलि देकर)–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षोडशाब्ज-समर्चनम्॥

इसके द्वारा पूर्ववत् पूजा समर्पित करके

ह्रीं कराल्यादिसहितायै श्रीभुवनेश्वर्यै नमः। इससे योनिमुद्रा दिखाकर प्रणाम करे।

चतुरस्र देवतापूजनम्



ह्रीं चतुरस्रदेवताभ्यो नमः।

इससे पुष्पाञ्जलि देवें

१- दिक्पालदेवतापूजनम्

(पूर्व में) ह्रीं लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नमः, इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(आग्नेय में) ह्रीं रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नमः, अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(दक्षिण में) ह्रीं टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः, यम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(नैर्ऋत्य में) ह्रीं क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय सपरिवाराय नमः, निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(पश्चिम में) ह्लीं वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकर-वाहनाय सपरिवाराय नमः, वरुण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(वायव्य में) ह्लीं यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नमः, वायु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(उत्तर में) ह्लीं सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्व-वाहनाय सपरिवाराय नमः, सोम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(ईशानकोण में) ह्लीं ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नमः, इस प्रकार पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि की पूजा करके ईशान श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(पूर्व और ईशान के मध्य में) ह्लीं ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सपरिवाराय नमः, ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(नैर्ऋति और वरुण के मध्य में) ह्लीं श्रीं विष्णवे चक्रहस्ताय नगाधिपतये गरुडवाहनाय सपरिवाराय नमः, विष्णु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ह्लीं ॐ वास्तुपतये ब्रह्मणे नमः, इससे वास्तु देवता का पूजन करे।

द्वितीय रेखा में	तृतीय रेखा में
२-(आयुध-पूजनम्)	३-(वाहन-पूजनम्)
ह्लीं वज्राय नमः	ह्लीं ऐरावताय नमः
ह्लीं शक्तये नमः	ह्लीं अजाय नमः
ह्लीं दण्डाय नमः	ह्लीं महिषाय नमः
ह्लीं खड्गाय नमः	ह्लीं नराय नमः
ह्लीं पाशाय नमः	ह्लीं मकराय नमः
ह्लीं ध्वजाय नमः	ह्लीं रुरवे नमः
ह्लीं शङ्खाय नमः	ह्लीं अश्वाय नमः
ह्लीं त्रिशूलाय नमः	ह्लीं वृषभाय नमः
ह्लीं पद्माय नमः	ह्लीं हंसाय नमः
ह्लीं चक्राय नमः	ह्लीं गरुडाय नमः

एता इन्द्रादि दशदिग्पालाश्चतुरस्रत्रये समुद्राः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (इससे पुष्पाञ्जलि अर्पित करे)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरस्र-समर्चनम्॥

इसके द्वारा सामान्यार्घ्य के जल से देवी के वाम हस्त में पूजा समर्पित करे तथा–

ह्रीं इन्द्रादि दशदिग्पालसहितायै श्रीभुवनेश्वर्यै नमः।

इससे योनिमुद्रा दिखाकर प्रणाम करे।

इसके पश्चात् यथावसर श्रीभुवनेश्वरी-शत-नाम सहस्रनामादि से भी अर्चन करे।

धूपम्–

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

ह्रीं साङ्गायै सायुधयै सवाहनायै सपरिवरायै श्रीभुवनेश्वर्यै धूपमाघ्रापयामि नमः।

इससे धूप समर्पित करे।

दीपः–

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीभुवनेश्वर्यै दीपं दर्शयामि नमः।

इससे दीप समर्पित करे।

इसके पश्चात् पूर्ववत् मुद्राएँ दिखाये।

महानैवेद्यम्–

श्री भगवती के समक्ष सामान्यार्घ्य के जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहां आधार पर सोने, चांदी, कांस्य आदि के पात्र में भक्ष्य और भोज्य, चोस्य तथा लेह्य रूप उत्तम गोघृत से बने रसपूर्ण व्यञ्जन एवं दूध, दही, मधु आदि से युक्त अथवा यथा सम्भव नैवेद्य सामग्री रखकर उसका मूलमन्त्र से निरीक्षण करे और

'ह्रीं एं ह्रः अस्त्राय फट्' इस मन्त्र से उसका प्रोक्षण करे। तदनन्तर-'ह्रीं जूं सः वौषट्' मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित जल से पुनः प्रोक्षित करे तथा ह्रीं मन्त्र से चक्रमुद्रा दिखाकर–

ह्रीं 'यं' इस वायुबीज द्वारा अधोमुख वाम हस्त से सात बार जप करते हुए उसमें स्थित दोषों का शोधन करे

रं बीज से पूर्ववत् दोषों का दहन करे।

बं बीज से अमृतीकरण धेनुमुद्रा से करे।

मूलमन्त्र से सात बार अभिमन्त्रण करे।

तदनन्तर-भगवती को पाद्य, अर्घ्य आचमनीय देकर तीन बार पूजन करके दाहिने हाथ में छोटे पात्र में विशेषार्घ्य लेकर वामाङ्गुष्ठ से नैवेद्य को स्पर्श करते हुए बोले

'ह्रीं'–साङ्गायै साधुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीभुवनेश्वर्यै नैवेद्यं कल्पयामि नमः।

विशेषार्घ्यलघुपात्र नैवेद्य के पास रख दे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे–

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ॥
पञ्चधा षड्रसोपेतं ग्रहाण परमेश्वरि ॥
शर्करापायसापूप-घृतव्यञ्जन-संयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम् ।

ह्रीं अमृतोपस्तरणमसि-इस मन्त्र से देवी को आपोशन देकर वामकर से ग्रासमुद्रा दक्षिण हस्त से पाँच प्राणाहुति की कल्पना करे।

ह्रीं प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा ।

ह्रीं आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीभुवनेश्वरी तृप्यतु
ह्रीं विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीभुवनेश्वरी तृप्यतु
ह्रीं शिवतत्त्वव्यापिनी श्रीभुवनेश्वरी तृप्यतु
ह्रीं सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीभुवनेश्वरी तृप्यतु

इन मन्त्रों से सामान्य अर्घ्य का थोड़ा जल छोड़े ।

चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेक-भक्षणम् ।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत् ॥

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सत्त्वोषधीः ।
मधुनस्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवं रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥
मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

इन मन्त्रों से पुष्पाञ्जलि देते हुए नैवेद्य समर्पण की भावना करे।

अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम् ।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतम्ब पीयताम् ॥

नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अमृतानन्दसम्पूर्णं गृहाण जन्ममुत्तमम् ॥

ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै अमृतपानीयं समर्पयामि ।

इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए जलपात्र को भगवती के सम्मुख रखे ।

इसके पश्चात् वस्त्र से आवरण करके भगवती भोजन कर रही है ऐसी भावना करे तथा नीचे लिखे हुए मन्त्रों का उच्चारण करे ।

ब्रह्मेशाद्यै सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद्,
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः ।
नर्मक्रीडा-प्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्,
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री ॥

इस प्रकार भावना करे कि भगवती तृप्त हो गई ।

(ह्रीं अमृतापिधानमसि)इससे देवी को उत्तरापोशन देकर हस्त-प्रक्षालन मुख प्रक्षालन, आचमनीयं, देवे ।

ह्रीं वनस्पति दैवत्याय ताम्बूलाय नमः । इससे सामान्य अर्घ्य जल से ताम्बूल का प्रोक्षण करके ताम्बूल समर्पण करे ।

तमाल-दल-कर्पूर-पूगभागसमन्वितम् ।
एलापत्रं सुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ताम्बूलवल्लिदलनिर्जितहेमवर्णं-स्वर्णाक्तपूगफलमौत्तिक-चूर्णयुक्तम् ।
रत्नस्थली–स्थितमिदं खदिरेण सार्धं ताम्बूलमम्ब !वदनाम्बुरुहे गृहाण

ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्री भुवनेश्वर्यै मुखमण्डनार्थं ताम्बूलं कल्पयामि नमः ।

अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,
त्रिभुवन-कमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः ॥
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां
जननि ! कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि ॥

इस प्रकार इन श्लोकों को पढ़ते हुए भगवती के लिए दक्षिणा समर्पण की भावना करे ।

नीराजनम्

रजतादि पात्र में कुङ्कुम से अष्टदल कमल लिखकर उसकी कार्णिकाओं में स्वर्ण रजत या ताम्र दीपक रखकर और कर्पूर जला कर पुष्पाक्षतों से पूजन करके भगवती की आरती करे ।

अन्तस्तेजो बहिस्तेजः एकीकृत्यामितप्रभम् ।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥
रत्नालङ्कृत-हेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै-
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः ।
आताम्रज्वलदुज्ज्वलज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा,
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः ॥

महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्,
डमरु-सदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान्।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै-
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्त्तिकं ते॥

ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीभुवनेश्वर्यै कर्पूरनिराजनं कल्पयामि नमः। इससे सामान्यार्घ्य जल से समर्पण करे।

पुष्पाञ्जलि–

हस्त में पुष्प लेकर

तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदं,
सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः।
क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणतिरम्ब तस्यै सदा,
शिवङ्कारि शिते परे शिवपुरन्ध्रि तुभ्यं नमः॥
त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा,
त्वामायुरपरं त्वामाभरणमात्मनस्त्वं कला।
त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिलायतिस्त्वं गुरुः,
प्रसीद परमेश्वरि प्रणति पात्रि तुभ्यं नमः॥

ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीभुवनेश्वर्यै पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः॥

प्रदक्षिणा–

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति।
तां सर्व पापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥

इससे भगवती की एक प्रदक्षिणा करे।

नमस्कार–

रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानी-पदपङ्कजाभ्याम्॥
कञ्जासनादि-सुरवृन्दलसत्किरीट-कोटिप्रघर्षण-समुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे।

त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं, दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन ॥
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतं समानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं शम्भो कलत्रममितां श्रियमातनोतु ॥
महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं, स्वतो न्यस्तविन्दुं स्वयं न्यस्तहार्दम् ।
भवद्वक्त्र-वक्षोज-गुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद् भावयेत् स त्वमेव ॥
तथान्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय विन्दुत्रयं ते ।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः ॥
मिहिरविन्दुमुखीं तदधो लसच्छशि-हुताशन-विन्दुयुगस्तनीम् ॥
हसपरार्धकलारचनास्पदां भजत नित्यमिमां परदेवताम् ॥
गुरुद्वारा निर्दिष्ट कामकला का ध्यान करे।

होम–

होम करना हो तो होम प्रकरण में लिखित विधि से करे।

बलिदान विधि–

देवी के दक्षिण भाग में जल से त्रिकोण वृत्त-चतुरस्र मण्डल बनाकर (ह्रीं व्यापकमण्डलाय नमः) इससे पुष्पाक्षत से मण्डल की पूजा करे। उसके ऊपर ताम्रपात्र में नैवेद्य वस्तुओं से थोड़ा-थोड़ा डालकर और जल, विशेषार्घ्य, पुष्प डालकर रखे।

"ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुँ फट् स्वाहा"।

तीनवार इस मन्त्र का उच्चारण करके वामहस्त से तत्त्वमुद्रा बनाकर उस पर दक्षिण हस्त से जल देकर वाम पैर की एड़ी का भूतल पर तीन आघात और हाथ से तीन ताल ऊपर मुखकर के वाणमुद्रा के द्वारा भूतों ने बलि ग्रहण कर ली यह भावना करके प्रणाम करे।

और हाथ पैर धोकर आचमन करे मूलमन्त्र का न्यास ध्यान करके यथाशक्ति जप करे। एवं विविध स्तोत्रों से पराम्बा का स्तवन करे।



प्रकृतिस्तोत्रम्

प्रसीद प्रपञ्चस्वरूपे प्रधाने प्रकृत्यात्मिके प्राणिनां प्राणसंज्ञे ।
प्रणोतुं प्रभो प्रारभे प्राञ्जलिस्त्वां प्रकृत्याप्रतर्क्ये प्रकामप्रवृत्ते ॥ १ ॥

स्तुतिर्वाक्यबद्धा पदात्मैव वाक्यं पदं त्वक्षरात्माक्षरं त्वं महेशि ।
ध्रुवं त्वां त्वमेवाक्षरैस्त्वन्मयैस्तोष्यसि त्वन्मयी वाक्प्रवृत्तिर्यतः स्यात् ॥ २ ॥

अजाधोक्षजत्रीक्षणाश्चापि रूपं परं नाभिजानन्ति मायामयं ते ।
स्तुवन्तीशि तां त्वाममी स्थूलरूपां तदेतावदम्बेह युक्तं ममापि ॥ ३ ॥

नमस्ते समस्तेशि विन्दुस्वरूपे नमस्ते रवत्वेन तत्त्वाभिधाने ।
नमस्ते महत्त्वं प्रपन्ने प्रधाने नमस्ते त्वहङ्कारतत्त्वस्वरूपे ॥ ४ ॥

नमः शब्दरूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्शरूपे नमो वायुरूपे ।
नमो रूपतेजोरसाम्भः स्वरूपे नमस्तेस्तु गन्धात्मिके भूस्वरूपे ॥ ५ ॥

नमः श्रोत्रचर्माक्षिजिह्वास्थनासास्यवाक्पाणिपत्पायुसोपस्थरूपे ।
मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तस्वरूपे विरूपे नमस्ते विभो विश्वरूपे ॥ ६ ॥

रवित्वेनभूत्वान्तरात्मा दधासि प्रजाश्चन्द्रमस्त्वेन पुष्णासि भूयः ।
दहस्यग्निमूर्तिर्वहन्त्याहुतिं वा महादेवि तेजस्त्रयं त्वत्त एव ॥ ७ ॥

चतुर्वक्त्रयुक्ता लसद्धंसवाहा रजःसंश्रिता ब्रह्मसंज्ञां दधाना ।
जगत्सृष्टिकार्या जगन्मातृभूते परं त्वत्पदं ध्यायसीशि त्वमेव ॥ ८ ॥

विराजत्किरीटा लसच्चक्रशङ्खा वहन्ती च नारायणाख्यां जगत्सु ।
गुणं सत्त्वमास्थाय विश्वस्थितिं यः करोतीह सोंऽशोपि देवि त्वमेव ॥ ९ ॥

जटाबद्धचन्द्राहिगङ्गा त्रिनेत्रा जगत्संहरन्ती च कल्पावसाने ।
तमः संश्रिता रुद्रसंज्ञां दधाना वहन्ती परश्वक्षमाले विभासि ॥ १० ॥

सचिन्ताक्षमाला सुधाकुम्भलेखाधरा त्रीक्षणार्द्धेन्दुराजत्कपर्दा ।
सुशुक्लांशुकाकल्पदेहा सरस्वत्यपि त्वन्मयैवेशि वाचामधीशा ॥ ११ ॥

लसच्छङ्खचक्रा चलत्खड्गभीमा नदत्सिंहवाहा ज्वलत्तुङ्गमौलिः ।
द्रवद्दैत्यवर्गा स्तुवत्सिद्धसङ्घा त्वमेवेशि दुर्गापि सर्गादिहीने ॥ १२ ॥

पुरारातिदेहार्धभागा भवानी गिरीन्द्रात्मजात्वेन यैषा विभाति ।
महायोगिवन्द्या महेशा सुनाथा महेश्यम्बिका तत्त्वतस्त्वन्मयैव ॥ १३ ॥

लसकौस्तुभोद्भासिते व्योमनीले वसन्तीं च वक्षःस्थले कैटभारेः ।
जगद्वल्लभां सर्वलोकैकनाथां श्रियं तामहं देव्यहं त्वामवैमि ॥ १४ ॥

अजाद्रीड्गुहाब्जाक्षपोत्रीन्द्रकाणाम् महाभैरवस्यापि चिह्नं वहन्त्यः ।
विभो मातरः सप्त तद्रूपरूपाः स्फुरन्त्यस्त्वदंशा महादेवि ताश्च ॥ १५ ॥

समुद्यद्दिवाकृत्सहस्राभभासा सदा सन्तताशेषविश्वावकाशे ।
लसन्मौलिबद्धेन्दुलेखे सपाशाङ्कुशाभीत्यभीष्टात्तहस्ते नमस्ते ॥ १६ ॥

प्रभाकीर्तिकान्ती दिवारात्रिसन्ध्याः क्रियाशा तमिस्रा क्षुधाबुद्धिमेधाः ।
धृतिर्वाङ्मतिः सन्ततिः श्रीश्च भक्तिस्त्वमेवेशि येऽन्ये च शक्तिप्रभेदाः ॥ १७ ।

हरे बिन्दुनादैः सशक्त्याख्यशान्तैर्नमस्तेस्तु भेदप्रभिन्नैरभिन्ने ।
सदा सप्तपाताललोकाचलाब्धिग्रहद्वीपधातुस्वरादिस्वरूपे ॥ १८ ॥

नमस्ते समस्ते समस्तस्वरूपे समस्तेषु वस्तुष्वनुस्यूतशक्ते ।
श्रितस्थूलसूक्ष्मस्वरूपे महेशि स्मृते बोधरूपेप्यबोधस्वरूपे ॥ १९ ॥

मनोवृत्तिरस्तु स्मृतिस्ते समस्ता तथा वाक्प्रवृत्तिः स्तुतिः स्यान्महेशि ।
शरीरप्रवृत्तिः प्रणामक्रिया स्यात् प्रसीद क्षमस्व प्रभो सन्ततं मे ॥ २० ॥

हृल्लेखाजपविधिमर्चनाविशेषानेतास्तां स्तुतिमपि नित्यमादरेण ।
योऽभ्यस्येत्स खलु परां श्रियं च गत्वा शुद्धं तद् व्रजति पदं परस्य धाम्नः ॥ २१ ॥

इति हृल्लेखाविहितो विधिरुक्तः संग्रहेण सकलोऽयम् ।
योऽस्मिन्नियतमना मन्त्री योगी स्यात् स एव भोगी च ॥ २२ ॥

इति—आद्यशङ्कराचार्यविरचितं प्रकृतिस्तोत्रम् ॥



श्रीः

सकलागमाचार्यचक्रवर्त्तिश्रीपृथ्वीधराचार्यविरचितम्

भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्

ऐंदव्या कलयावतंसितशिरो विस्तारि नादात्मकं
तद्रूपं जननि स्मरामि परमं सन्मात्रमेकं तव ।
यत्रोदेति पराभिधा भगवती भासां हि तासां पदं
पश्यन्तीमनुमध्यमा विहरति स्वैरं च सा वैखरी ॥ १ ॥
आदिक्षान्तविलासलालसतया तासां तुरीया तु या
क्रोडीकृत्य जगत्त्रयं विजयते वेदादिविद्यामयी ।
तां वाचं मयि संप्रसादय सुधाकल्लोलकोलाहल-
क्रीडाकर्णनवर्णनीयकवितासाम्राज्यसिद्धिप्रदाम् ॥ २ ॥
कल्पादौ कमलासनोऽपि कलया विद्धः कयाचित् किल
त्वां ध्यात्वाऽङ्कुरयाञ्चकार चतुरो वेदांश्च विद्याश्च ताः ।
तन्मातर्ललिते प्रसीद सरलं सारस्वतं देहि मे
यस्यामोदमुदीरयन्ति पुलकैरन्तर्गता देवताः ॥ ३ ॥
मातर्देहभृतामहो धृतिमयी नादैकरेखामयी
सा त्वं प्राणमयी हुताशनमयी बिन्दुप्रतिष्ठामयी ।
तेन त्वां भुवनेश्वरीं विजयिनीं ध्यायामि जायां विभो-
स्त्वत्कारुण्यविकाश (सि) पुण्यमतयः खेलन्तु मे सूक्तयः ॥ ४॥
त्वामश्वत्थदलानुकारमधुरामादारबद्धोदरां
संसेवे भुवनेश्वरीमनुदिनं वाग्देवतामेव ताम् ।

तन्मे शारदकौमुदीपरिचयामोदं सुधासागर-
स्वैरोज्जागरवीचिविभ्रमजितो दीव्यन्तु दिव्या गिरः ॥ ५ ॥
लेखप्रस्तुतवेद्यवस्तुसुरभिश्रीपुस्तकोत्तंसितो
मातः स्वस्तिकृदस्तु मे तव करो वामोऽभिरामः श्रिया ।
सद्यो विद्रुमकन्दलीसरलतासन्दोहसान्द्राङ्गुलि-
र्मुद्रां बोधमयीं दधत् तदपरोप्यास्तामपास्तभ्रमः ॥ ६ ॥
मातः पातकजालमूलदलनक्रीडाकठोरा दृशः
कारुण्यामृतकोमलास्तव मयि स्फूर्ज्जन्तु सिद्ध्यूर्ज्जिताः ।
आभिः स्वाभिमतप्रबन्धलहरीसाकूतकौतूहला-
भ्रान्तस्वान्तचतुर्मुखोचितगुणोद्गारां करिष्ये गिरम् ॥ ७ ॥
त्वामाधारचतुर्दलाम्बुजगतां वाग्बीजगर्भे यजे
प्रत्यावृत्तिभिरादिभिः कुसुमितां मायालतामुन्नताम् ।
चूडामूलपवित्रपत्रकमलप्रेङ्खोलखेलत्सुधा-
कल्लोलाकुलचक्रचङ्क्रमचमत्कारैकलोकोत्तराम् ॥ ८ ॥
सोऽहं त्वत्करुणाकटाक्षशरणः पञ्चाध्वसंचारतः
प्रत्याहृत्य मनो वसामि रसना रङ्गं ममालिङ्गतु ।
श्रीसर्वज्ञविभूषणीकृतकलानिष्यन्दमानामृत-
स्वच्छन्दस्फटिकाद्रिसान्द्रितपयः शोभावती भारती ॥ ९ ॥
मातर्मातृकया विदर्भितमिदं गर्भीकृतानाहत-
स्वच्छन्दध्वनिपेयमध्वनि रतं चन्द्रार्कनिद्रागिरौ ।
संसेवे विपरीतरीतिरचनोच्चारादकारावधि
स्वाधीनामृतसिन्धुबन्धुरमहो मायामयं ते महः ॥ १० ॥
तस्मान्नन्दनचारुचन्दनतरुच्छायासु पुष्पासव-
स्वैरास्वादनमोदमानमनसामुद्दामवामभ्रुवाम् ।
वीणाभङ्गितरङ्गितङ्गितस्वरचमत्कारोपि सारोज्झितो
येन स्यादिह देहि मे तदभितः संचारि सारस्वतम् ॥ ११ ॥

आधारे हृदये शिखापरिसरे संधाय मेधामयीं
त्रेधा बीजतनूमनूनकरुणापीयूषकल्लोलिनीम् ।
त्वां मातर्जपतो निरङ्कुशनिजाद्वैतामृतास्वादन-
प्रज्ञाम्भश्चुलुकैः स्फुरन्तु पुलकैरङ्गानि तुङ्गानि मे ॥ १२ ॥

वाणीबीजमिदं जपामि परमं तत्कामराजाभिधं
मातः सान्तपरं विसर्गसहितौकारोत्तरं तेन मे ।
दीर्घान्दोलितमौलिकीलितमणिप्रारब्धनीराजनै-
र्धीरैः पीतरसा निरन्तरमसौ वाग्जृम्भतामद्भुता ॥ १३ ॥

चूडाचन्द्रकलानिरन्तरगलत्पीयूषबिन्दुश्रिया
सन्देहोचितमक्षसूत्रवलयं या बिभ्रती निर्भरम् ।
अन्तर्मन्त्रमयं स्वमेव जपसि प्रत्यक्षवृत्त्यक्षरं
सा त्त्वं दक्षिणपाणिनाम्ब वितर श्रेयांसि भूयांसि मे ॥ १४ ॥

बद्ध्वा स्वस्तिकमासनं सितरुचिच्छेदावदातच्छवि-
श्रेणीश्रीसुभगं भविष्णु सततं व्याजृम्भमाणेऽम्बुजे ।
दीव्यन्तीमधिवामजानुरुचिरं न्यस्तेन हस्तेन तां
नित्यं पुस्तकधारणप्रणयिनीं सेवे गिरामीश्वरीम् ॥ १५ ॥

तन्मे विश्वपथीनपीनविलसन्निःसीमसारस्वत-
स्रोतोवीचिविचित्रभङ्गिसुभगा विभ्राजतां भारती ।
यामाकर्ण्य विघूर्णमानमनसः प्रेङ्खोलितैर्मौलिभि-
र्मीलद्भिर्नयनाञ्चलैः सुमनसो निन्देयुरिन्दोःकलाम् ॥ १६ ॥

आदौ वाग्भवमिन्दुबिन्दुमधुरं ज्ञान्ते च कामात्मकं
योगान्ते कषयोस्तृतीयमिति ते बीजत्रयं ध्यायता ।
सार्द्धं मातृकया विलोमविषमं संधाय बन्धच्छिदा
वाचान्तर्गतया महेश्वरि मया मात्राशतं जप्यते ॥ १७ ॥

तत्सारस्वतसार्वभौमपदवी सद्यो मम द्योततां
यत्राज्ञाविहितैर्महाकविशतैः स्फीतां गिरं चुम्बताम् ।

चैत्रोन्मीलितकेलिकोकिलकुहूकारावताराञ्चित-
श्लाघासिञ्चितपञ्चमश्रुतिसमाहारोपि भारोपमः ॥ १८ ॥
वाग्बीजं भुवनेश्वरीं वद वदेत्युच्चार्य वाग्वादिनीं
स्वाहा वर्णविशीर्णपातकभरां ध्यायामि नित्यां गिरम् ।
वीणापुस्तकमक्षसूत्रवलयं व्याजृम्भमम्भोरुहं
बिभ्राणामरुणांशुभिः करतलैराविर्भवद्विभ्रमाम् ॥ १९ ॥
तन्मातः कृपया तरङ्गयतरां विद्याधिपत्यं मयि
ज्योत्स्नासौरभचौरकीर्तिकवितासेव्यैकसिंहासनम् ।
कालाग्न्यादिशिवावसानभवनप्राग्भारकुक्षिंभरि-
प्रज्ञाम्भःपरिपाकपीवरपराऽनन्दप्रतिष्ठास्पदम् ॥ २० ॥
लेखाभिस्तुहिनद्युतेरिव कृतं वाग्बीजमुच्चैः स्फुरत्
ताराकारकरालबिन्दुपरितो माया त्रिधा वेष्टितम् ।
पूर्णेन्दोरुदरे तदेतदखिलं पीयूषगौराक्षरं
स्रोतः संभ्रमसंभृतं स्मरति यो जिह्वाञ्चले निश्चलः ॥ २१ ॥
तस्य त्वत्करुणाकटाक्षकणिकासंक्रान्तिमात्रादपि
स्वान्ते शान्तिमुपैति दीर्घजडता जाग्रद्विकाराग्रणीः ।
तस्मादाशु जगत्त्रयाद्भुतरसाद्वैतप्रतीतिप्रदं
सौरभ्यं परमभ्युदेति वदनाम्भोजे गिरां विभ्रमैः ॥ २२ ॥
आद्यो मौलिरथापरो मुखमिई नेत्रे च कर्णावुऊ
नासा वंशपुटे ऋॠ तदनुजौ वर्णौ कपोलद्वयम् ।
दन्ताश्चोर्ध्वमधस्तथौष्ठयुगलं सन्ध्यक्षराणि क्रमात्
जिह्वामूलमुदग्रबन्दुरपि च ग्रीवा विसर्गी स्वरः ॥ २३ ॥
कादिर्दक्षिणतो भुजस्तदितरो वर्गश्च वामो भुज-
ष्टादिस्तादिरनुक्रमेण चरणौ कुक्षिद्वयं ते पफौ ।
वंशः पृष्ठभवोऽथ नाभिहृदये बादित्रयं, धातवो
याद्याः सप्तसमीरणश्च सपरः क्षः क्रोध इत्यम्बिके ॥ २४ ॥

एवं वर्णमयं वपुस्तव शिवे लोकत्रयव्यापकं
योऽहंभावनया भजत्यवयवेष्वारोपितैरक्षरैः ।
मूर्तीभूय दिवावसानकमलाकारैः शिरः शायिभि-
स्तं विद्याः समुपासते करतलैर्दृष्टिप्रसादोत्सुकाः ॥ २५ ॥
ये जानन्ति जपन्ति सन्ततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा
तेषामास्यमुपास्यते मृदुपदन्यासैर्विलासैर्गिराम् ।
किं च क्रीडति भूर्भुवःस्वरभितः श्रीचन्दनस्यन्दिनी
कीर्त्तिः कार्त्तिकरात्रिकैरवसभासौभाग्यशोभाकरी ॥ २६ ॥
मायाबीजविदर्भितं पुनरिदं श्रीकूर्मचक्रोदितं
दीपाम्नायविदो जपन्ति खलु ये तेषां नरेन्द्राः सदा ।
सेवन्ते चरणौ किरीटवलभीविश्रान्तरत्नाङ्कुर-
ज्योत्स्नामेदुरमेदिनीतलरजोमिश्राङ्गरागश्रियः ॥ २७ ॥
श्रीबीजं सकलाक्षरादिषु पुनः क्रोधाक्षरान्ते भवे-
देवं यो भजते च ते तनुमिमां तस्याऽग्रतो जाग्रती ।
लक्ष्मीः सिन्दुरदानगन्धलहरीलोभान्धपुष्पन्धय-
श्रेणीबन्धुरशृङ्खलानियमितेवापैति नैव क्वचित् ॥ २८ ॥
यस्त्वां विद्रुमपल्लवद्रवमयीं लेखामिवालोहिता-
मात्मानं परितः स्फुरात्त्रिवलयां मायामभिध्यायति ।
तस्मै निन्दितचन्दनेन्दुकदलीकान्तारहारस्रजो
निश्वासभ्रमबाष्पदाहगहना मूर्च्छन्ति तास्तास्त्रियः ॥ २९ ॥
मातः श्रीभगमालिनीत्यभिधया दिव्यागमोत्तंसितां
त्वामानन्दमयीमनुस्मरति यस्तं नाम वामभ्रुवः ।
बाहुस्वस्तिकपीडितैःस्तनतटैर्दैन्याञ्चितैश्चाटुभि-
र्नीरन्ध्रैः पुलकांकुलैर्मुकुलितैर्ध्यायन्ति नेत्राञ्चलैः ॥ ३० ॥
यस्त्वां ध्यायति रागसागरतरत्सिन्दूरनौकान्तर-
स्वैरोज्जागरपद्मरागनलिनीपुष्पासनाध्यासिनीम् ।

बालादित्यसपत्नरत्नरुचिरप्रत्यङ्गभूषारुचि-
श्रेणीसम्मिलिताङ्गरागवसनास्तस्य स्मरन्त्यङ्गनाः ॥ ३१ ॥
कर्पूरं कुमुदाकरं कमलिनीपत्रं कलाकौशलं
कूजत्कोकिलकामिनीकुलकुहूकल्लोलकोलाहलम्।
शङ्कन्ते प्रलयानलस्मरमहापस्मारवेगातुराः
कम्पन्ते निपतन्ति हन्त न गिरं मुञ्चन्ति शोचन्ति च ॥ ३२ ॥
श्रीमृत्युञ्जयनामधेयभगवच्चैतन्यचन्द्रात्मिके
ह्रींकारि प्रथमातमांसि दलय त्वं हंससंजीविनि ।
जीवं प्राणविजृम्भमाणहृदयग्रन्थिस्थितं मे कुरु
त्वां सेवे निजबोधलाभरभसा स्वाहाभुजामीश्वरीम् ॥ ३३ ॥
एवं त्वाममृतेश्वरीमनुदिनं राकानिशाकामुक-
स्वान्ते सन्ततभासमानवपुषं साक्षाद्यजन्ते तु ये ।
ते मृत्योः कवलीकृतत्रिभुवनाभोगस्य मौलौ पदं
दत्त्वा भोगमहोदधौ निरवधि क्रीडन्ति तैस्तैः सुखैः ॥ ३४ ॥
जाग्रद्बोधसुधामयूखनिचयैराप्लाव्य सर्वा दिशो
यस्याः कापि कला कलङ्करहिता षट्चक्रमाक्रामति ।
दैन्यध्वान्तविदारणैकचतुरा वाचं परां तन्वती
सा नित्या भुवनेश्वरी विहरतां हंसीव मन्मानसे ॥ ३५ ॥
त्वं मातापितरौ त्वमेव सुहृदस्त्वं भ्रातरस्त्वं सखा
त्वं विद्या त्वमुदारकीर्तिचरितं त्वं भाग्यमत्यद्भुतम् ।
किम्भूयः सकलं त्वमीहितमिति ज्ञात्वा कृपाकोमले
श्रीविश्वेश्वरि संप्रसीद शरणं मातः परं नास्ति मे ॥ ३६ ॥
श्रीसिद्धिनाथ इति कोपि युगे चतुर्थे
प्राविर्बभूव करुणावरुणालयेऽस्मिन् ।
श्रीशम्भुरित्यभिधया स मयि प्रसन्नं
चेतश्चकार सकलागमचक्रवर्त्ती ॥ ३७ ॥

तस्याऽऽज्ञया परिणतान्वयसिद्धविद्या-
भेदास्पदैः स्तुतिपदैर्वचसां विलासैः ।
तस्मादनेन भुवनेश्वरि वेदगर्भे
सद्यः प्रसीद वदने मम सन्निधेहि ॥ ३८ ॥

येषां परं न कुलदैवतमम्बिके त्वं
तेषां गिरा मम गिरो न भवन्तु मिश्राः ।
तैस्तु क्षणं परिचिते विषयेऽपि वासो
मा भूत्कदाचिदपि सन्ततमर्थये त्वाम् ॥ ३९ ॥

श्रीशम्भुनाथ ! करुणाकर ! सिद्धिनाथ !
श्रीसिद्धिनाथ ! करुणाकर ! शम्भुनाथ !
सर्वापराधमलिनेऽपि मयि प्रसन्नं
चेतः कुरुष्व शरणं मम नान्यदस्ति ॥ ४० ॥

इत्थं प्रतिक्षणमुदश्रुविलोचनस्य
पृथ्वीधरस्य पुरतः स्फुटमाविरासीत् ।
दत्त्वा वरं भगवती हृदयं प्रविष्टा
शास्त्रैः स्वयं नवनवैश्च मुखेऽवतीर्णा ॥ ४१ ॥

वाक्सिद्धिमेवमतुलामवलोक्य नाथः
श्रीशम्भुरस्य महतीमपि तां प्रतिष्ठाम् ।
स्वस्मिन् पदे त्रिभुवनागमवन्द्यविद्या-
सिंहासनैकरुचिरे सुचिरं चकार ॥ ४२ ॥

भूमौ शय्या वचसि नियमः कामिनीभ्यो निवृत्तिः
प्रातर्जातीविटपसमिधा दन्तजिह्वाविशुद्धिः ।
पत्रावल्यां मधुरमशनं ब्रह्मवृक्षस्य पुष्पैः
पूजाहोमौ कुसुमवसनालेपनान्युज्ज्वलानि ॥ ४३ ॥

इत्थं मासत्रयमविकलं यो व्रतस्थः प्रभाते
मध्याह्ने वाऽस्तमनसमये कीर्त्तयेदेकचित्तः ।

तस्योल्लासैः सकलभुवनाश्चर्यभूतैः प्रभूतैः
विद्याः सर्वाः सपदि वदने शम्भुनाथप्रसादात् ॥ ४४ ॥
व्रतेन हीनोऽप्यनवाप्तमन्त्रः श्रद्धाविशुद्धोऽनुदिनं पठेद्यः ।
तस्यापि वर्षादनवद्यसद्यःकवित्त्वहृद्याः प्रभवन्ति विद्याः ॥ ४५ ॥
कोप्यचिन्त्यः प्रभावोऽस्य स्तोत्रस्य प्रत्ययावहः ।
श्रीशम्भोराज्ञया सर्वाः सिद्धयोऽस्मिन् प्रतिष्ठिताः ॥ ४६ ॥

इतिश्रीसकलागमाचार्यचक्रवर्तिश्रीपृथ्वीधराचार्यविरचितं
श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



क्षमाप्रार्थना

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥
जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना,
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा,
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥
पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्बान्धवजनः,
प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम् ।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे,
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
दृशा द्राधीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा,
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता,
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥

इस प्रकार सहस्रनामादि स्तोत्रों से भी श्रीमाता का स्तवन करे ।

सुवासिनीपूजनम्

यथा—प्राङ्निमन्त्रितां गौरीरूपिणीं दीक्षितां सुवासिनीं प्रक्षालित-पादामासन उपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तदा 'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः' इमां शक्तिं पवित्री कुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा, इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वकं सामान्यसलिलेन शक्तिं त्रिः सम्प्रोक्ष्य—

३ ॐ शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु प्रणश्यत्वशुभञ्च यत् ।
यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ।

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृल्लेखां जपेत् । अथ तां देवतारूपां विभाव्य ह्रीं ऐं क्लीं सौः शक्त्यै अमुकं समर्पयामि' इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमचन्दनपट्टवासः पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलानि वसनाभरणानि च दद्यात् ।

(पश्चात्तां भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तर्प्य विसृजेत् ।)

तत्त्वशोधनम्

(सन्निहिते गुरौ गन्धमाल्यादिभिः सम्पूज्य पात्राणि समर्पयेत्)।

असन्निहिते च स्वशिरसि गुरुपात्रामृतेन गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुत्रयं यजेत् । समुपस्थितसाधकेभ्यः पात्राणि दत्त्वा पश्चात् तत्त्वशोधनं विदध्यात्) ।

ह्रीं प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुः—श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपाद-पायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूम्यात्मना अं-अः ह्रीं आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । आत्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।

ह्रीं मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना कं""मं ह्रीं विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । अन्तरात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।

ह्रीं शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं......क्षं शिवतत्त्वेन कार्मणमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। परमात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

ह्रीं प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपाद-पायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमायाकलाऽ-विद्यारागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना अं आं......ळं क्षं (मूलम्) सर्वतत्त्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। ज्ञानात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

ह्रीं पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते॥

ह्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा। इति।

(गुरौ सन्निहिते होष्यामि इति सम्प्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्ध्वा) चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्। ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान् निक्षिप्य—

ह्रीं देवनाथ गुरो स्वामिन्, देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो! पात्रं पूर्णतरं कुरु॥

(इति गुरवे समर्पयेत्। असन्निहिते गुरो स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रमण्डले स्थापयेत्)।

पूजासमर्पणम्

(ततः सामान्यार्घ्योदकात् किञ्चिदादाय—)

साधु वाऽसाधु वा कर्म, यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि! गृहाणाराधनं मम॥

(इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि त्रिः-परिभ्राम्य तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानामात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् । ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य)

देवतोद्वासनम्

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि, यन्मयाऽऽचरितं शिवे ।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा, क्षमस्व परमेश्वरि ॥ (इति क्षमाप्य,
रश्मिरूपा महादेव्यः पूजिता याश्च देवताः ।
भुवनाया वपुष्यत्र, लीनाः सन्तु सुखवहाः ।

सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्यङ्गे विलयं विभाव्य, खेचरीं बद्ध्वोद्वास्य–निर्वाणमुद्रया यन्त्रस्थं पुष्पमुत्थाप्य नासिकयाऽऽघ्राय च शिरसि धारयेत्) ।

हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शिवेन सह सुन्दरि ।
प्रविश त्वं महादेवि, सर्वैरावरणैः सह ॥

तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववद् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्तिं पञ्चधोपचर्य पुनरात्माभिन्नसंविद्रूपेण विभाव्य ।

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा,
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेऽपराधान् क्षमस्व ।
न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः,
सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः ॥

इति विसर्जनम् ।

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां, यतेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां, करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः,
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।

सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था,
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं, ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च, जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

(इत्यादि शान्तिश्लोकान् पठित्वा, विशेषार्घ्यविसर्जनं कुर्यात्)

यथा–विशेषार्घ्यपात्रं मूलेनामस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेणादाय "आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि" इति पूर्वोक्तमन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्त्वा तत्पात्रमन्यानि च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्याग्नौ प्रताप्यावस्थापयेत् ।

(पुनः यन्त्रं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य–)

चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा, कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते, हृदयकमलमध्ये देवि! हर्षं तनोतु ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा–

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे शिवं गुरुम् ॥

इति परमशिवं महाकामेश्वरं सम्पूज्य–

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

इति महाविष्णुं पूजयेत् ।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ! ।
यत्कृतं तु मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

इति श्रीदेव्या वामहस्ते जलेन पूजां समर्प्य–

कृतेनानेन समर्चनेन पराम्बाभगवती श्रीभुवनेश्वरी प्रियताम् ।

ततः यन्त्राभिषेक-तर्पण-समर्पणजलेन स्वगात्रं मार्जयेत् ।

शेषेण चन्दनेन स्वललाटे तिलकं विधाय स्वात्मानं भुवनेश्वरीयन्त्राभिन्नं भावयेत् ॥

मायान्ततत्त्वे सदहं शिवोऽहं शक्त्यन्ततत्त्वे चिदहं शिवोहम् ।
शिवान्ततत्त्वे सुखदः शिवोऽहमतः परं पूर्णमनुत्तरोऽहम् ॥

धर्माधर्म-हविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा श्रुचा ।
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यमक्ष-वृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥
प्रकाशकाश-हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी-स्रुचम् ।
धर्माधर्म-कला-स्नेह-पूर्णवह्नौ जुहोम्यहम् ॥
देशिकवागुपदेशविनस्यद्देहमरुन्मय-शून्य-विकल्पः ।
अद्वयबोध-विमर्शसुखःसनद्य शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि॥

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्रीभुवनेश्वरी वरिवास्यायां
सपर्या प्रकरणं सम्पूर्णम् ।



मातः शृणुष्व वरदेऽभयदान दक्षे
भक्तार्तिनाशनपरे करुणामृताब्धे ।
सर्वं विहाय भवतीं भवमोहिनीत्वां
विन्दे कदाकलितचन्द्रकलावतंसाम् ॥

स्तोत्र प्रकरणम्

अथ कवचम्

अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः भुवनेश्वरी देवता हं बीजं ईं शक्तिः रं कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। शक्तिऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीभुवनेश्वरी-देवतायै नमो हृदि, हं बीजाय नमो गुह्ये, ईं शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ह्रां हृदयाय नमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखायै वषट्, ह्रैं कवचाय हुं, ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः अस्त्राय फट् इत्यादि न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–

उद्यदिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

देव्युवाच–

भुवनेश्याश्च देवेश या या विद्याः प्रकाशिताः ।
श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥ १ ॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं यत् पुरोदितम् ।
कथयस्व महादेव ! मम प्रीतिकरं परम् ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच–

पार्वति शृणु वक्ष्यामि सावधानाऽवधारय ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥ ३ ॥
सिद्धिविद्यामयं देवि सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ।
पठनाद्धारणान् मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यवान् भवेत् ॥ ४ ॥
त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ।
छन्दो विराट् जगद्धात्री देवता भुवनेश्वरी ॥ ५ ॥

धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः।
ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम् ॥ ६ ॥
ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम्।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ॥ ७ ॥
वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा।
ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम ॥ ८ ॥
वाक्त्रिपुरा त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु परात्मिका।
श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा ॥ ९ ॥
क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्यदायिनी।
श्रीं पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदाऽवतु ॥ १० ॥
क्रों पातु नाभिदेशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी।
सर्वजीवप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी ॥ ११ ॥
ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम्।
माहेश्वरी सदा पातु सक्थिनी जानुयुग्मकम् ॥ १२ ॥
अन्नपूर्णे सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम्।
सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णाऽखिलं वपुः ॥ १३ ॥
तारं माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परम्।
शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ॥ १४ ॥
तारं दुर्गे युगं रक्षिणि स्वाहेति दशाक्षरी।
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां पूर्वतः सदा ॥ १५ ॥
माया बीजादिका चैषा दशार्णा च तथा परा।
उत्तप्तकाञ्चनाभा सा जयदुर्गाऽनलेऽवतु ॥ १६ ॥
तारं ह्रीं दुर्गायै नम अष्टवर्णात्मिका परा।
शङ्खचक्रधनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु ॥ १७ ॥
महिषमर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा।
नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी ॥ १८ ॥

माया पद्मावती स्वाहा पश्चिमे मां सदाऽवतु ।
पाशाङ्कुशपुटा माया पाहि परमेश्वरि स्वाहा ॥ १९ ॥
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनिलेऽवतु ।
सरस्वती पञ्चशरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ॥ २० ॥
स्वाहा च त्र्यक्षरी नित्या मामुत्तरे सदाऽवतु ।
तारं माया च कवचं खे च रक्षेत् ततो वधूः ॥ २१ ॥
हु क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाऽखिलप्रदा ।
त्वरिताष्टादिभिः पायाच्छिवकोणे सदा च माम् ॥ २२ ॥
ऐं क्लीं सौः सततं बाला मामूर्द्ध्वदेशतोऽवतु ।
बिन्द्वन्ता भैरवी बाला भूमौ मां सर्वदाऽवतु ॥ २३ ॥
इति ते कवचं पुण्यं त्रैलोक्यमङ्गलं परम् ।
सारात् सारतरं पुण्यं महाविद्यौघविग्रहम् ॥ २४ ॥
अस्य हि पठनान्नित्यं कुबेरोऽपि धनेश्वरः ।
इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद्धारणाद्यतः ॥ २५ ॥
सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ।
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत् सकृत् ॥ २६ ॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
प्रीतिमान् योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ॥ २७ ॥
वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः ।
यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ॥ २८ ॥
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः ।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २९ ॥
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।
बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥ ३० ॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद् भुवनेश्वरीम् ॥ ३१ ॥
दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान् मृत्युमाप्नुयात् ॥ ३२ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे त्रैलोक्यमङ्गलं नाम भुवनेश्वरीकवचं समाप्तम् ॥

●

श्रीगणेशाय नमः

श्रीभुवनेश्वरीसहस्रनाम

श्रीदेव्युवाच–

देव देव महादेव सर्वशास्त्रविशारद !
कपालखट्वाङ्गधर ! चितामस्मानुलेपन ! ॥ १ ॥
आद्या या प्रकृतिर्नित्या सर्वशास्त्रेषु गोपिता ।
तस्याः श्रीभुवनेश्वर्या नाम्नां पुण्यं सहस्रकम् ॥ २ ॥
कथयस्व महादेव ! यथा देवी प्रसीदति ।

ईश्वर उवाच–

साधु पृष्टं महादेवि ! साधकानां हिताय वै ॥ ३ ॥
या नित्या प्रकृतिराद्या सर्वशास्त्रेषु गोपिता ।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ४ ॥
आराधनाद्भवेद्यस्या जीवन्मुक्तो न संशयः ।
तस्या नामसहस्रं वै कथयामि समासतः ॥ ५ ॥

अस्य श्रीभुवनेश्वर्याः सहस्रनामस्तोत्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः आद्या श्रीभुवनेश्वरी देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम श्रीधर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

आद्या माया परा शक्तिः श्रीं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वरी ।
भुवना भावना भव्या भवानी भवभाविनी ॥ ६ ॥
रुद्राणी रुद्रभक्ता च तथा रुद्रप्रिया सती ।
उमा कात्यायनी दुर्गा मङ्गला सर्वमङ्गला ॥ ७ ॥

त्रिपुरा परमेशानी त्रिपुरा सुन्दरी प्रिया ।
रमणा रमणी रामा रामकार्यकरी शुभा ॥ ८ ॥
ब्राह्मी नारायणी चण्डी चामुण्डा मुण्डनायिका ।
माहेश्वरी च कौमारी वाराही चापराजिता ॥ ९ ॥
महामाया मुक्तकेशी महात्रिपुरसुन्दरी ।
सुन्दरी शोभना रक्ता रक्तवस्त्रापिधायिनी ॥ १० ॥
रक्ताक्षी रक्तवस्त्रा च रक्तबीजातिसुन्दरी ।
रक्तचन्दनसिक्ताङ्गी रक्तपुष्पसदाप्रिया ॥ ११ ॥
कमला कामिनी कान्ता कामदेवसदाप्रिया ।
लक्ष्मी लोला चञ्चलाक्षी चञ्चला चपला प्रिया ॥ १२ ॥
भैरवी भयहर्त्री च महाभयविनाशिनी ।
भयङ्करी महाभीमा भयहा भयनाशिनी ॥ १३ ॥
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे संस्मृता भयनाशिनी ।
जया च विजया चैव जयपूर्णा जयप्रदा ॥ १४ ॥
यमुना यामुना याम्या यामुनजा यमप्रिया ।
सर्वेषां जनिका जन्या जनहा जनवर्द्धिनी ॥ १५ ॥
काली कपालिनी कुल्ला कालिका कालरात्रिका ।
महाकालहृदिस्था च कालभैरवरूपिणी ॥ १६ ॥
कपालखट्वाङ्गधरा पाशाङ्कुशविधारिणी ।
अभया च भया चैव तथा च भयनाशिनी ॥ १७ ॥
महाभयप्रदात्री च तथा च वरहस्तिनी ।
गौरी गौराङ्गिनी गौरा गौरवर्णा जयप्रदा ॥ १८ ॥
उग्रा उग्रप्रभा शान्तिः शान्तिदाऽशान्तिनाशिनी ।
उग्रतारा तथा चोग्रा नीला चैकजटा तथा ॥ १९ ॥
हां हां हूं हूं तथा तारा तथा च सिद्धिकालिका ।
तारा नीला च वागीशी तथा नीलसरस्वती ॥ २० ॥

गङ्गा काशी सती सत्या सर्वतीर्थमयी तथा ।
तीर्थरूपा तीर्थपुण्या तीर्थदा तीर्थसेविका ॥ २१ ॥
पुण्यदा पुण्यरूपा च पुण्यकीर्तिप्रकाशिनी ।
पुण्यकाला पुण्यसंस्था तथा पुण्यजनप्रिया ॥ २२ ॥
तुलसी तोतुलास्तोत्रा राधिका राधनप्रिया ।
सत्यासत्या सत्यभामा रुक्मिणी कृष्णवल्लभा ॥ २३ ॥
देवकी कृष्णमाता च सुभद्रा भद्ररूपिणी ।
मनोहरा तथा सौम्या श्यामाङ्गी समदर्शना ॥ २४ ॥
घोररूपा घोरतेजा घोरवत्प्रियदर्शना ।
कुमारी बालिका क्षुद्रा कुमारीरूपधारिणी ॥ २५ ॥
युवती युवतीरूपा युवतीरसरञ्जका ।
पीनस्तनी क्षूद्रमध्या प्रौढा मध्या जरातुरा ॥ २६ ॥
अतिवृद्धा स्थाणुरूपा चलाङ्गी चञ्चला चला ।
देवमाता देवरूपा देवकार्यकरी शुभा ॥ २७ ॥
देवमाता दितिर्दक्षा सर्वमाता सनातनी ।
पानप्रिया पायनी च पालना पालनप्रिया ॥ २८ ॥
मत्स्याशी मांसभक्ष्या च सुधाशी जनवल्लभा ।
तपस्विनी तपी तप्या तपःसिद्धिप्रदायिनी ॥ २९ ॥
हविष्या च हविर्भोक्त्री हव्यकव्यनिवासिनी ।
यजुर्वेदा वश्यकरी यज्ञाङ्गी यज्ञवल्लभा ॥ ३० ॥
दक्षा दाक्षायिणी दुर्गा दक्षयज्ञविनाशिनी ।
पार्वती पर्वतप्रीता तथा पर्वतवासिनी ॥ ३१ ॥
हैमी हर्म्या हेमरूपा मेना मान्या मनोरमा ।
कैलासवासिनी मुक्ता शर्वक्रीडाविलासिनी ॥ ३२ ॥
चार्वङ्गी चारुरूपा च सुवक्त्रा च शुभानना ।
चलत्कुण्डलगण्डश्रीर्लसत्कुण्डलधारिणी ॥ ३३ ॥

महासिंहासनस्था च हेमभूषणभूषिता ।
हेमाङ्गा हेमभूषा सूर्यकोटिसमप्रभा ॥ ३४ ॥
बालादित्यसमाकान्तिः सिन्दूरार्चितविग्रहा ।
यवा यावकरूपा च रक्तचन्दनरूपधृक् ॥ ३५ ॥
कोटरी कोटराक्षी च निर्लज्जा च दिगम्बरा ।
पूतना बालमाता च शून्यालयनिवासिनी ॥ ३६ ॥
श्मशानवासिनी शून्या हृद्या चतुरवासिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च महिषासुरघातिनी ॥ ३७ ॥
निशुम्भशुम्भमथनी चण्डमुण्डविनाशिनी ।
शिवाख्या शिवरूपा च शिवदूती शिवप्रिया ॥ ३८ ॥
शिवदा शिववक्षःस्था शर्वाणी शिवकारिणी ।
इन्द्राणी चेन्द्रकन्या च राजकन्या सुरप्रिया ॥ ३९ ॥
लज्जाशीला साधुशीला कुलस्त्री कुलभूषिका ।
महाकुलीना निष्कामा निर्लज्जा कुलभूषणा ॥ ४० ॥
कुलीना कुलकन्या च तथा च कुलभूषिता ।
अनन्तानन्तरूपा च अनन्तासुरनाशिनी ॥ ४१ ॥
हसन्ती शिवसङ्गेन वाञ्छितानन्ददायिनी ।
नागाङ्गी नागभूषा च नागहारविधारिणी ॥ ४२ ॥
धरिणी धारिणी धन्या महासिद्धिप्रदायिनी ।
डाकिनी शाकिनी चैव राकिनी हाकिनी तथा ॥ ४३ ॥
भूता प्रेता पिशाची च यक्षिणी धनदार्चिता ।
धृतिः कीर्तिः स्मृतिमेधा तुष्टिःपुष्टिरुमा रुषा ॥ ४४ ॥
शाङ्करी शाम्भवी मीना रतिः प्रीतिः स्मरातुरा ।
अनङ्गमदना देवी अनङ्गमदनातुरा ॥ ४५ ॥
भुवनेशी महामया तथा भुवनपालिनी ।
ईश्वरी चेश्वरीप्रीता चन्द्रशेखरभूषणा ॥ ४६ ॥

चित्तानन्दकरी देवी चित्तसंस्था जनस्य च ।
अरूपा बहुरूपा च सर्वरूपा चिदात्मिका ॥ ४७ ॥
अनन्तरूपिणी नित्या तथानन्तप्रदायिनी ।
नन्दा चानन्दरूपा च तथाऽनन्दप्रकाशिनी ॥ ४८ ॥
सदानन्दा सदानित्या साधकानन्ददायिनी ।
वनिता तरुणी भव्या भविका च विभाविनी ॥ ४९ ॥
चन्द्रसूर्यसमा दीप्ता सूर्यवत्परिपालिनी ।
नारसिंही हयग्रीवा हिरण्याक्षविनाशिनी ॥ ५० ॥
वैष्णवी विष्णुभक्ता च शालग्रामनिवासिनी ।
चतुर्भुजा चाष्टभुजा सहस्रभुजसंज्ञिता ॥ ५१ ॥
आद्या कात्यायनी नित्या सर्वाद्या सर्वदायिनी ।
सर्वचन्द्रमयी देवी सर्ववेदमयी शुभा ॥ ५२ ॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वलोकमयी पुरा ।
सर्वसम्मोहिनी देवी सर्वलोकवशङ्करी ॥ ५३ ॥
राजिनी रञ्जिनी रागा देहलावण्यरञ्जिता ।
नटी नटप्रिया धूर्ता तथा धूर्तजनार्दिनी ॥ ५४ ॥
महामाया महामोहा महासत्वविमोहिता ।
बलिप्रियां मांसरुचिर्मधुमांसप्रिया सदा ॥ ५५ ॥
मधुमत्ता माधविका मधुमाधवरूपिका ।
दिवामयी रात्रिमयी संध्या संधिस्वरूपिणी ॥ ५६ ॥
कालरूपा सूक्ष्मरूपा सूक्ष्मिणी चातिसूक्ष्मिणी ।
तिथिरूपा वाररूपा तथा नक्षत्ररूपिणी ॥ ५७ ॥
सर्वभूतमयी देवी पञ्चभूतनिवासिनी ।
शून्याकरा शून्यरूपा शून्यसंस्था च स्तम्भिनी ॥ ५८ ॥
आकाशगामिनी देवी ज्योतिश्चक्रनिवासिनी ।
ग्रहाणां स्थितिरूपा च रुद्राणी चक्रसम्भवा ॥ ५९ ॥

ऋषीणां ब्रह्मपुत्राणां तपःसिद्धिप्रदायिनी।
अरुन्धती च गायत्री सावित्री सत्वरूपिणी ॥ ६० ॥
चितासंस्था चितारूपा चित्तसिद्धिप्रदायिनी।
शवस्था शवरूपा च शवशत्रुनिवासिनी ॥ ६१ ॥
योगिनी योगरूपा च योगिनां मलहारिणी।
सुप्रसन्ना महादेवी यामुनी मुक्तिदायिनी ॥ ६२ ॥
निर्मला विमला शुद्धा शुद्धसत्वा जयप्रदा।
महाविद्या महामाया मोहिनी विश्वमोहिनी ॥ ६३ ॥
कार्यसिद्धिकरी देवी सर्वकार्यनिवासिनी।
कार्यकार्यकरी रौद्री महाप्रलयकारिणी ॥ ६४ ॥
स्त्रीपुंभेदाह्यभेद्या च भेदिनी भेदनाशिनी।
सर्वरूपा सर्वमयी अद्वैतानन्दरूपिणी ॥ ६५ ॥
प्रचण्डा चण्डिका चण्डा चण्डासुरविनाशिनी।
सुमस्ता बहुमस्ता च छिन्नमस्ताऽसुनाशिनी ॥ ६६ ॥
अरूपा च विरूपा च चित्ररूपा चिदात्मिका।
बहुशस्त्रा अशस्त्रा च सर्वशस्त्रप्रहारिणी ॥ ६७ ॥
शास्त्रार्था शास्त्रवादा च नाना शास्त्रार्थवादिनी।
काव्याशास्त्रप्रमोदा च काव्यालङ्कारवासिनी ॥ ६८ ॥
रसज्ञा रसना जिह्वा रसामोदा रसप्रिया।
नानाकौतुकसंयुक्ता नानारसविलासिनी ॥ ६९ ॥
अरूपा च स्वरूपा च विरूपा च सुरूपिणी।
रूपावस्था तथा जीवा वेश्याद्या वेशधारिणी ॥ ७० ॥
नानावेशधरा देवी नानावेशेषु संस्थिता।
कुरूपा कुटिला कृष्णा कृष्णारूपा च कालिका ॥ ७१ ॥
लक्ष्मीप्रदा महालक्ष्मीः सर्वलक्षणसंयुता।
कुबेरगृहसंस्था च धनरूपा धनप्रदा ॥ ७२ ॥

नानारत्नप्रदा देवी रत्नखण्डेषु संस्थिता ।
वर्णसंस्था वर्णरूपा सर्ववर्णमयी सदा ॥ ७३ ॥
ओङ्काररूपिणी वाच्या आदित्यज्योतीरूपिणी ।
संसारमोचिनी देवी संग्रामे जयदायिनी ॥ ७४ ॥
जयरूपा जयाख्या च जयिनी जयदायिनी ।
मानिनी मानरूपा च मानभङ्गप्रणाशिनी ॥ ७५ ॥
मान्या मानप्रिया मेधा मानिनी मानदायिनी ।
साधकासाधकासाध्या साधिका साधनप्रिया ॥ ७६ ॥
स्थावरा जङ्गमा प्रोक्ता चपला चपलप्रिया ।
ऋद्धिदा ऋद्धिरूपा च सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ॥ ७७ ॥
क्षेमङ्करी शङ्करी च सर्वसम्मोहकारिणी ।
रञ्जिता रञ्जिनी या च सर्ववाञ्छाप्रदायिनी ॥ ७८ ॥
भगलिङ्गप्रमोदा च भगलिङ्गनिवासिनी ।
भगरूपा भगाभाग्या लिङ्गरूपा च लिङ्गिनी ॥ ७९ ॥
भगगीतिर्महाप्रीतिर्लिङ्गगीतिर्महासुखा।
स्वयंभूः कुसुमाराध्या स्वयंभूः कुसुमाकुला ॥ ८० ॥
स्वयंभूः पुष्परूपा च स्वयंभूः कुसुमप्रिया ।
शुक्रकूपा महाकूपा शुक्रासवनिवासिनी ॥ ८१ ॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्रपूजकपूजिता ।
कामाक्षा कामरूपा च योगिनी पीठवासिनी ॥ ८२ ॥
सर्वपीठमयी देवी पीठपूजानिवासिनी ।
अक्षमालाधरा देवी पानपात्रविधारिणी ॥ ८३ ॥
शूलिनी शूलहस्ता च पाशिनी पाशरूपिणी ।
खड्गिनी गदिनी चैव तथा सर्वास्त्रधारिणी ॥ ८४ ॥
भाव्या भव्या भवानी सा भवमुक्तिप्रदायिनी ।
चतुरा चतुरप्रीता चतुराननपूजिता ॥ ८५ ॥

देवस्तव्या देवपूज्या सर्वपूज्या सुरेश्वरी ।
जननी जनरूपा च जनानां चित्तहारिणी ॥ ८६ ॥
जटिला केशबद्धा च सुकेशी केशबद्धिका ।
अहिंसा द्वेषिका द्वेष्या सर्वद्वेषविनाशिनी ॥ ८७ ॥
उच्चाटिनी द्वेषिनी च मोहिनी मधुराक्षरा ।
क्रीडा क्रीडकलेखाङ्ककारणाकारकारिका ॥ ८८ ॥
सर्वज्ञा सर्वकार्या च सर्वभक्षा सुरारिहा ।
सर्वरूपा सर्वशान्ता सर्वेषां प्राणरूपिणी ॥ ८९ ॥
सृष्टिस्थितिकरी देवी तथा प्रलयकारिणी ।
मुग्धा साध्वी तथा रौद्री नानामूर्तिविधारिणी ॥ ९० ॥
उक्तानि यानि देवेशि अनुक्तानि महेश्वरि ।
यत् किञ्चिद् दृश्यते देवि तत् सर्वं भुवनेश्वरी ॥ ९१ ॥
इति श्रीभुवनेश्वर्या नामानि कथितानि ते ।
सहस्राणि महादेवि फलं तेषां निगद्यते ॥ ९२ ॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय चार्द्धरात्रे तथा प्रिये ।
प्रातःकाले तथा मध्ये सायाह्ने हरवल्लभे ॥ ९३ ॥
यत्र तत्र पठित्वा च भक्त्या सिद्धिर्न संशयः ।
पठेद् वा पाठयेद् वापि श्रृणुयाच्छ्रावयेत्तथा ॥ ९४ ॥
तस्य सर्वं भवेत् सत्यं मनसा यच्च वाञ्छितम् ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां वा विशेषतः ॥ ९५ ॥
सर्वमङ्गलसंयुक्ते संक्रातौ शनिभौमयोः ।
यः पठेत् परया भक्त्या देव्या नामसहस्रकम् ॥ ९६ ॥
तस्य देहे च संस्थानं कुरुते भुवनेश्वरी ।
तस्य कार्यं भवेद् देवि अन्यथा न कथञ्चन ॥ ९७ ॥
श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे चतुष्पथे ।
चतुष्पथे चैकलिङ्गे मेरुदेशे तथैव च ॥ ९८ ॥

जलमध्ये वह्निमध्ये संग्रामे ग्रामशान्तये ।
जप्त्वा मन्त्रसहस्रं तु पठेन्नामसहस्रकम् ॥ ९९ ॥
धूपदीपादिभिश्चैव बलिदानादिकैस्तथा ।
नानाविधैस्तथा देवि नैवेद्यैर्भुवनेश्वरीम् ॥ १०० ॥
सम्पूज्य विधिवज्जप्त्वा स्तुत्वा नामसहस्रकैः ।
अचिरात् सिद्धिमाप्नोति साधको नात्र संशयः ॥ १०१ ॥
तस्य तुष्टा भवेद् देवी सर्वदा भुवनेश्वरी ।
भूर्जपत्रे समालिख्य कुङ्कुमाद् रक्तचन्दनैः ॥ १०२ ॥
तथा गोरोचनाद्यैश्च विलिख्य साधकोत्तमः ।
सुतिथौ शुभनक्षत्रे लिखित्वा दक्षिणे भुजे ॥ १०३ ॥
धारयेत् परया भक्त्या देवीरूपेण पार्वति ! ।
तस्य सिद्धिर्महेशानि अचिराच्च भविष्यति ॥ १०४ ॥
रणे राजकुले वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत् ।
देवता वशमायाति किं पुनर्मानवादयः ॥ १०५ ॥
विद्यास्तम्भं जलस्तम्भं करोत्येव न संशयः ।
पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि देवीभक्त्या च पार्वति ॥ १०६ ॥
इह भुक्त्वा वरान् भोगान् कृत्वा काव्यार्थविस्तरान् ।
अन्ते देव्या गणत्वं च साधको मुक्तिमाप्नुयात् ॥ १०७ ॥
प्रप्नोति देवदेवेशि सर्वार्थान्नात्र संशयः ।
हीनाङ्गे चातिरिक्ताङ्गे शठाय परशिष्यके ॥ १०८ ॥
न दातव्यं महेशानि प्राणान्तेऽपि कदाचन ।
शिष्याय मतिशुद्धाय विनीताय महेश्वरि ॥ १०९ ॥
दातव्यः स्तवराजश्च सर्वसिद्धिप्रदो भवेत् ।
लिखित्वा धारयेद् देहे दुःखं तस्य न जायते ॥ ११० ॥
य इदं भुवनेश्वर्याः स्तवराजं महेश्वरि ।
इति ते कथित देवि भुवनेश्याः सहस्रकम् ॥ १११ ॥

यस्मै कस्मै न दातव्यं विना शिष्याय पार्वति ।
सुरतरुवरकान्तं सिद्धिसाध्यैकसेव्यं
यदि पठति मनुष्यो नान्यचेताः सदैव ।
इह हि सकलभोगान् प्राप्य चान्ते शिवाय
व्रजति परसमीपं सर्वदा मुक्तिमन्ते ॥ ११२ ॥

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे भुवेश्वरीसहस्रनामाख्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ श्रीरस्तु ॥

●

श्रीगणेशाय नमः

अथ श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनास्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

महासम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ।
एकाक्षरी एकमन्त्री एकाकी लोकनायिका ॥ १ ॥
एकरूपा महारूपा स्थूलसूक्ष्मशरीरिणी ।
बीजरूपा महाशक्तिः सङ्ग्रामे जयवर्द्धिनी ॥ २ ॥
महारतिर्महाशक्तिर्योगिनी पापनाशिनी ।
अष्टसिद्धिः कलारूपाः वैष्णवी भद्रकालिका ॥ ३ ॥
भक्तिप्रिया महादेवी हरिब्रह्मादिरूपिणी ।
शिवरूपी विष्णुरूपी कालरूपी सुखासिनी ॥ ४ ॥
पुराणी पुण्यरूपा च पार्वती पुण्यवर्द्धिनी ।
रुद्राणी पार्वतीन्द्राणी शङ्कराद्धशरीरिणी ॥ ५ ॥
नारायणी महादेवी महिषी सर्वमङ्गला ।
अकारादिक्षकारान्ता ह्यष्टात्रिंशत्कलाधरी ॥ ६ ॥
सप्तमा त्रिगुणा नारी शरीरोत्पत्तिकारिणी ।
आकल्पान्तकलाव्यापिसृष्टिसंहारकारिणी ॥ ७ ॥

सर्वशक्तिर्महाशक्तिः शर्वाणी परमेश्वरी।
हृल्लेखा भुवना देवी महाकविपरायणा ॥ ८ ॥
इच्छाज्ञानक्रियारूपा अणिमादिगुणाष्टका।
नमः शिवायै शान्तायै शाङ्करि भुवनेश्वरि ॥ ९ ॥
वेदवेदाङ्गरूपा च अतिसूक्ष्मा शरीरिणी।
कालज्ञानी शिवज्ञानी शैवधर्मपरायणा ॥ १० ॥
कालान्तरी कालरूपी संज्ञाना प्राणधारिणी।
खड्गश्रेष्ठा च खट्वाङ्गी त्रिशूलवरधारिणी ॥ ११ ॥
अरूपा बहुरूपा च नायिका लोकवश्यगा।
अभया लोकरक्षा च पिनाकी नागधारिणी ॥ १२ ॥
वज्रशक्तिर्महाशक्तिः पाशतोमरधारिणी।
अष्टादशभुजा देवी हृल्लेखा भुवना तथा ॥ १३ ॥
खड्गधारी महारूपा सोमसूर्याग्निमध्यगा।
एवं शताष्टकं नाम स्तोत्रं रमणभाषितम् ॥ १४ ॥
सर्वपापप्रशमनं सर्वारिष्टनिवारणम्।
सर्वशत्रुक्षयकरं सदा विजयवर्द्धनम् ॥ १५ ॥
आयुष्करं पुष्टिकरं रक्षाकरं यशस्करम्।
अमरादिपदैश्वर्यममत्वांशकलापहम् ॥ १६ ॥

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनाम समाप्तम्।



श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रम्

श्रीदेव्युवाच– भगवन् ब्रूहि तत्स्तोत्रं सर्वकामप्रसाधनम्।
यस्य श्रवणमात्रेण नान्यच्छ्रोतव्यमिष्यते ॥ १ ॥

यदि मेऽनुग्रहः कार्यः प्रीतिश्चापि ममोपरि ।
तदिदं कथय ब्रह्मन् विमलं यन्महीतले ॥ २ ॥
ईश्वर उवाच– शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सर्वकामप्रसाधनम् ।
हृदयं भुवनेश्वर्य्याः स्तोत्रमस्ति यशःप्रदम् ॥ ३ ॥

अस्य श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, भुवनेश्वरी देवता, हकारो बीजम्, ईकारः शक्तिः, रेफः कीलकम्, सकलमनोवाञ्छितसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः १, ह्रीं हृदयाय नमः श्रीं शिरसे स्वाहा २, ऐं शिखायै वषट् ३, ह्रीं कवचाय हुं ४, श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५, ऐं अस्त्राय फट् ६ । इति हृद्यादिषडङ्गन्यासः ।

ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः १, श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २, ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३, ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४, श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५, ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

अथ ध्यानम्

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृतजनिजननीं योगिनीं योगयोनिं
देवानां जीवनायोज्ज्वलितजयपरज्योतिरुग्राङ्गधात्रीम् ।
शंखं चक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातै-
र्मायामाद्यां विशिष्टां भवभवभुवनां भूभुवाभारभूमिम् ॥ ४ ॥
यदाज्ञयेदं गगनाद्यशेषं सृजत्यजः श्रीपतिरौरसं वा ।
बिभर्ति संहर्ति भवस्तदन्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ५ ॥
जगज्जनान्दकरीं जयाख्यां यशस्विनीं यन्त्रसुयज्ञयोनिम् ।
जितामितामित्रकृतप्रपञ्चां भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ६ ॥
हरौ प्रसुप्ते भुवनत्रयान्ते अवातरन्नाभिजपद्मजन्मा ।
विधिस्ततोऽन्धे विदधार यत्पदं भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ७ ॥
न विद्यते क्वापि तु जन्म यस्या न वा स्थितिः सान्ततिकीह यस्याः ।
न वा निरोधेऽखिलकर्म्म यस्या भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ८ ॥

कटाक्षमोक्षाचरणोग्रवित्ता निवेशितार्णा करुणार्द्रचित्ता ।
सुभक्तये एति समीप्सितं या भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ९ ॥
यतो जगज्जन्म बभूव योनेस्तदेव मध्ये प्रतिपाति या वा ।
तदत्ति याऽन्तेऽखिलमुग्रकाली भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ १० ॥
सुषुप्तिकाले जनमध्ययन्त्या यया जनः स्वप्नमवैति किंचित् ।
प्रबुध्यते जाग्रति जीव एष भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ ११ ॥
दयास्फुरत्कोरकटाक्षलाभान्नैकत्र यस्य प्रलभन्ति सिद्धाः ।
कवित्वमीशित्वमपि स्वतन्त्रा भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ १२ ॥
लसन्मुखाम्भोरुहमुत्स्फुरन्तं हृदि प्रणिध्याय दिशि स्फुरन्तः ।
यस्याः कृपार्द्रं प्रविकाशयन्ति भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ १३ ॥
यदानुरागानुगतालिचित्राश्चिरन्तनप्रेमपरिप्लुताङ्गाः।
सुनिर्भयाः सन्ति प्रमुद्य यस्याः भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ १४॥
हरिर्विरञ्चिर्हर ईशितारः पुरोऽवतिष्ठन्ति प्रपन्नभङ्गाः ।
यस्याः समिच्छन्ति सदानुकूल्य भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ १५ ॥
मनुं यदीयं हरमग्निसंस्थं ततश्च वामश्रुतिचन्द्रसक्तम् ।
जपन्ति ये स्युर्हि सुवन्दितास्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम् ॥ १६ ॥
प्रसीदतु प्रेमरसार्द्रचित्ता सदा हि सा श्रीभुवनेश्वरी मे ।
कृपाकटाक्षेण कुबेरकल्पा भवन्ति यस्याः पदभक्तिभाजः ॥ १७ ॥
मुदा सुपाठ्यं भुवनेश्वरीयं सदा सतां स्तोत्रमिदं सुसेव्यम् ।
सुखप्रदं स्यात्कलिकल्मषघ्नं सुश्रृण्वतां सम्पठतां प्रशस्यम् ॥ १८ ॥

एतत्तु हृदयं स्तोत्रं पठेद्यस्तु समाहितः ।
भवेत्तस्येष्टदा देवी प्रसन्ना भुवनेश्वरी ॥ १९ ॥
ददाति धनमायुष्यं पुण्यं पुण्यमतिं तथा ।
नैष्ठिकीं देवभक्तिं च गुरुभक्तिं विशेषतः ॥ २० ॥
पूर्णिमायां चतुर्दश्यां कुजवारे विशेषतः ।
पठनीयमिदं स्तोत्रं देवसद्मनि यत्नतः ॥ २१ ॥

यत्र कुत्रापि पाठेन स्तोत्रस्यास्य फलं भवेत् ।
सर्वस्थानेषु देवेश्याः पूतदेहः सदा पठेत् ॥ २२ ॥

इति नीलसरस्वतीतन्त्रे भुवनेश्वरीपटले श्रीदेवीश्वरसंवादे
श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ।



अथ श्रीभुवनेश्वरीस्तोत्रम्

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम् ।
ईडे सकलसम्पत्यै जगत्कारणमम्बिकाम् ॥ १ ॥
आद्यामशेषजननीमरविन्दयोने
र्विष्णोः शिवस्य च वपुःप्रतिपादयित्रीम् ।
सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां
स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके ! त्वाम् ॥ २ ॥
पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतां वरेण
होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः ।
देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता
हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि! ॥ ३ ॥
त्रिस्रोतसः सकलदेवसमर्चिताया
वैशिष्ट्यकारणमवैमि तदेव मातः !
त्वत्पादपङ्कजपरागपवित्रितासु
शम्भोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत् ॥ ४ ॥
आनन्दयेत् कुमुदिनीमधिपः कलानां
नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा ।
एकत्र मोदनविधौ परमे क ईष्टे
त्वन्तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्ट्या ॥ ५ ॥

आद्याऽप्यशेषजगतां नवयौवनाऽसि
शैलाधिराजतनयाऽप्यतिकोमलाऽसि ।
त्रय्याःप्रसूरपि तथा न समीक्षिताऽसि
ध्येयाऽसि गौरि ! मनसो न पथि स्थिताऽसि ॥ ६ ॥

आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं
तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम् ।
नाभ्यर्चयन्ति जगतां जनयित्रि !
ये त्वां निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति ॥ ७ ॥

कर्पूरचूर्णहिमवारि विलोडितेन
ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुगन्धिगन्धैः ।
आराधयन्ति हि भवानि! समुत्सुकास्त्वां
ते खल्वशेषभुवनाधिभुवः प्रथन्ते ॥ ८ ॥

आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे
सुप्ताहिराजसदृशी विरचय्य विश्वम् ।
विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्ती
पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ॥ ९ ॥

तन्निर्गतामृतरसैः परिशिक्तगात्र
मार्गेण तेन निलयं पुनरप्यवाप्ता ।
येषां हृदि स्फुरसि जातु न ते भवेयु
र्मातर्महेश्वरकुटुम्बिनि ! गर्भभाजः ॥ १० ॥

आलम्बिकुण्डलभरामभिरामवक्त्रा
मापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम् ।
चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्ता
मावर्तयामि मनसा तव गौरि ! मूर्तिम् ॥ ११ ॥

आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्क
माबद्ध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।

पाशाङ्कुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रा
मालोकयन्ति भुवेश्वरि ! योगिनस्त्वाम् ॥ १२ ॥
उत्तप्तहाटकनिभाकरिभिश्चतुर्भि
रावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना।
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती
पद्मासऽपि साऽभयवरा भवसि त्वमेव ॥ १३ ॥
अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभि
र्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम् ।
दूर्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान्
न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि ! भवानि ! दुर्गा ॥ १४ ॥
आविर्निदाघजलशीकरशोभि वक्त्रां
गुञ्जाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम् ।
पीतांशुकामसितकान्तिमनङ्गतन्द्रा
माद्यां पुलिन्दतरुणीमसकृत् स्मरामि ॥ १५ ॥
हंसैर्गतिक्वणितनूपुरदूरदृष्टे
मूर्तैरिवार्थवचनैरनुगम्यमानौ ।
पद्माविवोर्ध्वमुखरूढसुजातनालौ
श्रीकण्ठपत्नि! शिरसा विदधे तवाङ्घ्री ॥ १६ ॥
द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव
दृग्भ्यामुत्पाट्य भालनयनं वृषकेतनेन ।
सान्द्रानुरागतरलेन निरीक्ष्यमाणे
जङ्घे शुभे अपि भवानि ! तवानतोऽस्मि ॥ १७ ॥
ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ
स्थौल्येन मर्दावतया परिभूतरम्भौ ।
श्रोणीभरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ
स्तम्भाविवाङ्ग वयसा तव मध्यमेन ॥ १८ ॥

श्रीण्यौस्तनौ च युगपत् प्रथयिष्यतोच्चै
बाल्यात्परेण वयसा परिहृष्टसारौ ।
रोमावलीविलसितेन विभाव्य मूर्तिं
मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥ १९ ॥
सख्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशशान्त्यै
लावण्यवारिभरितं नवयौवनेन ।
आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं
नाभिं कदापि तव देवि ! न विस्मरेयम् ॥ २० ॥
ईशेऽपि गेहपिशुनं भसितं दधाने
काश्मीरकर्दममनुस्तनपङ्क्जे ते ।
स्नातोत्थितस्य करणिः क्षणलक्ष्यफेनौ
सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥ २१ ॥
कण्ठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकान्तिधारा
शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन ।
कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ
मातर्मम स्मृतिपथं न विलङ्घयेताम् ॥ २२ ॥
नात्यायतं रचितकम्बुविलासचौर्यं
भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये !
सञ्चिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ॥ २३ ॥
अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टम्
मन्दस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम् ।
बिम्बाधरं वदनमुन्नतदीर्घनासं
यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब ! स एव जातः ॥ २४ ॥
आविस्तुषारकरलेखमनल्पगन्ध
पुष्पोपरिभ्रमदलिव्रजनिर्विशेषम् ।

यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं
तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥ २५ ॥
श्रुतिसुचरितपाकं श्रीमतां स्तोत्रमेतत्
पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥२६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीभुवनेश्वरीस्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्रीभुवनेश्वरी वरिवास्यायां
स्तोत्र प्रकरणं सम्पूर्णम् ।



अथ होमप्रकरणम्

पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुरस्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं स्थण्डिलं परिकल्प्य, 'मूलेन' निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य कुशेन ताडयित्वा, हुं इत्यवगुण्ठ्य, स्थण्डिलोपरि मध्यमदक्षिणोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि मध्यमपश्चिमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण—ह्रीं ब्रह्मणे नमः। ह्रीं यमाय नमः। ह्रीं सोमाय नमः। ह्रीं रुद्राय नमः। ह्रीं विष्णवे नमः। ह्रीं इन्द्राय नमः। इत्यभ्यर्चयेत्॥

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात्। यथा—

ह्रीं सहस्रर्चिषे हृदयाय नमः। ह्रीं स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा। ह्रीं उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्। ह्रीं धूमव्यापिने कवचाय हुं। ह्रीं सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रीं धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

अनेनैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थण्डिलमभ्यर्च्य, अत्र अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेश-रीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन दिक्षु मध्ये च क्रमात् ह्रीं पीतायै नमः, ह्रीं श्वेतायै नमः, ह्रीं अरुणायै नमः, ह्रीं कृष्णायै नमः ह्रीं धूम्रायै नमः। ह्रीं तीव्रायै नमः। ह्रीं स्फुलिङ्गिन्यै नमः। ह्रीं रुचिरायै नमः। ह्रीं ज्वालिन्यै नमः। इति पीठशक्तीः समर्चयेत्॥

ततः पीठमध्ये—ह्रीं तं तमसे नमः। ह्रीं रं रजसे नमः। ह्रीं सं सत्वाय नमः। ह्रीं आं आत्मने नमः। ह्रीं अं अन्तरात्मने नमः। ह्रीं पं परमात्मने नमः। ह्रीं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। इति पूजयेत्॥ ततः त्रिकोणे—ह्रीं ॐ ह्रीं वागीश्वरी वागीश्वराभ्यां नमः—इतिमन्त्रेण जनिष्यमाणस्य वह्नेः पितरौ वागीश्वरी वागीश्वरौ सम्पूज्य तयोर्मिथुनीभावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा वह्निमुत्पाद्य

द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वा अग्निं स्थण्डिलाद्बहिः आग्नेय्यां ऐशान्यां नैऋत्यां वा दिशि निधाय, तस्मात्क्रव्यादांशमेकमग्निशकलं फट् इति अस्त्रमन्त्रेण नैऋत्यां निरस्य अग्निं मूलेन निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च, अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा कवचेनावगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, ततः ह्रीं ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष' सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, इति मूलाधारोद्गतं सम्विदग्निं ललाट नेत्र द्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्ध्या बाह्याग्नौ संयजयेत् ॥

ततः कवचाय हुम्. इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य ह्रीं अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्युपस्थाय । ह्रीं उतिष्ठ पुरुष हरित पिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा, इति वह्निमुत्थाप्य ततः ॐ ह्रीं इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्रामयित्वा स्थण्डिले स्थापयेत् । ह्रीं चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा, इति प्रज्वाल्य ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य, (प्राक्तोयं निधाय) वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा, ह्रीं ऐं नमः अस्य होमाग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, भुवनेश्वर्याग्निरिति नाम्ना नामकरणकर्म कल्पयामि नमः, ह्रीं ऐं नमः अस्य भुवनेश्वर्याग्नेः अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः—इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतैरभ्यर्चयेत् ॥

कुण्डस्योत्तरभागे कुशास्तरे स्रुक्स्रुवौ प्रोक्षणीपात्रे आज्यस्थाली चरुस्थाली—परिधित्रयं समित्पञ्चात्मकमिध्मं लूनमूलसाग्रकुशमुष्टिरिति पात्राण्यधोमुखानि संस्थाप्य, अन्यान्यपि दध्यक्षतादिबलिद्रव्याणि गन्धपुष्पादि पूजाद्रव्याणि च यथायथं संस्थाप्याधोमुखानि स्रुक्स्रुवादीनि सपवित्राधोमुखहस्तसेकरूपावोक्षणपूर्वकमुत्तानीकृत्य, प्रणीतापात्रं प्रक्षाल्य स्वपुरतः कुशास्तरे निधाय शुद्धजलैरापूर्य तत्र गन्धाक्षतान् निक्षिप्य, प्रादेशमात्रं साग्रं कुशद्वयं मध्ये ब्रह्मग्रन्थियुतं जलाग्रे उत्तराग्रं पवित्रं निधाय करद्वयानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रं मूलाग्रे विधृत्यास्नमन्त्रमुच्चरन्

पवित्रमध्येन जलं पात्राद् बहिस्त्रिवारं भूमौ निक्षिपेत् इत्युत्पवनं विधाय तन्मध्ये किञ्चित् घृतं निक्षिप्य, तत्पात्रं कराभ्यामामस्तकमुद्धृत्य कुण्डस्योत्तरभागे कुशास्तरे निधाय तदुपरि प्रागग्रान् दर्भान् निक्षिपेत्, इति प्रणीता पात्रं संस्थाप्य, प्रोक्षणीपात्रं प्रक्षाल्य शुद्धजलैरापूर्य तन्मध्ये प्रणीतापात्रजलं पात्रान्तरेणोद्धृत्य किञ्चिद् दत्त्वा, तेन जलेन मूलमन्त्रेण सर्वाणि पात्राणि होमद्रव्याणि पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत्, इति द्रव्यासादनं विधाय ततः प्रोक्षणीय जलेनाग्निं मूलेन परिषिच्य अग्नि मलङ्कृत्य प्रागग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य त्रिभिः परिधिभिः प्राग्वर्जं परिधानं कृत्वा ।–

त्रिनयनमरुणाप्तबद्धमौलिं सुशुक्लां-
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम् ।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
नमतकनकमालालङ्कृतांसं कृशानुम् ॥

शारदातिलके–

वैश्वनरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः ।
शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु ॥

अथ अष्टकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन–

ह्रीं जातवेदसे नमः । ह्रीं सप्तजिह्वाय नमः । ह्रीं हव्यवाहनाय नमः। ह्रीं अश्वोदराय नमः । ह्रीं वैश्वानराय नमः । ह्रीं कौमारतेजसे नमः । ह्रीं विश्वमुखाय नमः । ह्रीं देवमुखाय नमः । इत्यभिपूज्य ॥

षट्कोणे षडङ्गं यथा–

ह्रीं सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः । ह्रीं स्वास्तिपूर्णय शिरसे स्वाहा ।
ह्रीं उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखायै वषट् । ह्रीं धूमव्यापिने कवचाय हुम् ।
ह्रीं सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् । ह्रीं धनुर्धराय अस्त्राय फट् ।
इत्यभ्यर्च्य ।

त्रिकोणे ह्रीं ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, इति मन्त्रेण अग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत् ।

अथ अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैकां आज्याहुतिं कुर्यात् ।
यथा–

ह्रीं हिरण्यायै नमः स्वाहा–हिरण्याया इदं न मम (ऐशान्यां)

ह्रीं कनकायै नमः स्वाहा–कनकाया इदं न मम (प्राच्यां)

ह्रीं रक्तायै नमः स्वाहा–रक्ताया इदं न मम (आग्नेय्यां)

ह्रीं कृष्णायै नमः स्वाहा–कृष्णाया इदं न मम (नैर्ऋत्यां)

ह्रीं सुप्रभायै नमः स्वाहा–सुप्रभाया इदं न मम (पश्चिमायां)

ह्रीं अतिरक्तायै नमः स्वाहा–अतिरक्ताया इदं न मम (वायव्यायां)

ह्रीं बहुरूपायै नमः स्वाहा–बहुरूपाया इदं न मम (मध्ये)

ततस्तिस्र आहुतीः जुहुयात् । यथा–

ह्रीं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय-स्वाहा अग्नय इदम् ।

ह्रीं उत्तिष्ठपुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा–अग्नय इदम् ।

ह्रीं चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा–अग्नय इदम् ।

अथ अग्नेर्मध्यभागे स्थितायां दक्षिणोत्तरायतायां बहुरूपाख्य-जिह्वायां, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः ॥

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥

इति श्रीदेवीमावाह्य उपचारमन्त्रैर्गन्धादीन् पञ्चोपचारानाचर्य पूजाक्रमेण जुहुयात् यथा–गणपतिमूलं महागणपतये स्वाहा (त्रिः) मूलं ह्रीं श्रीभुवनेश्वर्यै स्वाहा (दशकृत्वः)

नामान्ते स्वाहाशब्दः सर्वत्रयोज्यः ।

ह्रां ह्रीं हृदयाय नमः हृदयदेव्यै स्वाहा, ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरो देव्यै स्वाहा,

ह्रीं ह्रूं शिखायै वषट् शिखादेव्यै स्वाहा, ह्रीं ह्रैं कवचाय हुम् कवचदेव्यै स्वाहा,
ह्रीं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै स्वाहा, ह्रीं ह्रः अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा ।
ह्रीं दिव्यौघगुरुपङ्क्तये स्वाहा , ह्रीं सिद्धौघगुरुपङ्क्तये स्वाहा, ह्रीं मानवौघगुरुपङ्क्तये स्वाहा
ह्रीं गुरुपादुकामुच्चार्य परमेष्ठि गुरवे स्वाहा
ह्रीं गुरुपादुकामुच्चार्य परमगुरवे स्वाहा
ह्रीं गुरुपादुकामुच्चार्य गुरवेस्वाहा
ह्रीं षट्कोणचक्राय स्वाहा
ह्रीं गायत्री सहित ब्रह्मणे स्वाहा, ह्रीं सावित्री सहित विष्णवे स्वाहा ।
ह्रीं सरस्वती सहित रुद्राय स्वाहा ह्रीं लक्ष्मीसहित धनपतये स्वाहा ।
ह्रीं रति सहित कन्दर्पाय स्वाहा ह्रीं पुष्टिसहित गणपतये स्वाहा ।
ह्रीं वसुधारा सहित शङ्खनिधये स्वाहा ह्रीं वसुमती सहित पद्मनिधये स्वाहा मिथुनाष्टकसहितायै भुवनेश्वर्यै स्वाहा ।
ह्रीं अष्टदलकमलाय स्वाहा, ह्रीं अनङ्गकुसुमायै स्वाहा ।
ह्रीं अनङ्गकुसुमतरायै स्वाहा ह्रीं अनङ्गमदनायै स्वाहा
ह्रीं अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा ह्रीं भुवनपालिन्यै स्वाहा ।
ह्रीं गगनवेगायै स्वाहा ह्रीं शशिरेखायै स्वाहा
ह्रीं गगनरेखायै स्वाहा ह्रीं अनङ्गकुसुमादिसहितायै श्रीभुवनेश्वर्यै स्वाहा ।
ह्रीं करालयै स्वाहा ह्रीं उमायै स्वाहा ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा
ह्रीं विकरालयै स्वाहा ह्रीं श्रीयै स्वाहा ह्रीं दुर्गायै स्वाहा
ह्रीं उषायै स्वाहा ह्रीं लक्ष्म्यै स्वाहा ह्रीं श्रुत्यै स्वाहा
ह्रीं स्मृत्यै स्वाहा ह्रीं धृत्यै स्वाहा ह्रीं श्रद्धायै स्वाहा
ह्रीं मेधायै स्वाहा ह्रीं मत्यै स्वाहा ह्रीं कान्त्यै स्वाहा

ह्रीं आर्यायै स्वाहा ह्रीं कराल्यादिषोडशक्तिसहित श्रीभुवनेश्वर्यै स्वाहा ह्रीं आं ब्राह्मयै स्वाहा ह्रीं ई माहेश्वर्यै स्वाहा ह्रीं ऊं कौमार्यै स्वाहा ह्रीं ॠं वैष्णव्यै स्वाहा ह्रीं ॡ वाराह्यै स्वाहा

ह्रीं ऐं इन्द्राण्यै स्वाहा ह्रीं औं चामुण्डायै स्वाहा ह्रीं अः महालक्ष्म्यै स्वाहा ह्रीं ब्राह्म्यादि-अष्टशक्तिसहित श्रीभुवनेश्वर्यै स्वाहा ।

ह्रीं अनङ्गरूपायै स्वाहा ह्रीं अनङ्गमदनायै स्वाहा ह्रीं अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा ह्रीं भुवनवेगायै स्वाहा ह्रीं भुवनपालिकायै स्वाहा ह्रीं सर्वशिशिरायै स्वाहा ।

ह्रीं अनङ्गवेदनायै स्वाहा ह्रीं अनङ्गमेखलायै स्वाहा ।

ह्रीं चतुरस्त्र चक्राय स्वाहा, ह्रीं, लां इन्द्राय स्वाहा ह्रीं रां अग्नये स्वाहा ह्रीं टां यमाय स्वाहा ह्रीं क्षां निर्ऋतये स्वाहा ह्रीं वां वरुणाय स्वाहा ह्रीं यां वायवे स्वाहा ह्रीं सां सोमाय स्वाहा ह्रीं हां ईशानाय स्वाहा ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा, ह्रीं विष्णवे स्वाहा ह्रीं वास्तुपतये ब्रह्मणे स्वाहा।

ह्रीं वज्राय स्वाहा ।	ह्रीं ऐरावताय स्वाहा ।
ह्रीं शक्तये स्वाहा ।	ह्रीं अजाय स्वाहा ।
ह्रीं दण्डाय स्वाहा ।	ह्रीं महिषाय स्वाहा ।
ह्रीं खड्गाय स्वाहा ।	ह्रीं नराय स्वाहा ।
ह्रीं पाशाय स्वाहा ।	ह्रीं मकराय स्वाहा ।
ह्रीं ध्वजाय स्वाहा ।	ह्रीं रुरवे स्वाहा ।
ह्रीं शंखाय स्वाहा ।	ह्रीं अश्वाय स्वाहा ।
ह्रीं त्रिशूलाय स्वाहा ।	ह्रीं वृषभाय स्वाहा ।
ह्रीं पद्माय स्वाहा ।	ह्रीं हंसाय स्वाहा ।
ह्रीं चक्राय स्वाहा ।	ह्रीं गरुडाय स्वाहा ।

ह्रीं इन्द्रादि दशदिक्पालसहितायै श्रीभुवनेश्वर्यै स्वाहा ततः मूलमन्त्रेण यथा संख्याकं होमं कृत्वा, ततो होमावशिष्टेन आज्येन स्रुचं पूरयित्वा पुष्पं फलं अग्रे निधाय स्रुवेणाच्छाद्य मूलेन वौषट् इति उत्थितो जुहुयात् ॥ ततो बलिदानम् ।

ततो महाव्याहृति होमः । यथा–

ह्रीं भुरग्नये च पृथिव्यै च महते स्वाहा । अग्नये पृथिव्यै महत इदम् । ह्रीं भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा । वायवे अन्तरिक्षाय महत इदम् ।

ह्रीं स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा आदित्याय दिवे महत इदम्।ह्रीं भुर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदम् । इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । परब्रह्मण इदम् । इति ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात् ॥

अस्मिन् श्रीभुवनेश्वरिहोमकर्मणि मध्ये सम्भावितसमस्तमन्त्रलोप-तन्त्रलोप-द्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोप न्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यास प्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चितं होष्यामि । इति सङ्कल्प्य,

ॐ भूर्भुव स्वः स्वाहा । प्रजापतय इदम् । श्रीविष्णवे स्वाहा । विष्णवे परमात्मन इदम् । नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा।रुद्राय पशुपतय इदम् । आप उपस्पृश्य । सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि । सप्त होत्रा सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा । अग्नये सप्तवत इदम् ।

आज्यपात्रादीनुत्तरतो निधाय प्राणायामं कृत्वा, अग्निं परिषिञ्चति । अदितेऽन्वमँस्थाः अनुमतेऽन्वमँस्थाः । सरस्वतेऽन्वमँस्थाः । देव सवित प्रासावीः ॥

ततः प्रणीतात्रं स्वस्य पुरत आदाय पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः । सदसि सन्मे भूयाः । सर्वमसि सर्वं मे भूयाः ॥ इति, अन्य जलं नीनीय तज्जलं प्रागादि प्रदक्षिणं, प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम् । दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम् । प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो

मार्जयन्ताम् । उदीच्यां दिश्याप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम् । ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः सम्वत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयताम्—इति प्रतिदिश-मुत्सृज्य पुरस्तात् निस्राव्य, तेन—ब्राह्मणेष्वमृतं हितं येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु मा । इत्यात्मानं प्रोक्ष्य, प्रागादिपरिस्तरणमुत्तेरे विसृजेत् ।

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥

इत्युपस्थाप्य चिदग्नि उपावरोहः जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन् । आयुः प्रजाँ रयिमस्मासु धेहि अजस्रो दीदिहि नो दुरोणे ॥ श्रीभुवनेश्वर्याग्निमात्यन्युद्वासयामि नमः । इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलिं दद्यात् ।

तद्भूतितिलकम्—

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेसु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् । इति त्र्यायुषेण मन्त्रेण धारयेत् ।

श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ विरचितायां श्रीभुवनेश्वरी
वरिवस्यायां होमप्रकरणं सम्पूर्णम् ।



मातस्शृणुष्व भुवनेश्वरि चित्स्वरूपे
संवित् सुधोदधिसमुल्लसितोर्मिरूपे ।
इच्छात्मिके ! कलितज्ञानक्रियाकलापे !
विन्दे कदा नु भवतीं शिवशक्तिरूपाम् ॥

"श्री"

परिशिष्ट

मन्त्र महिमा

तन्त्र शास्त्रों में भगवती भुवनेश्वरी के एकाक्षर बीजमन्त्र का अपरिमित माहात्म्य वर्णित है। 'भुवनेश्वरी परिजात' में तो लिखा है कि 'मायाबीज समो मन्त्रों न भूतो न भविष्यति' तन्त्रशास्त्र के प्रणेता भगवान् परम शिवमट्टारक ने स्वस्वरूपभूता शक्ति भगवती पार्वती से कहा है कि मायाबीज के समान मन्त्र न हुआ है और न होगा। यही शाक्त प्रणव है, ह्रील्लेखा, लज्जाबीज, महामाया, शक्ति, विश्वयोनि, कुण्डली आदि नामों से तत् तत् स्थानों में प्रयुक्त हुआ है। प्रारम्भिक साधना से तत्त्व ज्ञान पर्यन्त इस मन्त्र की साधना सहायक रहती है। तन्त्रशास्त्र की त्रिपुटी साधक, सिद्धि सिद्ध इन तीनों अवस्थाओं में इस मन्त्र का प्राधान्य रहता है। शिव प्रोक्त स्वच्छन्दादि आप्ततन्त्रों में समस्त वाङ्मय का मूलस्रोत अनच् हकार को ही माना है। 'हकारस्तु स्मृतः प्राणो स्वप्रवृत्तो हलाकृतिः' हंसोच्चार भी इसी को कहा है, इसका कोई उच्चारण करने वाला नहीं है यह समस्त प्राणियों के अन्तराल में स्वयं उच्चरित होता है।

नास्योच्चारयिता कश्चित् प्रतिहन्ता न विद्यते।
स्वयमुच्चरते हंसः प्राणिनामुरसि स्थितः॥

इसका विस्तृत वर्णन मैंने त्रिपुरार्णव तन्त्र की भूमिका में किया है वह सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ है। आद्यशङ्कराचार्य विरचित 'प्रपञ्चासार' तन्त्र के तृतीय पटल वर्ण-विभूति प्रकरण में इसी सिद्धान्त का विशद वर्णन प्राप्त होता है। सृष्टितत्त्व के वर्णन में ह्रीङ्कार को ही समस्त शक्तियों का महास्रोत माना है। इसमें हल् हकार वाच्य वाचकात्मक शब्द ब्रह्म है (ई)

कामकला है, रेफ अग्नि तत्त्व और अनुस्वार सोमतत्त्व है, शब्द ब्रह्ममें कामकला का संयोग होने से अग्नि, सोम तत्त्व का प्रादुर्भाव होता है। 'अग्नि सोमात्मकं जगत्' के सिद्धान्तानुसार समस्त संसार की रचना होती है। इस प्रकार ह्रील्लेखा मन्त्र ही नाना प्रकार से विकार को प्राप्त होकर विविध शक्तियों के द्वारा विचित्र विश्व को चित्रित करता है। एवं समस्त प्राणियों के अन्तराल में चेतना कुण्डली रूप में विराजमान है। कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना मार्ग से षट् चक्रों का भेदन करती हुई ब्रह्मरन्ध्र से अमृत स्यन्दन करती है, एवं नाद रूप से परा पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी वाणियों के रूप में प्रकट होती है यही उपचित होकर ब्रह्मादि समस्त देवों का एवं चराचारात्मक जगत् का निर्माण करती है।

नाना विकारतां प्राप्तैः स्वैः स्वैर्भावैर्विकल्पितैः।
तामेनां कुण्डलीत्येके सन्तो हृदयगां विदुः॥
सा रौति सततं देवी भृङ्गीसङ्गीतकध्वनिः।
आकृति स्वेन भावेन पिण्डितां बहुधा विदुः॥
कुण्डली सर्वथा ज्ञेया सुषुम्नानुगतैन सा। (प्र. त.)

इसी प्रकार प्रपञ्चासार के दशम पटल में सकल प्रपञ्च की मूलभूत प्रकृति भुवनेश्वरी का जप, अर्चन, होम आदि विधानों का वर्णन करते हुए मायाबीज को समस्त पापपुञ्ज को नष्ट करके धर्म अर्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ प्रदाता सकल मनोरथों को पूर्ण करने वाला सिद्ध किया है।

घनवर्त्मकृष्णगतिशान्तिविन्दुभिः कथितः परप्रकृतिवाचको मनुः।
दुरितापहोऽर्थसुखधर्ममोक्षदो भजतामशेषजनरञ्जन क्षमः॥

इस प्रकार शास्त्रीय सिद्धान्तों का अवलोकन करने से ज्ञात होता कि मन्त्र ही इष्ट देवता का साक्षात् स्वरूप है मन्त्रार्थ और मन्त्र शक्ति का स्वरूप 'साम्ब पञ्चाशिका' की भूमिका में मैंने लिखा है– वह उसमें द्रष्टव्य है। सम्पूर्णानान्द सं. वि. वि. से प्रकाशित है।

जायातन्त्र में लिखा है कि जगत् के रचयिता भगवान् अपना मन्त्रमय शरीर बनाकर करुणा से सभी मनुष्यों का उद्धार करते हैं, शास्त्रीय विधि से अनुष्ठान करने पर ही।

यस्माद्देवो जगन्नाथ कृत्वा मन्त्रमयी तनुम्।
मग्नानुद्धरते लोकान् कारुण्याच्छास्त्रपाणिना ॥ जया ॥

इसलिये गुरुमुख से समस्त विधि विधानोंको अच्छी प्रकार समझकर साधना करने पर सम्यक् फल की प्राप्ति होती है। उत्पलाचार्य ने लिखा है—भगवत् प्राप्ति के इच्छुक व्यक्ति को गुरु का अन्वेषण करना चाहिये क्योंकि भगवान् शास्त्रों से ही जाना जा सकता है, और शास्त्रों का ज्ञान गुरु को होता है, अतः शास्त्र और इश्वर से गुरु की गरिमा अधिक होती है।

भगवत्प्राप्तिकामो यस्तेनान्वेष्यो गुरुर्यतः।
भगवान् ज्ञायते शास्त्राच्छास्त्रं च ज्ञायते गुरोः ॥
तद्वोधात् ज्ञानविलयाज्ज्ञानाप्तौ प्राप्त एव स।
तस्माच्छास्त्रादीश्वराच्च गरीयान् गुरुरुच्यते ॥

उत्कट उत्कण्ठा से जगदीश्वर से प्रार्थना करने पर मार्गदर्शक गुरु की प्राप्ति भी हो जाती है। भगवान् अशरण शरण अकारण करुणा वरुणालय है। इन सब दृष्टियों से यह शास्त्र सम्मत पूजा पद्धति लिखने का प्रयत्न किया है। अतः यथा विधि मन्त्र का पुरश्चरण जप होमादि करने से मन्त्र शक्ति के प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। विविध प्रकार के कामनाओं की सिद्धियां भी प्राप्त की जा सकती है। एतदर्थ इस परिशिष्ट में श्रीविद्यार्णव तन्त्र के भुवनेश्वरी मन्त्र-प्रकरण का सारांश उद्धृत किया गया है। इसमें श्री भुवनेश्वरी के विविध मन्त्रों की साधना से विविध सिद्धियों की प्राप्ति के विधान वर्णित है, इसी के अन्तर्गत हमारा गुरु परम्परा का मन्त्र भी आ गया है। इस पद्धति में दी गयी विधियों की भी इससे प्रामाणिकता होगी। इसमें पूजा विधानों के मौलिक सिद्धान्तों का सूत्र रूप में शास्त्रीय प्रमाणों से दिग्दर्शन उपलब्ध है। विद्वान् साधकों के लिए भी यह आवश्यक प्रतीत हुआ।

परिशिष्टम्
श्रीविद्यार्णवोक्त भुवनेश्वरीप्रकरणस्य सारांशः

अथ भुवनेश्वरीमन्त्राः । तत्र दक्षिणामूर्तिसंहितायाम्–(१८ प०)

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भुवनानन्दमन्दिरम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण पलायन्ते महापदः ॥ १ ॥
शिवं वह्निसमारूढं वामाक्षिपरिभूषितम् ।
बिन्दुनादकलाक्रान्तं विद्येयं भुवनेश्वरी ॥ २ ॥

शिवं ह, वह्निः र, वामाक्षि ईकारः, बिन्दुरनुस्वारः, नादकला अर्धचन्द्रः । अस्य बीजस्य माहात्म्यं भुवनेश्वरीपारिजाते–

मत्समः पुरुषो नास्ति त्वत्समा नास्ति चाङ्गना ।
मायाबीजसमो मन्त्रो न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ इति ।

शारदायाम्–(९ प. १ श्लो,)

अथ वक्ष्ये जगद्धात्रीमधुना भुवनेश्वरीम् ।
ब्रह्मादयोऽपि यां ज्ञात्वा लेभिरे श्रियमूर्जिताम् ॥ १ ॥
नकुलीशोऽग्निमारूढो वामनेत्रार्धचन्द्रवान् ।
बीजं तस्याः समाख्यातं सेवितं सिद्धिकाङ्क्षिभिः ॥ २ ॥

नकुलीशो हकारः, अग्नी रेफः, वामनेत्रः ईकारः, अर्धचन्द्रोऽनुस्वारः॥

भुवनेश्वरीपदव्युत्पत्तिमाह दक्षिणामूर्तिसंहितायाम्–(१९ प. ४४ श्लो.)

व्योमबीजे महेशानि कैलासादि प्रतिष्ठितम् ।
बह्निबीजात् सुवर्णादि निष्पन्नं बहुधा प्रिये ॥ १ ॥
तेनायं वर्तते लोको भूमिमण्डलसंस्थितः ।
तुर्यस्वरेण पाताले शेषरूपेण धार्यते ॥ २ ॥
महाभूमण्डलं तस्मात् पातालस्यापि नायिका ।
अत एव महेशानि भुवनाधीश्वरी प्रिये ॥ ३ ॥

हकारे व्योम तुर्येण स्वरेणानिलसंम्भवः ।
वि(ह)कारे सति रेफेण साक्षाद्वह्निस्वरूपिणी ॥ ४ ॥
बह्निबीजं वसुधेयं तस्माद्रेफे वसुन्धरा ।
अत एव महेशानि सवायोः समता भवेत् ॥ ५ ॥
बिन्दुचक्रामृताद्देवि प्लावयन्ती जगत्त्रयम् ।
द्रवरूपी भवेत् तस्मात् प्लवन्ती चार्धमात्रया ॥ ६ ॥
अत एव महेशानि भुवनेशीति कथ्यते । इति

तथा–(१८/३)

ऋषिः शक्तिर्वशिष्ठस्य सुतश्छन्दोऽस्य कथ्यते ।
गायत्रं देवता बोधवाचां संवित्कला परा ॥ १ ॥
शिवतुर्ये बीजशक्ती कीलकं रेफ उच्यते ।
ददाति भुवनेशानी पुरुषार्थचतुष्टयम् ॥ २ ॥ इति ।

सारसंग्रहे–

युग्माब्धिषट्सूर्यमनुविकृतिस्वरवह्निभिः ।
बिन्दुनादयुजा व्योम्ना षडङ्गानि सजातिभिः ॥ १ ॥
संहारमातृकां सृष्टिमातृकां विन्यसेत् ततः ।
देव्येकतापादनाय मनुन्यासं समाचरेत् ॥ २ ॥
त्रयोदशैकादशेषुवह्निसोमस्वरादिकाः ।
ह्रल्लेखाद्या भूतनिभा न्यस्तव्या मन्त्रिणा तनौ ॥ ३ ॥

त्रयोदश ओ, एकादश ए, इषु उ, वह्निः इ, सोमः अ, इति पञ्चस्वराद्या ह्रल्लेखाद्याः शक्तयो न्यस्तव्या इत्युक्तम् । केचित्तु–

सद्योऽष्ठश्रुतिनेत्राद्यैर्विद्यां संभेद्य मन्त्रवित् ।
ह्रल्लेखाद्याः प्रविन्यसेद्यथास्थानं विचक्षणः ॥ १ ॥

इति दशपटलीवचनात् । ह्रोंह्रैंह्रींह्रांह्रः इति पञ्चवीजादिकास्ताः शक्तय इत्याहुः । तत्र यथोपदेशं कार्यामिति

मूर्ध्नि वक्त्रे हृदि गुह्ये पादयोश्च यथाक्रमम् ।
ऊर्ध्वेन्द्रसौम्ययाम्याशाप्रत्यगुवक्त्रेषु च न्यसेत् ॥ ४ ॥

ह्ल्लेखा गगना रक्ता चतुर्थी च करालिका ।
पञ्चमी च महोच्छुष्मा पुनरङ्गानि विन्यसेत् ॥ ५ ॥
कण्ठे न्यसेच्च गायत्रीं सावित्रीं वामगे कुचे ।
सरस्वतीं दक्षकुचे ब्रह्माणं वामगेंऽसके ॥ ६ ॥
हृदि विष्णुं महेशं च दक्षिणेंऽसे प्रविन्यसेत् ।
वामे धनपतिं युक्तं श्रिया श्रोत्राग्रके न्यसेत् ॥ ७ ॥
स्मरं रत्या युतं वक्त्रे गणं पुष्ट्या युतं न्यसेत् ।
दक्षश्रोत्राग्रके मंत्री निधी शक्तियुतौ न्यसेत् ॥ ८॥
ब्रह्माणं विन्यसेद्भाले गायत्र्या सहितं सुधीः ।
विष्णुं कपोले सावित्र्या युतं दक्षे प्रविन्यसेत् ॥ ९ ॥
महेशं वामगण्डे च वागीश्वर्या युतं न्यसेत् ।
अधः कपोलान्तरयोर्मूलं वक्त्रे न्यसेत् ततः ॥ १० ॥
गलमूले कुचयुगे वामांसे हृदि दक्षिणे ।
अंसे पार्श्वयुगे चैतान् न्यसेन्मन्त्री समाहितः ॥ ११ ॥
अष्ट मातॄर्न्यसेद्भाले ह्यंसे पार्श्वे तथोदरे ।
पार्श्वे चांसे च मन्त्रज्ञस्तथा परगले हृदि ॥ १२ ॥
व्यापय्य मूलमनुना तनुं देवीं ततः स्मरेत् ।
उद्यदादित्यरुचिरां शीतांशुकृतशेखराम् ॥ १३ ॥
पद्मासनां त्रिनेत्रां च पाशाङ्कुसवराभयैः ।
अलङ्कृतचतुर्बाहुं मन्दस्मितलसन्मुखीम् ॥ १४ ॥
कुचभारविनम्राङ्गलतां देवीं हृदि स्मरेत् ।

वामोर्ध्वकरादिवामाधःकरपर्यन्तमायुधध्यानम् । दशपटल्यां तु—'दक्षेऽङ्कुशाभये प्रोक्ते वामे पाशवरदम्' इत्युक्तम् । अत्र यथोपदेशं यथेष्टं वा ध्यानम् ॥ तथा--

आदौ कृत्वा तु षट्कोणं तद्बाह्येऽष्टदलाम्बुजम् ।
तद्बाह्ये षोडशदलं चतुरस्रत्रयं बहिः ॥ १५ ॥

चतुर्द्वारसमोपेतं मण्डलं प्रोक्तमुत्तमम् ।
तत्र पीठं यजेत् पूर्वं नवशक्तिसमन्वितम् ॥ १६ ॥
जया च विजया चैवाजिताख्या चापराजिता ।
नित्या विलासिनी दोग्ध्री ह्यघोरा मङ्गला ततः ॥ १७ ॥
एतास्तु शक्तयः पूज्याः केसरेषु च मध्यके ।
दद्यान्मूलेनासनं तु मूर्तिं तेनैव कल्पयेत् ॥ १८ ॥
देवीमावाहयेत् तस्यामङ्गावरणसंयुताम् ।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरा भूतनिभाश्च ताः ॥ १९ ॥
हृल्लेखाद्याः समभ्यर्च्य विविधाभरणोज्ज्वलाः ।
मध्येऽग्रयाम्योदक्प्रत्यक्स्थानेषु क्रमतस्ततः ॥ २० ॥
अग्नीशासुरवायव्यकोणेष्वग्रे हृदादिकान् ।
यजेदस्त्रं तथाशासु कोणाग्रे मिथुनानि च ॥ २१ ॥
गायत्रीमरुणाभासामरुणाकल्पभूषिताम् ।
चतुर्मुखीं करैर्दण्डं कुण्डिकामक्षमालिकाम् ॥ २२ ॥
अभीतिं बिभ्रतीं तद्वद् ब्रह्माणं पुरतो यजेत् ।
सावित्रीं हस्तकमलैररिशङ्खौ गदाम्बुजे ॥ २३ ॥
बिभ्राणां पीतवसनां केयूराङ्गदभूषणाम् ।
किरीटहाररशनानूपुरैरुपशोभिताम् ॥ २४ ॥
तादृग्रूपं महाविष्णुं रक्षःकोणाग्रके यजेत् ।
शुभ्रां त्रिनेत्रामत्यन्तशुभ्रवस्त्रविराजिताम् ॥ २५ ॥
टङ्काक्षसूत्राभयदवरयुक्तचतुर्भुजाम् ।
सरस्वतीं यजेद्वायौ कोणे चेशं च तादृशम् ॥ २६ ॥
लक्ष्मीं प्रियाङ्कसंस्थां च दक्षेणालिङ्ग्य बाहुना ।
पतिं वामेन कमलं धनदं च पृथूदरम् ॥ २७ ॥
पीतं रत्नघटं रत्नकरण्डं बिभ्रतीं यजेत् ।
आग्नेये रमणाङ्कस्थां रतिं सव्येन पाणिना ॥ २८ ॥

आलिङ्ग्य रमणं पद्ममन्येन दधतीं स्मरेत् ।
बन्धूकाभं बाणगुणसृणिचापधरं जले ॥ २९ ॥
ऐशाने पूजयेत् सम्यक् विघ्नराजं प्रियान्वितम् ।
सृणिपाशधरं कान्तावराङ्गस्पृक्कराङ्गुलिम् ॥ ३० ॥
माध्वीपूर्णकपालाढ्यं विघ्नराजं दिगम्बरम् ।
पुष्करे विलसद्रत्नस्फुरच्चषकधारिणम् ॥ ३१ ॥
सिन्दूरसदृशाकारामुद्दाममदविभ्रमाम् ।
धृतरक्तोत्पलामन्यपाणिना तद्ध्वजस्पृशम् ॥ ३२ ॥
आश्लिष्टकान्तामरुणां पुष्टिमर्चेद् दिगम्बराम् ।
कर्णिकायां निधी पूज्यौ षट्कोणस्याथ पार्श्वयोः ॥ ३३ ॥
आद्या त्वनङ्गकुसुमा त्वनङ्गकुसुमातुरा ।
पश्चादनङ्गमदना त्वनङ्गमदनातुरा ॥ ३४ ॥
भुवनाद्या पालिनी स्यात् तथा च गगनादिका ।
वेगा स्याच्छशिरेखान्या रेखा गगनपूर्विका ॥ ३५ ॥
इत्यष्ट शक्तयः पूज्याः पत्रेषु परितः स्थिताः ।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरा रक्ताः सुभूषिताः ॥ ३६ ॥
ततः षोडशपत्रेषु कराली विकराल्युमा ।
सरस्वती श्रीर्दुर्गोषा लक्ष्मीः श्रुतिः स्मृतिर्धृतिः ॥ ३७ ॥
श्रद्धा मेधा मतिः कान्तिरार्या षोडश शक्तयः ।
खड्गखेटकधारिणयः श्यामाः पूज्याः प्रदक्षिणम् ॥ ३८ ॥
ब्राह्म्याद्यास्तद्बहिः पूज्याः पत्रसन्धिषु दिक्क्रमात् ।
पद्माद्बहिः समभ्यर्च्याः शक्तयः परिचारिकाः ॥ ३९ ॥
प्रथमानङ्गरूपा स्यादनङ्गमदना ततः ।
मदनातुरा भुवनवेगा भुवनपालिका ॥ ४० ॥
स्यात् सर्वशिशिरानङ्गमदनानङ्गमेखला ।
चषकं तालवृन्तं च ताम्बूलं छत्रमुज्जवलम् ॥ ४१ ॥
चामरे चांशुकं पुष्पं बिभ्राणाः करपङ्कजैः ।

एता द्विभुजा वामेन रक्तोत्पलं दक्षिणेनैकैकशश्चषकादिकं च दधाना ध्येयाः ॥ प्रयोगसारे–

रक्ता रक्तोत्पालाकारा रक्ताम्बरविलेपनाः ।
रक्तोत्पलकरा ध्येयाः सुन्दर्याः परिचारिकाः ॥ इति । तथा–
सर्वाभरणसंदीप्तांल्लोकपालान् बहिर्यजेत् ।
वज्रादीन्यपि तद्बाह्ये देवीमित्थं प्रपूजयेत् ॥

तत्रैव विस्तारपूजाशक्तौ संक्षेपमाह महासम्मोहनतन्त्रे–

चतुर्भिर्वा त्रिभिर्वापि द्वयेनैकेन वा पुनः ।
सर्वैर्वावरणैरेव भोगार्थी विस्तरं त्यजेत् ॥ १ ॥

चतुर्भिः, हृल्लेखादिषडङ्गलोकपालतदायुधैः । त्रिभिः, अङ्गलोकेशतदस्त्रैः । द्वयेन अङ्गलोकपालाभ्यां । एकेन अङ्गाह्वयेनैव । इति संक्षेपप्रकाराश्चत्वारः ॥ तथा–

द्वात्रिंशल्लक्षमानेन जपेन्मन्त्रं समाहितः ।
तद्दशांशं हुनेदष्टद्रव्यैस्त्रिस्वादुसंयुतैः ॥ १ ॥
तर्पणादि ततः कुर्यान्मन्त्री शास्त्रोक्तवर्त्मना ।
अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधसमिधस्तथा ॥ २ ॥
तिलसर्षपदुग्धाज्यं द्रव्याण्यष्टौ मतानि च ।
प्रतिद्रव्येण पृथगयुतचतुष्टयं होतव्यम् ॥
अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमुच्यते ।
एकलिङ्गे शिवागारे दक्षिणामूर्तिमाश्रितः ॥ १ ॥
बद्धपद्मासनो भस्मस्नायी च कुलविष्टरः ।
कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णा चतुर्दशी ॥ २ ॥
नित्यं विष्णुं शिवं शक्तिं जपेन्मन्त्रं सहस्रकम् ।
दधिक्षौद्रघृताभ्यक्ता व्याघातसमिधो हुनेत् ॥ ३ ॥
ततः साग्रं सहस्त्रं च ध्यायेत् सर्वेश्वरीमुमाम् ।
ततः सिद्धो भवेन्मन्त्रो नात्रकार्या विचारणा ॥ ४ ॥

व्याघात आरग्वधः ।

एवं सिद्धमनुर्मन्त्री सर्वान् कामान् प्रसाधयेत् ।
नित्यं सौभाग्यदं पञ्चविंशज्जप्त्वाभिषेचनम् ॥ ५ ॥
मेधावी च भवेद्वाग्मी तावज्जप्ताम्बुपानतः ।
जिह्वाग्रे न्यस्य संजप्तं वाक्सिद्धिकविताकरम् ॥ ६ ॥
तज्जप्तमञ्जनं वश्यं कर्पूरागरुमिश्रितम् ।
सासृग्भस्मारुणालेपैर्वश्याय तिलकक्रिया ॥ ७ ॥
जानुमात्रे जले स्थित्वा निश्चलोन्मीलितेक्षणः ।
जपेत् सहस्रं तद्गात्राविष्टामाकर्षयेत् स्त्रियम् ॥ ८ ॥
लाजैः कन्यामवाप्नोति तिलैरारोग्यमश्नुते ।
पुष्टिमान् दधिहोमेन तण्डुलैश्च तथा भवेत् ॥ ९ ॥
ब्रह्मीरसयुताँल्लाजान् वचया च समन्वितान् ।
त्रिसहस्रेणाभिमन्त्र्य मासमेकं च भक्षयेत् ॥ १० ॥
वृहस्पतिसमो मन्त्री सर्वविद्याधिपो भवेत् ।
अश्वत्थसमिधः स्वाद्वभ्यक्ता हुत्वा द्विजानसौ ॥ ११ ॥
वशयेत् पद्महोमेन राज्ञस्तन्मन्त्रिणस्तथा ।
कुमुदै राजपत्नीश्च ब्रह्मवृक्षप्रसूनकैः ॥ १२ ॥
तण्डुलानां पिष्टकृतां प्रतिमां स्वादुसंप्लुताम् ।
कृतप्राणप्रतिष्ठां तां संजप्तां मनुनामुना ॥ १३ ॥
भक्षयेत् तामर्कवारे ततः कुर्याद्वशं नरम् ।
राजानं प्रमदां वापि यं च वाञ्छत्यनुत्तमम् ॥ १४ ॥
फलके भूतिना शक्तिं ससाध्यां विलिखेत् सुधीः ।
गर्भिण्यै दर्शयेदाशु सा सुखप्रसवा भवेत् ॥ १५ ॥

सारसंग्रहे

ज्ञानामृता दण्डियुक्ता याष्टमो वह्निपुष्टियुक् ।
सबिन्दुर्मृत्युरूष्मायुक् शान्तिबिन्दुविभूषिता ॥
त्र्यक्षरात्मा मनुः प्रोक्तश्चतुर्वर्गफलप्रदः ।

ज्ञानामृता ऐ, दण्डी अनुस्वारः, तद्युक्तस्तेन ऐं । याष्टमो ह वह्निपुष्टियुक् रेफतुर्यस्वर (युक्तः तेन ह्रीं, मृत्युः श ऊष्मायुक् रेफयुतः शान्तिरीकारः) एभिः श्रीं इति । तथा–

पूर्वोदिताश्च मुन्याद्या मन्त्रिभिः संप्रकीर्तिताः ।

आद्याद्येन च मध्येन दीर्घभाजाङ्गकल्पनम् । तेन ऐं ह्रां हृदयाय नमः, ऐं ह्रीं शिरसे. इत्यादिषडङ्गमन्त्रा उक्ता । तथा–'पुरोक्तमन्त्रवत्-न्यासान्अत्रापि, परिकल्पयेत् ।' इति । ध्यानम्–

बन्धूकाभां त्रिनययुतां बद्धचन्द्रार्धमौलिं
दोर्भ्यां पुर्णं विविधमणिभी रत्नपात्रं वहन्तीम् ।
पद्मं सौम्यामुरुकुचयुगां स्मेरवक्त्रेन्दुबिम्बां
ध्यायेद् देवीं धृतमणिघटप्रोल्लसत्सव्यपादाम् ॥ १ ॥

वामे रत्नपात्रं, दक्षिणे पद्ममित्यायुधध्यानम् । ("पीठे पुरोहिते देवीं यजेत् पूर्वोक्नवर्त्मना" । अथ प्रयोगः–तत्र प्राग्वत् योगपीठन्यासान्ते एकाक्षरोक्तऋष्यादिन्यासान्विधाय ऐं ह्रां हृदयाय. ऐं ह्रीं इत्यादि-करषडङ्गन्यासान्विधाय एकाक्षरोक्तानन्यांश्च न्यासान् कृत्वा, अत्र प्रमाणोक्तध्यानादिमानसपूजान्ते एकाक्षरोक्तवत्सर्वं कुर्यात् ॥) तथा–

जपेद् द्वादशलक्षं च जुहुयात् तद्दशांशतः ।
त्रिस्वादुयुक्तहविषा तर्पणादि ततश्चरेत् ॥ ३ ॥
ततः प्रयोगान् कुर्वीत मन्त्री स्वेष्टफालप्तये ।
ब्रह्मवृक्षप्रसूनैश्च होमो लक्ष्मीप्रदो मतः ॥ ४ ॥
संवत्सराज्जप्तब्राह्मीसर्पिःपानात् कवित्वभाक् ।
गौरसर्षपयुग्लोणहोमात् तु वशयेत् स्त्रियम् ॥ ५ ॥
नरान् नरपतिं वान्यान् वशयेन्नात्र संशयः ।
आरग्वधोत्थैः कुसुमैः संसिक्तैश्चन्दनाम्भसा ॥ ६ ॥
त्रैलोक्यं च वशीकर्तुं होमोऽयं मन्त्रिणो मतः ।
त्रिस्वादुयुक्तै रक्ताब्जै राज्यलक्ष्मीं च बिन्दति ॥ ७ ॥

तिलैस्तण्डुलसंमिश्रैर्होमातत् पूर्वोदितं फलम् ।
पुरोदितान् प्रयोगाश्च कुर्यादत्रापि साधकः ॥ ८ ॥ इति ॥

तथा–

पूर्वाण्वादिकमाद्यन्ते मध्यस्थं मध्यमीरितम् ।
त्र्यक्षरोऽयं मनुः प्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥

पूर्वाण्वादिकं वाग्भवं तदाद्यन्तयोः, मध्यस्थे भुवनेश्वरीबीजं, मध्ये, तेन ऐंह्रींऐं इति ॥ तथा–

ऋष्याद्यास्त्वस्य मन्त्रस्य पूर्वोक्ता एव संमताः ।
आद्यन्तपुटितेनैव दीर्घयुग्मध्यमेन च ॥
जातिभाजा षडङ्गानि विदध्यान्मन्त्रवित्तमः ।
एकाक्षरोदितान् न्यासान् कुर्यान्मन्त्री समाहितः ॥
अम्भोदोद्द्योतिमूर्तिं त्रिनयनलसितां पीनवक्षोजनम्रां
हस्ताम्भोजैर्वहन्तीं वरदसरसिजे रत्नपात्राभये च ।
नित्यं रक्ताम्बुजस्थां शशिशकललसच्छेखरां हारभूषां
विश्वाधीशार्चिताङ्घ्रिं निजहृदि कलये भास्वरामम्बिकां ताम् ॥ ४ ॥

दक्षाधकरामारभ्य वामाधःकरपर्यन्तमायुधध्यानम् । तथा–

एवं पूर्वोदिते पीठे पूजयेद्भुवनेश्वरीम् ।
पूर्वोक्ताः पूर्ववत् पूज्या हृल्लेखाद्याश्च मन्त्रिणा ॥ ५ ॥
संपूजयेत्कोणषट्के पूर्ववन्मिथुनानि च ।
किञ्जल्केषु षडङ्गानि पूजयेच्च दलेषु ताः ॥ ६ ॥
ब्राह्म्याद्यानिजनाथाङ्कस्थिताः स्मेराननालसाः ।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधोन्मत्तौ कपाल्यथ ॥ ७ ॥
भीषणश्चैव संहारः प्रोक्तास्तत्पतयस्त्विमे ।
शूलं कपालं प्रेतं च क्षुद्रदुन्दुभिरेव च ॥ ८ ॥
बिभ्राणाः पाणिभिर्हस्तित्वग्वस्त्रा भीमविग्रहाः ।
स्मर्तव्या वक्रकेशाश्च पूजाकाले च मन्त्रिणा ॥ ९ ॥

दीर्घद्या मातरः प्रोक्ता ह्रस्वाद्या भैरवाः स्मृताः ।
पूज्याः षोडशपत्रेषु करालाद्याः पुरोदिताः ॥ १० ॥
तद्‌वाह्येऽनङ्गरूपाद्याः लोकेशास्त्राणि तद्वहिः ।).

अथ प्रयोगः—तत्र प्राग्वत् प्रातः कृत्यादियोगपीठन्यासान्ते मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा एकाक्षरोक्तान् ऋष्यादीन् विन्यस्य ऐंह्रांऐं हृत्, ऐंह्रीं ऐं शिर, ऐंह्रूंऐं शिखा, इत्यादिकरषडङ्गन्यासान् विधाय, एकाक्षरोक्तानन्याश्च न्यासान् कृत्वा, अत्रोक्तरूपां भगवतीं ध्यात्वा, मानस-पूजादिपुष्पोपचारान्ते एकाक्षरोक्तवत् हृल्लेखाद्या मिथुनानि संपूज्याष्टदलकेसरेषु षडङ्गानि संपूज्य, अष्टदलेषु आं ब्राह्मयै नमः अं असताङ्गभैरवाय नमः, ईं माहेश्वर्यै, इं रुरुभैरवाय., ऊं कौमार्यै उं चण्डभैरवाय, ॠं वैष्णव्यै. ऋं क्रोध राजभैरवाय,. ॡं वारह्यै. ऌं उन्मत्तभैरवाय., ऐं इन्द्राण्यै. एं कपालिभैरवाय औं चामुण्डायै, ओं भीषणभैरवाय. अः महालक्ष्म्यै. अं संहारभैवाय. इति भैरवाङ्कस्थाः ब्राह्मयाद्याः प्रादक्षिण्येन संपूज्य, तद्वहिः षोडशपत्रेषु प्रागुक्ताः करालाद्याः संपूज्य, तद्वहिः प्राग्वदनङ्गद्या स्तद्वहिरिन्द्रादीन् वज्रादींश्च संपूज्य शेषं प्राग्वत् समापयेत् इति ॥ तथा—

मन्त्रं जपेत् तत्वलक्षं ब्रह्मवृक्षप्रसूनकैः ।
त्रिमध्वक्तै राजवृक्षपुष्पैर्वा तद्दशांशतः ॥ ११ ॥
जुहुयात् तर्पणादीनि कुर्यान्मन्त्रस्य सिद्धये ।
एवमुक्तविधानेन यो भजेद्भुवनेश्वरीम् ॥ १२ ॥
मदविह्वलयोषाश्च राज्ञश्च वशयेत् सुधीः ।
एकाक्षरोदितान् सर्वान् प्रयोगानत्र चाचरेत् ॥ १३ ॥
तेन सिद्ध्यन्ति कर्माणि तन्त्रोक्तान्यखिलान्यपि ।

तथा सारसंग्रहे—

सदण्डि मुखवृत्तं स्याद् द्वितीयं भुवनेश्वरी ।
दक्षदोर्मूलकं साग्नि सद्यार्धेन्दुयुतं मनुः ॥ १ ॥

त्र्यर्णःप्रोक्तश्च पाशादिस्त्रैलोक्यवशदायकः।
एकाक्षरोक्तमृष्यादि माययाङ्गानि कल्पयेत् ॥ २ ॥

सदण्डि मुखवृत्तं आ, भुवनेश्वरी ह्रीं, दक्षदोर्मूलकं क, साग्नि सरेफः, सद्य ओ, अर्धेन्दुरनुस्वरः, तेन क्रों।

अङ्कुशं वरगुणाभयं करैर्बिभ्रतीं कमलसंस्थितां पराम्।
प्रोद्यदर्कगणकान्तिसत्तनुं संस्मरेच्च भुवनेश्वरीं हृदि ॥ ३ ॥

दक्षोर्ध्वाधःकरयोराद्ये, तथा वामकरयोरन्ये, इत्यायुधध्यानम्।

इति ध्यात्वा यजेत् पीठे पूर्वोक्ते भुवनेश्वरीम्।
वक्ष्यमाणेन मार्गेण हृल्लेखाद्या यथा पुरा ॥ ४ ॥
किञ्जल्केषु षडङ्गानि ब्राह्म्याद्या दलमध्यतः।
ततः शक्रादयो बाह्ये हेतिः पूज्या च तद्बहिः ॥ ५ ॥
एवं यः पूजयेद्भक्त्याया स भवेच्च कुबेरवत्।
अनुरक्ताः सर्वलोका भवेयुस्तस्य मन्त्रिणः ॥ ६ ॥

अथ प्रयोगः—ततः प्रातरुत्थानादियोगपीठन्यासान्ते एकाक्षरोक्त मृष्यादिकं विन्यस्य षड्दीर्घयुक्त मायाबीजेन षडङ्गानि विन्यस्य, ध्यानादिपुष्पोपचारान्तऽष्टदलकर्णिकायां प्राग्वद् हल्लेखाद्यास्तत्केसरेषु अङ्गानि, तद्दलेषु ब्राह्म्यादीः, तद्बहिश्चतुरस्त्रे लोकपालांस्तदायुधानि च संपूज्य शेषं प्राग्वत् समापयेत्। तथा—

मनुं जपेत् तत्वलक्षं जुहुयात् तत्सहस्रकम्।
त्रिस्वादुयुग्दुग्धवृक्षसमिद्भिः प्रोक्तसंख्यया ॥ ७ ॥
शुद्धैस्तिलैः पयोयुक्तैस्तर्पणादि ततश्चरेत्।

तत्वलक्षं चतुर्विंशतिलक्षम्। तत्सहस्रं चतुर्विंशतिसहस्रं। दुग्धवृक्षा अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटाः। षट्सहस्रं। प्रोक्तसंख्येत्यस्य तिलैरिति संबन्धः। तेन तावत्तिलैरपि जुहुयादित्यर्थः। 'तिलैश्चतावज्जुहुयात् पयोक्तैः' (११ प. ४३ श्लो.) इति प्रपञ्चसारवचनात्।

महसा सूर्यसदृशस्तेनाधिष्ठितमन्दिरम्।
रजन्यां निष्प्रदीपं च प्रदीपशतसंकुलम् ॥ ८ ॥

विलोक्यते सर्वजनैरेतन्मन्त्रप्रसादतः ।
लवणोन्मिश्रसिद्धार्थैः रजन्यां घृतसुप्लुतैः ॥ ९ ॥
जुहुयाच्चैव राजानं राजपत्नीं वशं नयेत् ।
अन्नहोमेन मन्त्रज्ञः समृद्धान्नगृहो भवेत् ॥ १० ॥
वकिसत्पद्महोमेन लक्ष्मीरेनं न संत्यजेत् ।
चतुरङ्गुलपुष्पैश्च होमः स्यात् कविताप्रदः ॥ ११ ॥
पूर्वोदितान् प्रयोगाश्च कुर्यादत्रापि मन्त्रवित् ।

इति श्रीविद्यार्णवतन्त्रोक्ताः प्रयोगाः ।

श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचिता श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या सम्पूर्णाः।

कृपां तदीयां समवाप्य पूर्वं सम्पूर्णतामद्यगतो निबन्धः ।
प्रसीदतान्तेन महेश्वरी सा यत्पादपद्मं हृदये मदीये ॥
सेवन्तु ताम्भो मनुजाः महेशीं सुरैस्सुरेशैरपि सेव्यमानां ।
ददाति सद्यः परिपूजकेभ्यो वाञ्छाधिकं किं बहुजल्पनेन ॥

॥ श्रीः ॥

कुण्डली-जागरणम्

जागो जगदाधार मैया । जागो जगदाधार ॥
साधो मन के तार मैया । साधो मन के तार ॥
जप तप जोग कछु नहीं जानूँ । सुषुम्ना सूक्ष्म विचार ॥
कुल कुण्डलिनी कुण्डली शिवके । सार्ध त्रिवलयाकार ॥
विद्युल्लेखा विसतन्तु सम । सुप्त भुजङ्गी प्रकार ॥
दिव्य त्रिकोणे कोटि तडित् शशि । आभा भानु हजार ॥
मूल मही बं शं षं सं मां । गणपति मूलाधार ॥
बं भं मं यं रं लं ब्रह्मा । स्वाधिष्ठान विचार ॥
रं मणिपूरे विष्णु माया । अग्नि स्वरूपाकार ॥
डं ढं णं तं थं दं धं नं । पं फं दल विस्तार ॥
कं खं गं घं ङं चं छं जं । झं ञं टं ठं स्फार ॥
द्वादस दल शिव शक्ति विराजे । अनहत नाद अपार ॥
चित्त गगन में चिति शक्ति का । स्पन्दन बारम्बार ॥
हंस सोऽहं मन्त्र स्वरूपी। विद्या मय झङ्कार ॥
अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं । षोडश पत्राकार ॥
लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः । व्योम विशुद्धि विचार ॥
हं क्षं हसौः सकलं तूँ साधे । विविध सिद्धि के द्वार ॥
मन्त्र यन्त्र सब तन्त्र तुम्ही हो । आगम निगम विचार ॥
अर्धमात्र रही अन्तर आत्मा । सकल तत्व संसार ॥
शुभ ज्योतिर्मय हंस युगल रत । पङ्कज पत्र हजार ॥
गुप्ताक्षर मञ्जुल मणिमण्डप । श्रीगुरु श्वेत श्रृंगार ॥
परमात्मा गुरुनाथ परम शिव । अभय वरद सन्धार ॥
रक्त शुक्ल प्रभासित सुषमा । महिमा अपरम्पार ॥

शिव वा ङ्के शक्ति विराजे । रक्त बिन्दु बौछार ॥
शिव शक्ति पद पङ्कज बरषे । स्नेह सुधा की धार ॥
अभिषेके षट् चक्र विकासे । शिवमय जय जय कार ॥
अन्तर् मुख आनन्द अश्रुभर । पुलकित करुण पुकार ॥
दत्तात्रेया नन्दनाथ का । नमो नमो शत बार ॥
जागो जगदाधार मैया । साधो मन के तार ॥



दत्तात्रेयानन्दनाथ द्वारा
(श्रीसीताराम कविराज)
सम्पादित विरचित ग्रन्थ

- श्री विद्यारत्नाकर
- श्री विद्यावरिवस्या
- भक्तिसुधा
- श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या
- साम्बपञ्चाशिका (हिन्दी व्याख्या)
- विरूपाक्ष पञ्चाशिका (हिन्दी व्याख्या)

॥ श्रीः ॥

श्रीविद्या साधना पीठ के मुख्य उद्देश्य

- श्रीविद्या से समन्धित दुर्लभ साहित्य का प्रकाशन।
- श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन।
- मन्त्र चैतन्य तथा कुण्डलिनी जागरण का क्रियात्मक बोध।
- श्रीयन्त्रार्चन पद्धति का प्रशिक्षण।
- तन्त्रशास्त्र विषयक अनुसन्धान।

(विशेष) दीक्षित अधिकारी साधकों का निःस्वार्थ रूप में प्रशिक्षणादि होता है।
पीठ द्वारा किसी प्रकार का शुल्कादि नहीं लिया जाता है।

पीठ द्वारा प्रकाशित साहित्य

श्रीविद्या रत्नाकर	मूल्य ८०-००
श्रीविद्या वरिवस्या (पूजा विधि का हिन्दी भाषा सार सहित)	मूल्य ४०-००
श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या	मूल्य ५०-००

श्रीविद्या साधना पीठ
काशीमुमुक्षु भवन सभा
बी. १/८६, अस्सी-वाराणसी (यू.पी.)